।। कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

।। अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ।। ।। गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ।।

।। योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।। ।। चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
परिवार डाइनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ शिव

राज विद्या

सृष्टि में स्वस्ति सुख शान्तिः स्थिति वृद्धि सम्पति भूति दीर्घायु सिखलाती है

जिसको

प्रकाशक बाल ब्रह्मचारी योगीराज श्रीलालजी महाराज राजर्षि सोनजी महाराज ज्वालेश्वर महादेव स्वामी लालपुरी शिवपुरी ठी. फतेहसागर जोधपुरने रावराजाजी श्री गुलाबसिंहजी साहिब की अधिकतर सहायता से छपाकर प्रसिद्ध की है और जिसे इन

ही रावराजाजी साहिब की आज्ञा विना छापने वा छपवाने का अधिकार किसीको नहीं है

समत १९८७
सन् १९३०
प्रथमवार २०००

राजा महाराजावों के लिये अमूल्य
सरदार धनाढ्योंके लिये मू. २५)
सर्व साधारण और राजपूत विद्यार्थियोंके लिये ७)
सजिल्द ... ८)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

67645

श्री श्री १०८ श्री उम्मेदसिंहजी
साहिब बहादुर मरुधराधीश

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री ॥

प्राक कथन

यह स्पष्ट होचुका है कि किसी समय में यह आर्य्यवर्त भरतखण्ड समस्त विद्याओं में सर्वोपरी था और आज दिन भी युरोप देश के जो सभ्यता में प्रथम है, बड़े २ विद्वानों ने इस देश की विद्याओं से बोहतसा लाभ उठाया है और मान प्रशंसा करते हैं । उनहीं विद्याओं में की एक राज विद्या का जो राज्य करने की विद्या है, सात आठ हजार वर्षों से लोप होना श्री मद्भगवद्गीता के चौथे अध्याय मे साबित है और नवमें अध्याय में भी थोड़ा वर्णन है वही ये विद्या अत्यन्त परिश्रम से अब मर्प्रण मिली है । इस विद्या प्रचार के समय मैं क्षात्रियों का राज्य समस्त भूमण्डल में था । इसको प्रचार करने के लिये बोहत से बड़े २ उच्च श्रेणी के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरदारों ने सहायता सम्मति दी है परन्तु इस सर्वोपरि जगत हितकारी कार्य में सब से अधिक सहायता तो रावराजाजी श्री गुलाबसिंहजी साहिब नें दी है, जो एक उदारचित्त वीर क्षत्री बड़े रावराजाजी श्री तेजसिंहजी साहिब के पाटवी पुत्र जिनकी योग्यता एक अधिक उच्च क्षत्रियों की योग्यता से समानता रखने वाली है। आप सरल स्वभाव सर्व दुर्व्यसनों से निवृत सब गुणसम्पन्न सच्चे न्याय धर्म को समझने वाले उच्च भाव के सच्चे राज भक्त स्वामी के शुभचिन्तक निरन्तर इस सत्य वचन को अपने ध्यान में प्रीति प्रशंसा के साथ रखते हैं कि–

"विधना अपने हाथसे तोले सर्व करम्म ॥
सो सुकृत इक पालड़े एको साम धरम्म ॥"

इस प्रकार सच्ची भक्ति से साम धर्म को पालने वाले बड़े महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री तखतसिंहजी साहिब बहादुर की अधिक योग्य सन्तान में से हैं इस अद्वितीय परम उपयोगी अत्यन्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाभ दायक जगतहितकारी राजा प्रजावों में सुख शान्ति दृढ रखनेवाली विद्या का प्रचार और अधिक द्रव्य व्यय का भार अपने ऊपर लिया है ये स्वयं साम धर्म पालना साबित कर रहा है।

इस परम पवित्र विद्या को अपने स्वजाति क्षात्र हितकारी समझ और उपरोक्त सर्व वार्ताओं को अपने लक्ष में रख श्री महाराजाजी साहिब बहादुर की पवित्र सेवा में प्रकाश करने के लिये एवम परिश्रम और व्यय कीया है।

इस विद्या का प्रभाव आज तक भी न्यूनांश तक क्षत्रियों के रक्त में रम रहा है यही कारण है कि जगदारम्भ से अभी तक क्षत्रियों का राज्य स्थिर है ये विद्या राजा प्रजाओं में स्वास्ति सुख शान्ति स्थिति और सुख पूर्वक आयुष वर्धक प्रबन्धों की कुशलता सिखलाती है। इस विद्या का पूर्ण ज्ञान अद्वितीय है इसीलिये चक्रवर्ती सम्राट सूर्य इक्ष्वाकु मनु आदिकों ने इसको सर्वो परी विद्या कही है, ये वही क्षात्र विद्या है जिसके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूर्ण पवित्र ज्ञान से क्षत्री समस्त भूमण्डल भर में राज्य किया करते थे, अब इस समय में लगभग पूर्ण अभाव सा हो जाने से पतन लक्ष में आ रहा है परन्तु परम दयालु जगदीश्वर को इस विद्या का ज्ञान प्रकाश फिर स्वीकार हुवा है वरन क्षत्री तो इस का नाम तक भी भूल गये हैं उसी की मेहर है जिसका परिवर्तन उत्थान पतन होता रहता है कोटान कोट धन्यवाद उन जगत पिता सर्व शक्तिमान को है जिसने मेहर की दृष्टी इस सर्वोत्तम ज्ञान प्रकाश द्वारा स्वीकार की है इस परम तत्व को इन रावराजाजी साहिब ने समझकर अपने स्वामी महाराजाजी साहिब बहादुर की सेवा में अपना आत्मिक भाव समर्पण किया है।

स्वामी लालपुरी ठी० फतेह सागर.

जोधपुर.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री ॥

समर्पण पत्र ।

मेजर हिज हाइनेस राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री उम्मेदसिंहजी साहिब बहादुर—

के० सी० वी० ओ,० के० सी० एस० आइ,० जी० सी० आइ० इ०.

मारवाड (जोधपुर)

१–हे भगवन आपके तप तेज प्रताप सदाचार और सुभ गुणों के कारण ही सारे देश में स्वस्ति सुख शान्ति स्थिति निर्विघ्नता के साथ छा रही है। कोइ भी किसी पर किसी प्रकार से अत्याचार नहीं कर सकता, सारी आपते शान्त हो रही हैं। उत्तमोत्तम कार्य्य उन्नति के सम्बन्ध में हो रहे हैं, प्रजा गणों

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आनन्द मंगलाचार की बधायें बट रही है। विद्वान गुणी जनों का यथावत सत्कार होता है, दुष्ट उपद्रवों के शान्ति की शिक्षायें हो रही है न्याय मर्यादों के प्रबन्धों में सुधार हो रहा है प्रजावों में विविध विद्यावों का प्रचार हो रहा है गरीब दीन प्रजा विधवा स्त्रियां अपणे पोषण में असमर्थों का तथा अन्ध पंगु अनाथ बालकों का पालन पौषण हो रहा है। आप जब से राज सिंहाशन पर सुशोभित हुवे है राम राज्य वा धर्म राज्य चल रहा है आप स्वयं प्रजा को शिक्षा कर रहे हैं जैसे श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है "यद्यदाचर ति श्रेष्ठः ततदेवतरोजनः" याने जो बड़े श्रेष्ठ पुरुष वा राजा करता है उसी माफिक या उसी की नकल दूसरे करते है याने आप दुर्व्यशनों से निर्वत है तो प्रजा भी दुर्व्यशनोंको त्याग रही है आपने मर्यादा पूर्वक एक ही विवाह श्रेष्ठ समझा है तो प्रजाओं में भी सदाचार फैल रहा है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जगदारम्भ से आपके घराणों में राज्य चला हो आरहा है इतना पायदार और प्राचीन राज्यकुल (खान्दान) सृष्ठि में अन्य कहीं नहीं है। आप प्रजा वात्सल्य सदाचार परम्परा की मर्यादा पूर्वक पुत्रवत प्रजा पालनादि दिव्य दैविक गुण सम्पन्न हैं इसी वास्ते हम सब आपके वास्ते तन मन धन और प्राणों से सर्वथा तत्पर कटिबद्ध हैं।

२—आपके विद्यानुराग से आज उस विद्या के दर्शण का सु अवसर प्राप्त है जिसके प्रभाव से आप ही के घराणों में पूर्वज क्षत्रिय राजा समस्त पृथिवी मण्डल में राज्य करते थे। ये अद्वितीय विद्या आप ही के घराणों की है, इस से समानता रखने वाली अन्य कोइ विद्या नहीं है इसलिये जगदारम्भ में आप के ही वंश में राजा सूर्यमनु इक्ष्वाकु आदिकों ने इसको सर्वो-परी विद्या कही है इसी के प्रभाव से अनुभवी शील राजा सच्चा न्याय करने में समर्थ होते थे। प्रत्येक वार्ता को यथावत जानना बडा भारी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बल है। जैसे अंग्रेजों का भी (Proverb) है कि (Knowledge is the Greatest Power) इसी के अनुसार अंग्रेज सैकड़ों (Detectives) रखते हैं और वर्तान्त जानने के लिये ही आपके वंश में पहले के राजा माहाराजा रात को गस्त में जाया करते थे, और स्वयं भी पोशीदा तौर से खुपीया प्रजा से हाल सुनते थे, क्यूंकि प्रकृति नियमानुसार सर्वेबल बुद्धि प्रजागणों में बटी हुई है, इसलिये प्रजागणों में और हम लोगों में जो जो सभ्य व्यक्ति बुद्ध जन है, उनसे मिलते थे, और मिलने से ही अनुभव होता है। एसे राजाओं को कोइ धोके में नहीं डाल सकते थे जिससे उनके राज्य में प्रजा उपद्रवी नहीं होती और कोइ विघ्न नहीं पड सकता। इसी विद्या के ज्ञान से आप ही के वंश में केइ चक्रवर्ति राजा सम्राट महाराजा हुवे उन ही का पवित्र रक्त आप में रम रहा है। आप स्वयं अद्वितिय बुद्धिमान हैं आपकी बुद्धि मामुली साधारण राजाओं की सी नहीं है सिर्फ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस विद्या का अनुभव और बुधजनों का विशेष संसर्ग शेष है सो भी आपके पुण्य प्रताप से ये विद्यातो प्रगट हो आई है और बुद्धजनों के मिलने से राजा सर्व ज्ञाण होता है और निष्कण्टक राज्य करता है जैसे माहाराजा विक्रम भोज कर्ण आदि थे, और आज दिन भी बडे से बडा अंग्रेज छोटे से छोटा आदमी से मिलने में कोइ संका नहीं खाता है इसी से उनका बल बढता जा रहा है। परन्तु फिर भी प्रकृति माया वश उत्थान पतन होता रहता है, ये ही विद्या यूरोप वालों को लगभग १०२ वर्ष पेशतर इसी देश से अर्धांश मिली थी उसी के नमुने से ये प्रशंसनीय राज्य कर रहे हैं। परन्तु आपके पूर्व अपार पुण्य प्रताप से अब वही विद्या पूर्ण रूप से मिली है।

३—इस विद्या का ७-८ सात आठ हजार वर्षों से लोप होना श्रीमद्भगवद्गीता के चौथे अध्याय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से स्पष्ट साबित है इसकी प्रशंसा में तो क्या करूं पर महाराज श्री अजीतसिंहजी साहिब और पं० मदन मोहन मालवी जी आदि बडे बडे सरदार बहुत ही ज्यादे प्रशंसा कर रहे हैं और इसी के ज्ञान से स्वामी लालपुरी बहुत ही उत्तमोत्तम कार्य कर रहा है, जिससे इसकी प्रशंसा बहुत बडे बडों में हो रही है इस विद्या की खोज इसने १४ वर्ष घोर परिश्रम एवं कष्ट उठा कर तपस्वियों के सत्संग द्वारा प्राप्त की है इसकी सफलता का शुभ योग भी आपके ही प्रशंसनीय राज्य में हुवा है ।

४-ये राज्य विद्या राजा प्रजाओं में स्वस्ति सुख शान्ति स्थिति कुशलता पूर्वक सिख लाती है इसके ज्ञान से राज्य सुस्थिर अचल और ध्रुव होता है और राजा बहुत वर्षों तक सुख चेन से

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज्य करता है और बहुत सन्तति के साथ वृधि को प्राप्त होता हुवा दीर्घायुसवाला होता है और आपके लिये यही मेरी हार्दिक इच्छा है, और मेरी इश्वर से भी यही प्रार्थना है कि आप इस पुस्तक की शिक्षा अनुसार स्वस्ति सुख शान्ति स्थिति पूर्वक सौ वर्ष राज्य करै क्योंकि मेरा मुख्य सिधान्त ये है कि—

विधना अपने हाथ से तोले सर्व कर्म्म ।
सौ सुकृत इक पालने एको साम धर्म्म ॥

याने सामधर्म से बढ के इस संसार में कुछ नहीं तन मन धन जो मालिक के काम में आवे तो फेर इससे उत्तम और क्या हो सकता है और मेरा आत्मिक भाव भी मेरे सच्चे दृढ सिधान्त साम धर्म्म में रहै इसी के अनुसार इस राज विद्या की पुस्तक को राजा प्रजाओं के लिये अत्यन्त हितकारी समझ समय समय पर इस स्वामी को मदत देता हुवा यथा शक्ति द्रव्य व्यय का भार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उठा कर छपवाई है और इस गीता वाक्य अनु-
सार " पत्रं पुष्पं फलं तोयं० " याने गीता में
श्री भगवान कहते हैं कि जो भक्ति से पत्र पुष्प
फल जल मुझ को चढाते हैं उसको मैं प्रेम से
ग्रहण करता हूँ इसी के अनुसार ये पुस्तक सादर
समर्पण करता हूं सो इस तुच्छ भेट को स्वीकार
करावें ॥

आपका तुच्छ सेवक

रावराजा गुलाबसिंह

जोधपुर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ भूमिका ॥

ये राजविद्या की पुस्तक सृष्टी मेंस्वास्ति सुख शान्ति स्थिति पंरपरा सिखलाती है इस का वस्तविक उपदेशदेनेवाला श्रीमान स्वामी लालपुरी सरल स्वभाव प्रशंसनीय परिश्रमी क्षात्रहितैशी पुरषहै । इस स्वामीने घोर परिश्रम एवं कष्ट उठाकर तपास्वियों के सत्संग द्वारा लुप्त हुइ राजविद्या का दर्शन का सुअवसर प्राप्त कराया है यह कार्य इसके १४ वर्ष के शक्त परिश्रम का फलहै । आज कल पाश्चात्य सभ्यताभिमानी प्राय यह समजते है कि जोकुछ उन्नति इस समय पश्चात्य लोगोंने की है वह हाती थी है और रहन सहन खान पान रीती रिवाज सबों मे उनकाही अनुकरण करते है अपने घर से सर्वथा अपरिचित हैं वास्तव में ऋषि मुनियों के निर्मित कीये हुवे अमूल्य शास्त्र आजदिनभी मीलते है जीनकी युरोप के विद्वान बडी बडी प्रशंसा (तारीफ) करते है और जिन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के प्रभाव से क्षत्रिय समस्त पृथीवी मण्डल में स्वस्ति सुख शान्ति स्थिति पूर्वक राज्य करते थे इस विद्याका ७-८ हजार वर्षो से लोप रहना श्री मद्भगवद्गीता के चौथे अध्याय से साबित है इस विद्याकी प्राप्ति इस प्रकार हुइ कि ये स्वामी किसी समय गीता पाठ कर रहाथा तो इस को मालूम हुवा कि राजविद्याभी कोइ विद्या है इसपर खोजमे लगा तो थोडीसी तो वगेर चित्र के जेसलमेर के पुस्तकालय से भाटी बुलीदानसिंहजी की मारफत मिली फेर खोजने पर हरद्वार के पहाडों से पाशुपति मत्तके कपालीनाथजी से संपूर्ण सचित्र मिलगइ परंतू ये प्राकृत भाषा मे लिखी हुइथी और जेसलमेर की मागधी भाषा मेथी सो ठीकतौर से न समज मे आने से इस स्वामीने इस विद्याको राजा प्रजावों के अत्यंत हितकारी समझ श्री कपाली-नाथजी से समज लीवी इसलीये ये स्वामि इस के साको जानताहै कि समस्त क्षत्रियों के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पास जमीन की मालकी और इस विद्या का प्रचार महाराजा और साम्राज्य की पायदारी और राजा प्रजावों मे सुख शान्ति बनी रहती है और क्षत्रियों की जमीन पर मालकी और इस विद्याका प्रचार न होनेसे क्या क्या उपद्रव व दुख अत्याचारोंसे राज्यों मे परिवर्तन होता रहता है और इसी तरेह बल बुद्धियों मे भी परिवर्तन होता रहता है स्वार्थ सुख की अधिकता से जगत मे दुख अत्याचारों की अधिकता होजाती है और यह प्रकृति नियम है की जगत करता ने ज्ञान और अज्ञान दोनु रचेहै जब उपरी राज्य और उनके समीप वर्ति कर्मचारीयों याने उत्तम श्रेणि में ज्ञान होता है तो मध्यम और कनिष्ट श्रेणीयों मे अज्ञान रहता हैं इसि हेतु जहां जहां जन समूह है वहां का रक्षा न्याय के लिये वही क्षत्रिय राजा है ये राजविद्या वाक्य स्वयम् सिध है इस को लक्षमे रख कर जहां जन समुह है वहांके क्षत्रियों को

For Private And Personal Use Only

मालकी भाव के साथ ग्रामाधिपति मुकरीर करना उपरी राज्य की स्थिति है किउकी उन का मालकी भाव होने से वह प्रजा को अपनी समज कर उनके दुख मिटाने का सदा उपाय करता रहता है वरना वह प्रजा जन ग्राम छोड देवे इससे मालिक को नुकसान पोंचता है और उसके स्वारथ मे हानी पडती है परंत मालकी भावना न होने से ये खयाल हरगीज नही होता अब दुसरी तरफ ये बात हुइकी उस को मालकी देने से वह सदा के लिये उसकी पीडीयों तक उपरी राज्य का सच्चा सावधानि तन मन और धन से सर्वथा तत्पर कटिबध रहता है और यही उपरी राज्य की स्थिति है और उपरी राज्य जो प्रजा से सीधा फायदा चाहता है उस से अधिक वह क्षत्रिय अपने मालकी भावके साथ दे सकते है मसलन एक क्षत्रिय २५०००) की आय सालाना का ग्रामाधिपति है और यह अछीतरह पूरे पूरे सबुतों के साथ पकी जान

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से देखा हुवा है की सीधा उपरी राज्य मे होने से वही २५००) की जगह आवेसे कम होजाती है पर खैर आधासमजो तो जमामे १२५००) होत है।

सीधी उपरी राज्यम

जमा

[१] १२५००) और नुकसान (१२५००) की कमीका।

[२] उपरी राज्य कोनो करो मेशुद जगीर खार हाजिर रहकर हुकम मालिक नौकरी देता है वह बंद होने का नुकसान।

[३] वक्त जरूरत लडाइके १२०००) का जागिरदार थोडे आदमी की मदत २०० आदमीयों की दे सकता है, सो नुकसान और वखे वक्त जरूरत

पचीस हजार का जागीर खार उपरीराज्य को लालोता देना है हण मुजिय

[१] २०००) रेखरा।

[२] ३६००) चाकरी रा मा १२) रोलरेस।

[३] ७०० मुलफरीक लगान वगेरह याम घोडा कानून कायदा।

[४] ४०००) ठकाणा और ठकाणे के मुलाजमान की चोड वखत घोडा ऊठों पर नोसार पेसार कमदम इजा के ठीकाणा आबाद रहने से ही मिलता है।

[५] ५०००) खालसे मे मुला जमान का एक साल मे इजाफ का खरचा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के नये २०० आदमी रखने से क्या खरचा पड़ेगा सो गोर कीया जाय।

[६] १०००) ठीकाणे से उपरी राज्य के राजा वो अफसरों का दोरोंमे जो मदत मिलती है वह खालसा होने से बंद होने से सरकारी खरच पड़ता है।

[७] १२५०) औसत २० साल के (हुकम नामा २५०००) का सो साल मे १२५०)

[८] १००) नोता नीजराना।

[९] ५०००) खालसे में काल कुसमे की छुट हो जाती है और काल कुसमा इण मुजब होणे की औसत है प्रति दस वर्ष मे चार अच्छा समा दो काल दो कुरशा सराबरी वर्ष और दे बीमारी टीड-कातरा उंदरालट वगेरा का नुकसानी वर्ष इन की छुट जागीर दारेंा रेख चाकरी वगेरा मे नहीं होती है।

२२६५०) अक्षरे बाइस हजार छसो पचास तो जागीर दार उपरी राज्य को सालीना देता है और २५०००)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की एवज मे १२५००) उपरी राज्य को मिलता है सो बाकी १०१५०) दस हजार एक सो पचास का उपरी राज्य को सालाना नुकसान खालसे मे रखने से होता है और जागीरदार को खुद को चाकरी और वकत जरूरत कीमती का अलावा नुक-सान है ॥

इस स्वामी का जो कार्य परीश्रम करनेका सो ये करचूके और इसको प्रकासन आदिमे द्रव्य का व्यय करना हमारा कामथा इस लिये क्षात्रिय जातिकी सेवाको लक्षमे रखकर इसके प्रकासन का बाकी व्यय भार मैंने अपने उपर उठाया इसके पठन पाठन से जो आप लोगोको लाभ पोचेंगा उसके वास्तावक धन्यवाद पात्र ये स्वामीही है और मैंभी अपने द्रव्य का सदुपयोग समजुगा आशा है क्षात्रिय महानुभाव जाती

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बान्धव इसको पढकर शिक्षा एवं कार्य रूपमें इसे परिणत कर कृत कृत्य करेंगे और पाठक गणों से प्रार्थना है कि इसमें अशुद्धता जोकुछ है उस पर क्षमा कर ध्यान न दें और सारको ग्रहणकरें किउंकि ये एक अत्यंतही प्राचिन समय की विद्या है और पहली बार की छपाइ है ॥

स्वजातिका तुच्छ सेवक

रावराजा गुलाबसिंह

जोधपुर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूची-पत्र

विषय.

संख्या— पृष्ठ—

संख्या—		पृष्ठ—
१	भूमिकादि	अ
२	परिचय	१
३	प्रारम्भ वा प्रथम शिक्षा शब्दार्थ बोध ...	२
४	द्वितिय शिक्षा स्तुति प्रकाशयते तत्वज्ञानम् ...	८
५	प्रथमोपदेश प्रकृति स्वभाव नियम विद्या प्रशंसा ...	१४
६	द्वितियोपदेश मनुज शरीरम पाद शक्तिभिः सृज्याग्रहम	२२
७	तृतियोपदेश बल रक्षा—द्वादश बलानि ...	३२
८	चतुर्थोपदेश शुद्धिः कर्म योगः व्यायाम ...	३६
९	पञ्चमोपदेश शक्ति पुरुषार्थ	४३
१०	श्रीमत्परम पवित्र मोक्ष पाद राज्य सम्भवः सैव पद्धति लक्षणः	४६
११	पाठ २ राज्य स्थापनम ॥	५०
१२	पाठ ३ किमर्थं राज्य समर्पणम्	५३
१३	पाठ ४ राज्य स्थैर्यम्	५६
१४	पाठ ५ सर्वोपरि वर्ग वा सभ्यगति	६६
१५	पाठ ६ राज्यांगानि प्रोच्यते	७०
१६	पाठ ७ प्रातदिन सम्पता शिक्षिता बलान्वित सामन्ताना वशवर्ती सेना वेतन परिगृहीत नर्थयत ...	७३
१७	पाठ ८ धर्मेण सहाय साधनोपाय सर्वे राजः सन्निश्चयः	७७
१८	पाठ ९ आयव्यय समीक्षणम्	८१

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या— पृष्ठ—

१९ पाठ १० शिल्पौषधालय चिकित्सालय शरीर व्यवच्छेदालयानां —
धालय वायु जल शुद्धि पुरस्वच्छतादि प्रजा कार्याणि ८४
२० पाठ ११ प्रजासु विविध विद्याप्रचार धर्म प्रचारश्च वर्धनीय ८७
२१ पाठ १२ न्याय मर्यादा प्रबन्ध ८९
२२ पाठ १३ सीमा प्रान्तस्थपरनृपैः सह: कार्या तथा स्वराज्ये
मिश्रितानां वृत्तान्तानांच पर राष्ट्रेषु च परेषां वृत्तान्तानां
गुप्त पुरुष वा चारैः परिज्ञानम् ९६
२३ पाठ १४ पुण्य धर्मेश्वराराधनमुपासनम् ... ९९
२४ पाठ १५ राज्ञां धन मान धर्मध्वजश्च ... १००
२५ पाठ १६ राज्य धुरम् १०४
२६ पाठ १७ दान पारितोषिक वितरणम् १०७
२७ पाठ १८ चार गुप्तगूढ वेष पुरुषा स्वीकृत पुरुषा पायद—
लाश्च ११०
२८ पाठ १९ राज्ञामयोग्यता ११५
२९ पाठ २० राज्य शासन शक्ति प्रबन्ध सदाचार ... ११७
३० पाठ २१ क्षत्रियाणां प्रति सम्बन्धस्थेद्वारे शुभस्थाने शुद्धतौ
सभा स्याताम् तदर्थं यत्न विविध राजविद्योपदेश नियमीयम्
प्रबन्ध सम्बन्धो समाधानं नापि सुविचारणम् ... १२८

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्र सूची

संख्या—		पृष्ठ—
१	शिवशक्ति का सम्वाद राजा सूर्य सुनता है और मनु को — उपदेश करता है	१
२	राजविद्या संकेत	१४
३	ध्यान चतुर्बांध	१५
४	योग माया पूजनम्	२०
५	बल रत्नी	३१
६	बुद्धि कर्म योग	३६
७	शक्ति पुरुषार्थ	४३
८	[illegible]	४६
९	राज्य स्थापनम्	५०
१०	[illegible]	५६
११	[illegible]	५[illegible]
१२	[illegible]	५[illegible]
१३	—*—	५८
१४	[illegible]	५९
१५	राज्य शुद्धि	६०
१६	प्रकृति स्वभाव सदनु सार विकृति विनाशनम् ...	६[illegible]
१७	[illegible]	६१
१८	[illegible]	७०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या— पृष्ठ—

१९ धर्म प्रचार प्रबन्ध ८७
२० न्याय मर्यादा प्रबन्ध ८९
२१ वृत्तान्त परिज्ञानम ९६
२२ द्रव्य सदुपयोग प्रबन्ध १००
२३ राज्य धुरंम् १०४
२४ अयोग्यता ११२
२५ ,, ... ११२
२६ ,, ... ११२
२७ प्रबन्ध भावम ११७
२८ सभा कथा प्रकार से जानना चाहिये ... ११५
२९ राज्य भूल प्रबन्ध दर्शन के कुँ चित्र ... ११७

For Private And Personal Use Only

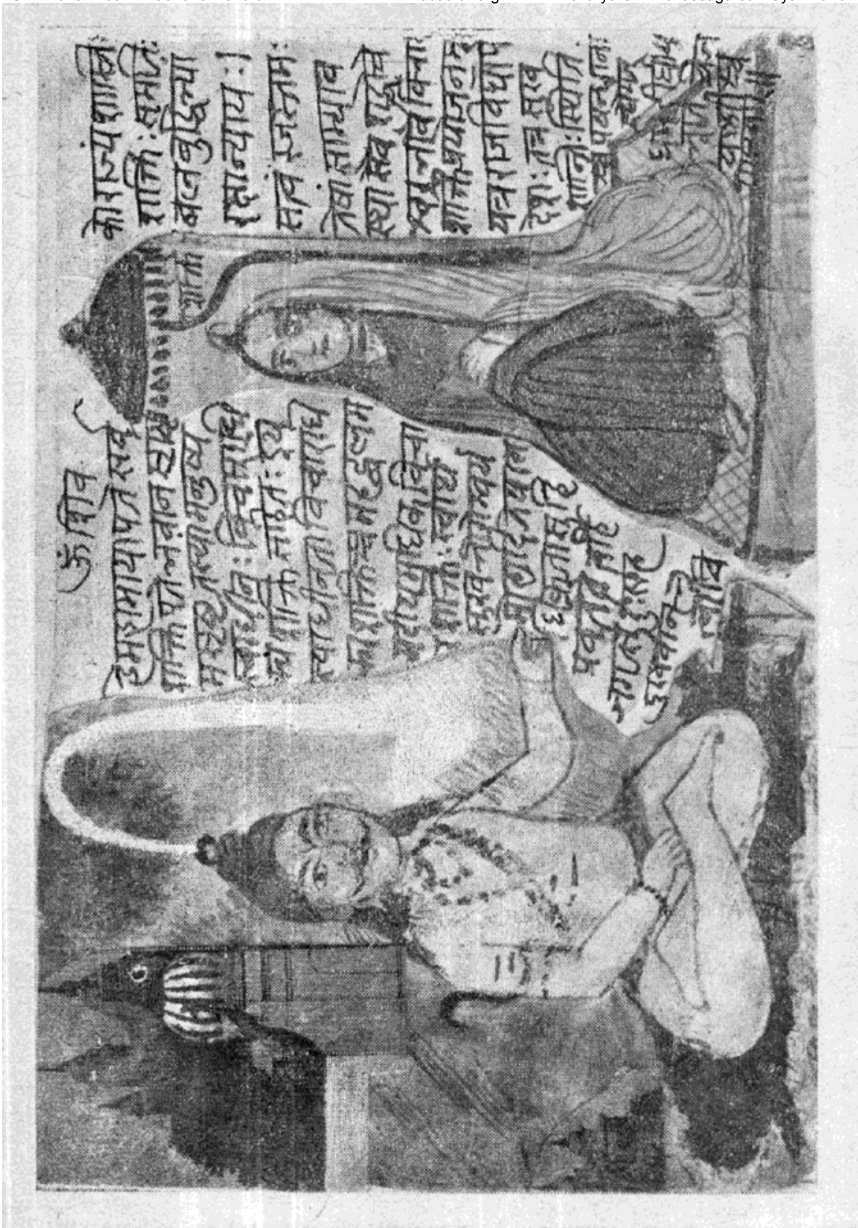

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजाविद्या ।

हे महामाया पते सर्व शक्ति पते पशुपते भवान सृष्टिमसृष्ट तस्यांमनुष्य स्वाधीनः विचाराधिक्य शक्ति सहितः इयं स्वाधीनताविचाराधिक्य शक्तिश्च महद्बलम् ॥

भावार्थ

हे महामाया पति सर्व शक्ति पति पशुपति आपने सृष्टि को रचा है उसमें मनुष्य स्वाधीन अधिक्य विचार शक्ति सहित है और ये स्वाधी- नता अधिक विचार शक्ति बडा भारी बल है ॥

यदीयमधिक विचारशक्तिः स्वार्थ सुख भोगेश्वर्य मोहादिनामधिक्तास्तुहि प्रवर्तते तर्हि जगत्सु दुःसह दुःखवान भूत्वा विनङ्क्ष्यति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

यदि ये अधिक विचार शक्ति स्वार्थ सुख भोग ऐश्वर्य मोह आदि की अधिक्तायों में पड़ जाय तो जगत् मे महा कठिन दुःख होकर नाश को प्राप्त होजाता है ॥

हे महेशतवार्धंगिनी अहम् ममो- परी कृपां कृत्वा जगाद्धितार्थं उचित प्रबन्धं प्रकाशये ॥

भाषार्थ

हे महेश मे आपकी अर्ध अङ्गनी हूं मेरे पर कृपा करके जगतहित के लिये उचित प्रबन्ध प्रकाश कीजिये ॥

हे सर्व शक्तिपति-स्वाधीन वि- चाराधिक्य शक्तेः वैपरीत्यशुध्द्यै प्रति समय सर्गे प्रारंभे राजाविद्यानाम योगं प्रकाशयाम्यहम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ

हे सर्व शक्तिमति-स्वाधीन अधिक्य विचार शक्ति के वैपरीत शुद्धि के लिये प्रति समये सृष्टि के आरंभ मे राजविद्या नाम योग को मे प्रकाश करता हूं ॥

सोपि समये समये लुप्तः प्रकाशितश्च वोभूयते ॥

भावार्थ

वह भी समये समये लुप्त प्रकाशित होता रहता है ॥

अयमावयोः संवादः सृष्टे सुखशान्त्यैस्थित्यै प्रबन्ध स्थिरतायैच प्रकाश्यते ॥

भावार्थ

ये हम दोनु का संवाद सृष्टि का सुख शान्ति स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता के लिये प्रकाश

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कीया जाता है॥

एतद्योगः जगत्सुसमूलं कदापि न विनश्यति। मनुष्याणां बुद्धिषुन्यूनाधिकांशतया प्रवर्तते॥

भावार्थ

ये योग जगत में समूल कभी नाश नहीं होता है मनुष्यों की बुद्धियों में कम या जादा अंश से प्रवर्त रहता है॥

यदा यदाहि एतद्योगस्याधिकता जगत्सुसत्य युगमेव प्रवर्तते। सुखशान्ति स्थितिश्च संवर्धन्ते॥

भावार्थ

जब जब जगत मे इस योग की अधिकता होती है तो सत्य युगकी प्रवर्ति रहती है और सुख शान्ति स्थिति की वृधि होती है॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्यूने नष्टेच मनुष्याणमासुरी मति भूत्वा दुःखात्याचारक्षयाश्च वोभूयन्ते। तं दुःसमयं कल्युगमिति कथयन्ते ॥

भावार्थ

इस योग के कम और नष्ट होने से मनुष्यों की आसुरी मति होकर दुःख अत्याचार और क्षय होता रहता है और एसे खराब खोटे समय को कल्युग कहते है ॥

एतद्योगस्याधिकांश प्रवर्तनेन जगत्सु सुख शान्तिः स्थितिश्च प्रवर्तते तं सुसमयं सत्ययुगमिति प्रभाषयन्ते ॥

भावार्थ

इस योग का अधिक अंश प्रवर्त होने से जगत मे सुख शान्ति स्थिति की प्रवर्ति होती है और उस अच्छे सुभ समय को सत्ययुग कहतेहै ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जगांति सन्मार्गे प्रवर्त्यर्थम् बलस-रूप पुरुषः बुद्धिस्वरूप स्त्रीय सृज्याम्यहम् ताभ्यां रक्षान्यायः क्षात्रकुल सूर्य चन्द्र सभवः तेषां विचार शक्ति शुद्धो-च्चश्वरभावेन सृष्टः सुखशान्तिः स्थित्यर्थे प्रबन्धेषु प्रवर्तते ॥

भावार्थ

जगत को शुद्ध मार्ग मे प्रवर्त करने के लिये बल सरूप पुरुष और बुद्धि सरूप स्त्रीय को मैं रचता हूं इन दोनों मे रक्षा और न्याय है और क्षत्रियों का सूर्य और चन्द्र वंश होता है उनका विचार शक्ति शुद्ध उच्च ईश्वर भाव मे सृष्टि का सुख शान्ति स्थिति के लिये प्रबन्धों मे प्रवर्त रहती है ॥

महापवित्र राजविद्योपदेशः क्षात्र जातेः स्त्रीय पुरुषेभ्यः श्रुतेन शुद्धोच्च

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षात्रकुलेष्वपि प्रजायन्ते तथैवापरजातेः स्त्रीय पुरुषेभ्यः तेषां स्वेषां जातीषु यथेष्ट प्रजायन्ते ॥

भावार्थ

महा पवित्र राजविद्या का उपदेश है क्षात्र जाति स्त्रीय पुरुषों को सुनने से शुद्ध उच्च क्षात्र कुलों में जन्म पाते है इसी तरह अन्य जातिके स्त्रीय पुरुषों को उनकी खुदकी जातियों मे चाहना माफिक जन्म पाते है ॥

क्षात्रकुल स्त्रीय पुरुषेभ्यः शास्त्रास्त्राणामभ्यासः । यथा संभव प्रतिदिनेऽवश्यमेव । यत्र राजविद्यापदेशः तत्र सुख शान्तिः स्थितिश्च प्रबन्धानांस्थैयम् । धर्मः दीर्घायूः भूति विजयः श्रीश्चशासनम् ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ

क्षात्र जाति के क्षत्रीय पुरुषों को अस्त्र शस्त्रों का अभ्यास कराना चाहिये । जहां तक होशके हमेसां अवश्य होना चाहिये । जहां राजविद्या का उपदेश है वहां सुख शान्तिः स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता है धर्म है दीर्घायू है धन धान्य विजय और राज्य लक्ष्मी है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीभगवानुवाच–सर्गे प्रारम्भे शिव शक्त्योः संवादे राजविद्यानाम योगं प्रकाशयामास । सृष्टिषु स्वाहित सुख शान्तिः स्थितिश्च तषां मर्यादा प्रबन्धानां स्थित्यर्थम् । तथैव प्रजानां शरीर प्राण स्वातंत्र्यं द्रव्यं च रक्षार्थम् जड़ चैतन्यं स्थावर जंगम धनानां च ॥

भावार्थ

श्री भगवान बोले कि सृष्टिके आरम्भ में शिवशक्तिके संवाद में राजविद्यानाम योग प्रकाश हुवा । सृष्टिकी आरोग्यता सुख शान्ति स्थिति और इनकी मर्यादा प्रबन्धों की स्थिरताके लिये और इसी तरह प्रजाके शरीर प्राण स्वातंत्र्य और द्रवकी और जड़ चेतन स्थावर जंगम धनों की रक्षा के लिये ॥

एतद्योगस्य मर्यादा प्रबन्धा समयानुसार वा प्रजानां प्रकृत्यानुकूल परिवर्तनम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परन्तू न कदापि विचालयते तत्वतः ॥

भाषार्थ

इस योग की मर्यादा प्रबन्ध में समयानुसार वा प्रजाकी प्रवर्ति के अनुकूल फेरफार (बदला बदली) होताहै परन्तु तत्व से (सारसे) न कभी चलाय मान हो ॥

एतद्योगः मायावशलुप्त प्रकाशितश्च बोभूयते तथापि जगत्सु समूलं न कदापि विनश्यति । न्यूनाधिकांश तया मनुष्याणां बुद्धिषु प्रवर्त्तते । महत्कालेन स्वार्थ सुख भोगेश्वर्य मोहाधिक्ताऽऽपतति तदा नष्ट वा लुप्त भूत्वा वेदेषु श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु बीजरूपेण शेषास्थितः तंबीजरूपांस्थितं देवातिरिकता न कोपिज्ञातुं शक्नोति ॥ उत्थानं पतनं प्रकृति स्वभावः तदनुसार क्षत्रियाणामुदये समये सांपूर्णतया विस्तार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरूपेणाविर्भवति च प्रकाशयति ॥

भाषार्थ

य योग मायावश लुप्त प्रकाश होता रहता है तोभी जगतमें समूल नाश कभी नहीं होताहै कम जादा अंशसे मनुष्यों की बुद्धि में प्रवर्त रहता है। महत्काल से (हजारोंवर्षोंसे) स्वार्थ सुख भोगेश्वर्य की अधिकता आपड़ती है तब नष्ट व लुप्त होकर वेदोंमें श्रीमद्भगवद्गीता में उपनिषदोंमें बीजरूपसे बाकी रहजाता है उस बीजरूप रहेहुवे को देवतों के शिवाय कोइ भी नहीं जान सकताहै उत्थान पतन प्रकृतिका स्वभावहै तदनुसार क्षत्रि-या के उदय समय में वा विद्या पूर्ण विस्तार सरू-पसे आतीहै और प्रकाश होती है ॥

स्वेष्ट प्रेरणा सायोगयुक्तमाया सैव योगमाया प्रसन्ना त्रिभिर्गुणैः संवर्ति वा साम्यावस्था त्रिगुणात्मिक माया क्षात्र-जातिषु शुद्धोचेश्वरभावं वितनोतिसाहि शुद्धोचेश्वर भावोहि स्थितिः॥ त्रिशुला

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकाशयन्ते शुद्धोचेश्वरभाव । शुद्धभावेन सुखम् उच्चभावेन शान्तिः । ईश्वर भावेन स्थिति सदा । योगमाया पूजनम् ॥ स्वार्थाधिकता तथा बुद्धिषु हानिरूपजायते तथाचन्याये ॥ विनान्याये शान्तिः स्थितिः विनाशयनः । प्रतिकार स्वार्थनिस्पृह भूत्वा दानसमुत्साह ॥ सुखभोगस्याधिकता क्लेषहानि तथाच रक्षाष्वपि । प्रतिकार व्याया म परिश्रमेऽभ्यासः ॥ मोहाधिकता सुखेषु हानि तथास्वास्तिष्वपि । प्रतिकारस्वेष्ट प्रेमणा ईश्वराधनमुपाशनम् ॥ ऐश्वर्याधिकता तथाघमण्डः तथास्वयमुच्चज्ञात्वा सुखलिप्सया सद्विद्योपदेशहानि तथादुर्व्यसनस्य पतन । प्रतिकार राजविद्योपदेशप्रबन्धः तेन न नृपविचालयते तत्वतः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

अपने इष्टमें प्रेम रखने से वा योगयुक्तमाया वाडी योगमाया प्रसन्न हुइ तीनु गुणोंकरके संवर्ति वा साम्यावस्था त्रिगुणात्मिक माया क्षात्रजातियों में शुद्ध उच्च और मालकीभाव ईश्वरभाव देतीहै। शुद्धोच्चेश्वर भावही स्थितिहै॥ तीनशूलों प्रकाश करतीहै शुद्ध उच्च ईश्वरभाव शुद्धभावसे सुख उच्चभावसे शान्ति और ईश्वरभाव से स्थिति सदा येही योगमाया की पूजाहै॥ स्वार्थकी अधिकता से बुद्धिमें हानि होतीहै और फेर बुद्धिमें हानि होनेसे न्याय में। विनान्याय शान्ति और स्थिति दोनु नाश होतीहै। इसका उपाव स्वार्थ से निस्पृह (विनाइच्छावाला) होकर दानमें उत्साह रखें। सुख भोग की अधिकता से बलोंमें हानि होतीहै और फेर उसे रक्षाओं मेंभी। उपाव इसका कसरत और परिश्रम याने मेहनत में अभ्यास। मोहकी अधिकतासे सुखों में हानि और फेर स्वास्ति (तन्दुरास्तियों में) उपाव इसका अपणें इष्टमें प्रेम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से ईश्वर आराधना उपासना। ऐश्वर्य (धन-और मालकी) की अधिकता से घमण्ड जिस से अपने आप को उच्च समजता हुवा अधिक सुख में पड़जाता है और सद्विद्या के उपदेश में हानि होती है जिससे दुर्घटन और पतन होजाता है उपाय इसका राजविद्या का उपदेश का प्रबन्ध है जिससे राजा असली बात से चलायमान नहीं होता है ॥

रक्षा का-प्रजानां शरीर प्राण स्वातंत्र्यं द्रव्यंच रक्षणम् जड़चेतन स्थावर जंगम धनानां च ॥

भावार्थ

रक्षा किसको कहते हैं-प्रजा के शरीर प्राण स्वातंत्र और द्रव्य की रक्षा करना और जड़ चेतन स्थावर जंगम धनों की भी ॥

कोन्याय:-वा न्यायेन का प्रयोजनम् प्रजासु स्वास्ति सुखशान्ति स्थितिश्च तेषां प्रबन्धः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

न्याय क्याहै वा न्यायसे क्या प्रयोजनै प्रजा वोंमे आरोग्यता सुखशान्ति स्थिति परंपरा और इन ही के लिये प्रबन्ध करना॥

सर्वं रक्षा न्यायश्च तयोकार्यां क्षात्रियाणामधिकारेभवितुमर्हन्ति नकदापि अन्य जात्याधिकारे तदेवहि क्षात्रियाणां राज्य सुस्थिरचलंध्रुवं सुदृढं न कोपि विचालतुं शक्नोति। प्राय इयं दिव्य शक्तिः क्षात्रजातेषु हि रमाति॥

भाषार्थ

सब रक्षा न्याय और इनके कार्य (रक्षा न्याय के कार्य) क्षत्रियों के अधिकार में होने योग्यहै न कदापि अन्य जाति के अधिकार में। वही क्षत्रियोका राज्य सुस्थर है अचल है ध्रुव है और सुदृढ (पक्का मजबूत)है उस को कोईभी चलायमान नहीं करसकते है जादे करके ये दिव्य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शक्ति क्षात्र जातियों में रमाति है ॥

राजाप्रजानामैक्यताविना सर्वेशुभ चिन्हा पृथग्पृथग्भूत्वा शनैःशनैः विनश्यन्ते तेभ्यश्च राजा सर्वोपरि राजविद्या ज्ञानेन वा बुध्यया ऽपतेजोभिर्बन्धनंकुर्यात् वा स्वकरणम् तेन नैश्चल्यं लभते भुपोराज्यं हि सुस्थिरतां तथा ॥

भावार्थ

राजा प्रजा की एक्यता विना सब सुभ चिन्ह जुदे जुदे होकर शनैः शनैः नाशको प्राप्त होतेहै इस लिये राजा सर्वोपरि राजविद्या के ज्ञान से वा बुद्धि से जल सरूप तेजसे बांधे वा अपणा करले जिस से राज निश्चलता को प्राप्त होताहै और राज्य स्थिर रहता है ॥

बल बुद्धिभ्यां रक्षान्यायः ताभ्यां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज्यं॥ द्वादश बलैः रक्षा। बुध्यया षड्धान्यायः॥ शारीरिकात्मिक बलभ्यां सिंह हननं प्रथमम्। बुध्यया सिंहं हननं बुद्धि बल द्वितियम्॥

१ प्रजाप्रीय न्याय धर्मेण प्रजानां प्रीतिः रुच्यानुसारः

२ जगद्धितार्थं पारमार्थिक न्याय जगतां स्वस्तिः सुखशान्ति स्थातिश्च तेषां प्रबन्धानां स्थित्यर्थम्

३ सत्य न्याय यथार्थ निर्णयेन निःपक्षतया प्रजासन्मुखे प्रगट प्रकाश

४ सात्विकन्याय प्रजानां वृद्धिहेतुः प्रजा धरोवरेव राज्ञामधिकारे

५ राजासक न्यायराजा प्रजाषु सुख शान्ति राजाविभवाधिकाधिक प्रकाशयते। एतेषां सदा स्थातिः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यावदेतषु पंचेषु तमोरूप स्वार्थं नाप्नोति ॥

३ स्वार्थिक वा तामासिकन्याय स्वार्थं प्रधानेन कुरुते। नाममात्र न्याय स्वार्थिक मर्यादाऽऽधार । राजा प्रजाषु सर्वेषां स्वस्ति सुखशान्ति स्थिश्च एतेषां प्रबन्धाऽऽचारण वि-नाशकानि भूत्वा राज्यं भ्रंशति। राजा प्रजाषु दुःख कलेश वे भूय-न्ते राज्यमपरकुले संजायते ॥

भावार्थ

बलबुद्धि से रक्षा न्याय है रक्षा न्याय से राज्य है बारे बलोंसे रक्षा है बुद्धिसे छ प्रकारका न्याय है शरीरिक आत्मिक बलसे सिंहका मार-ना पहला बल है बुद्धि से सिंहको मारना बुद्धि बल द्वितिय है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

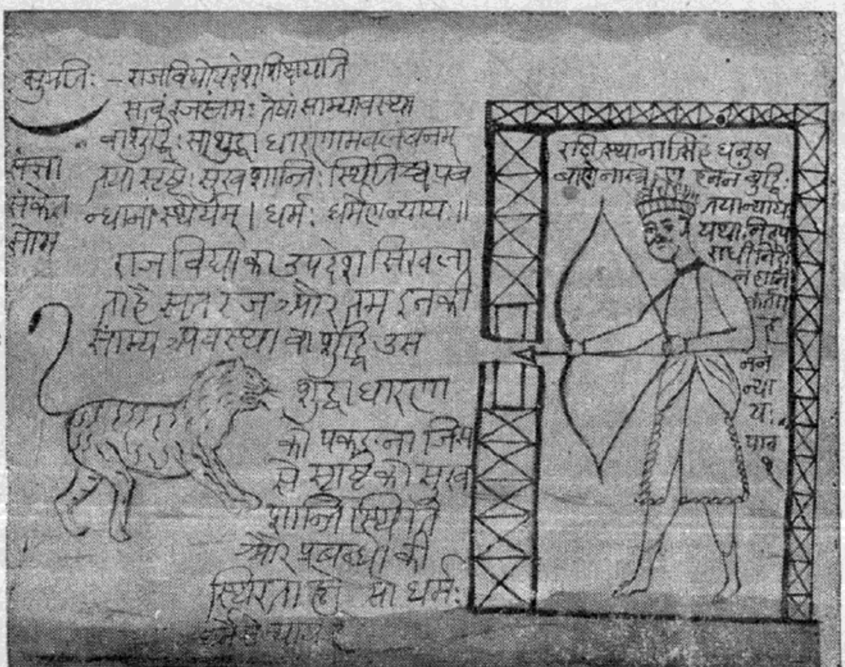

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ आशय ॥
१ प्रजाप्रिय न्याय: धर्मेण प्रजानां प्रति इच्छानुसार:
२ जगद्हिताय पारमार्थिक न्याय: जगतां सुख शान्तिः स्थितिश्च प्रबन्धानां स्थि त्यर्थम्
३ सत्य न्याय: यथार्थ निर्णयेन निष्पक्षतया एतत्रय प्रकार न्यायेन सदा स्थितिश्च
४ स्वार्थिन न्याय: स्वार्थ प्रधानेन कुरुते केवल नाममात्र न्याय: स्वार्थिक मयी राज्य व्यापार: राजा प्रजा सर्वेषां सुख शान्ति: स्थितिश्च प्रबन्धानां चिरेण विनाश भवन्ति च तस्मात् राज्यं नश्यति। राज्य प्रजायां दुःख क्लेश भवेत् न्युनाधिक्यं राज्यापर छत्रे प्रजायते ॥
॥ शासनार्थ २१ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१ प्रजाप्रिय न्याय धर्म से प्रजावोंकी प्रीति रूचीके अनुसारहो॥

२ जगद्धितार्थ परमार्थिक न्याय जगतोंकी स्व-स्ति सुखशान्ति स्थिति और ऐसे प्रबधोंकी स्थिरता के लिये हो॥

३ सत्यन्याय यथार्थ निर्णय और निर्पक्षता से प्रजाके सन्मुख प्रगट प्रकाशहो॥

४ सात्विकन्याय प्रजावोंकी वृद्धि के कारण से हो राजा प्रजाको धरोवरकी भांति अधिकार में रखे

५ राजासिक न्याय राजा प्रजावों में सुखशान्ति से हो। राजविभव अधिक अधिक प्रकाश कीया जाताहै और इन सबकी सदा स्थितिहै जबतक कि इन पांचों में तमोरूप स्वार्थ न आजाता है॥

६ स्वार्थिक वा तामासिक न्याय स्वार्थ की प्रधानतासे कीया जाता है ये नाममात्र न्याय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है और स्वार्थिक मर्यादा आधार है। राजा प्रजावोंपें सर्वों की स्वस्ति सुखशान्ति स्थिति और इन के प्रबन्ध जल्दी नाश करने वाले होकर राज्य को नाश कर देती है राजा प्रजावों में दुःख कलेश होते रहते है और राज्य भी दूसरे अन्य कुल मे चला जाता है ॥

स्वार्थे समये समये हानि वाक्षाति रूप जायते स महद्भयम् परतू नकदापि पारमार्थे स सदा उच्चपदंप्राप्यते भय हानि शोक संकल्पेषु रहितश्च ॥

भावार्थ

स्वार्थ में समे समे हानि वा क्षति होती रहती है वह भयकारी है परंतु पारमार्थ सदा उच्च पद प्राप्त करता है और भय और हानि के शोक संकल्पों से रहित है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिगुणात्मिक मायायाः सृष्टिपूत्थानं पतनं संख्या संज्ञा संकेतै प्रदर्शन्ते ॥

संख्या १ प्रथमं सूर्यं साक्षि कृत्वा-हमस्त्रशस्त्राणामभ्यासंच करोमि प्रति दिने हेशक्ते वशो ममगृहे ते : स्वाति सुख सम्पत्ति वृद्धिः बल प्रताप पराक्रमश्चेति ॥ संकेत सूर्यः संज्ञा प्रथमम् ॥

संख्या २ द्वितियं चन्द्रं साक्षिकृत्वाहं सर्वोपरां राजाविद्याभ्यासंच करोमि प्रातिदिने हे सुमते वशो ममगृहे तया शान्तिः स्थाति परंपरा भूतिरायुश्च सम्वर्धनम् सुमाति बुद्धि विभूति राज्य लक्ष्मीच ॥ संकेत चन्द्रमा । संज्ञा द्वितियम्

संख्या ३ तृतियम् यत्र ..जाविद्योपदेशः१ प्रातिदिने शस्त्रास्त्राणामभ्यासः२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्र बहु बुद्धिः ताभ्यां रक्षाभ्यायः ता भ्यां राज्यं सुस्थिरमचलं शुभम् सुदृढम् यावत्सूर्यचंद्र मण्डलं स्थितम् ३ ॥ संकेत सूर्य चंद्रः संख्या तृतीयम् ॥

संकेत त्रिशूल प्रकाशयते शुद्धोच्चेश्वर भावेन सुहृदेषु स्वहित सुख शान्तिः स्थितिः सम्पत्ति वृद्धिः भूतिरायुश्च सं· वर्द्धनं ॥ संख्या ५ संज्ञास्थितिः ॥

संज्ञा=राज्याभिषेपः राज्याभिषेपैः रा· जविद्यो देश. राज्यकृपा राज्यसिंहास- नप्राप्तम् ॥ संकेत राज्यसिंहासनम् । संज्ञा राज्याभिषेप ॥ संख्या४ ॥

संकेत पतित त्रिशूल प्रकाशयतेऽशुद्ध नीच दास भावेन रोग दुःख विघ्न क्रोध पारुष्यं दुर्घटनं पतनं विनाशनमायुश्च

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूपः ॥ संख्या ६

संज्ञा धर्मेणरक्षा न्यायराज्यं तयोर्भयो-
जनं सुदेषु स्वस्तिसुखशान्तिस्थातिः
संपति राज्यं वृद्धिरायुश्च संवर्धनं ॥
संख्या ७ ॥

संज्ञा-योग-द्वादशबैलः रक्षा-सत्संगति
भि न्यायः ताभ्यां प्रकृति रंजनं परस्परं ।
संज्ञा योग संख्या ८ ॥

संख्या ९ बलेनरक्षा-सर्वेषामात्मानामा
त्मा सर्वेषामाज्ञापाहायपश्यामि ज्ञात्वा
रक्षांकरोति राज्यं प्राप्यते ॥

संख्या १० यत्र धर्मेणरक्षान्यायनस्तः
राज्यं भ्रंसाति ॥

संख्या ११ बलहीनं दुर्घटनं रक्षाहीनं
दासत्वं

संज्ञा-शुभालि राजनिद्यासिक्षा माया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वा प्रकृति बुद्धिःबुद्धे प्रयोजनं न्याय संख्या १२ ॥

संकेत राजाजीवः प्रजाशरीरं । विना जीवः न शरीरस्यस्थितिः न जीवस्य विनाशरीरं । बाणाकारजीवः धनुषाकार शरीरं ॥ संख्या १३ ॥

संख्या षट्त्रिंशल्लक्षणैः राज्यं संख्या १४ ॥

संख्या षट्त्रिंशल्लक्षणाविहीना शनैः शनैः विनश्यति संख्या १५ ॥

संकेत शक्तिः वलात्रिकोणाकारः संख्या १६ ॥

संकेत सुमतिबुद्धिः वर्गं चतुष्कोणाकारः संख्या १७ ॥

संकेत वलबुद्धिः वर्गत्रिकोणाकारः संख्या १८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या राजाविद्याऽभावा बुद्धिहानम् । स्वार्थसुख भोगेश्वर्यमोहाधिकताशुभा प्राप्लिनम् समूलंचाविनश्यति ॥ संख्या १९ ॥

संज्ञा साक्षीसर्वान्पश्यतीश्वर साक्षीज्ञात्वोच्चपदं प्राप्यते सर्वोपरिप्रभरहं पंचतत्वाद्ब्रह्माण्डमुत्पन्नंचकरोमि।पश्चान्मम इश्वराः सकाशात्समस्वरैः सृष्टः स्थित्यर्थ । सुखशान्तिः स्थितिः (भोग) वृद्धिः (ऐश्वर्यं) स्वास्तिरायुः । संपत्तिसाशनं समेव सर्वेपुष्टाद्दि ॥ ममाज्ञा तथैवएतेषु हानिकर्ता समूलंविनश्यति न संज्ञायः ममसाक्षीसर्वान्पश्यति । इमं योमज्ञात्वा राज्यंप्राप्यते तस्यराज्यं सुस्थिरं मचलं ध्रुवं सुदृढम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

त्रिगुणात्मिक माया कीसृष्टियोंमें उत्थान पतन संख्या संज्ञा और संकेतों से दिखलाये जाते हैं॥ संख्या १ प्रथम सूर्य को साक्षि करके मैं अस्त्र शस्त्रों का अभ्यास करता हूं हमेस (नित्य) हे शान्तिः मेरे घरमें निवाश करो जिन से स्वारित सुख संपति और वृद्धिहो बलः प्रताप और पराक्रम संकेत सूर्य। संज्ञा प्रथम॥ संख्या २ द्वितिय चन्द्रमाको साक्षि कर के मैं सर्वोपरि राजविद्या का अभ्यास करता हूं नित्य हे सुमति मेरे घरमें निवश करो जिससे शान्ति स्थिति परंपरा विभूति आयुसका बदना हो। सुमति बुद्धिः राजलक्ष्मी। संकेत चन्द्रमा संज्ञा द्वितिय।

संख्या तिसरा-जहां राजविद्या का उपदेशहो? जहां प्रतिदिन अस्त्र शस्त्रों का अभ्यास हो २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

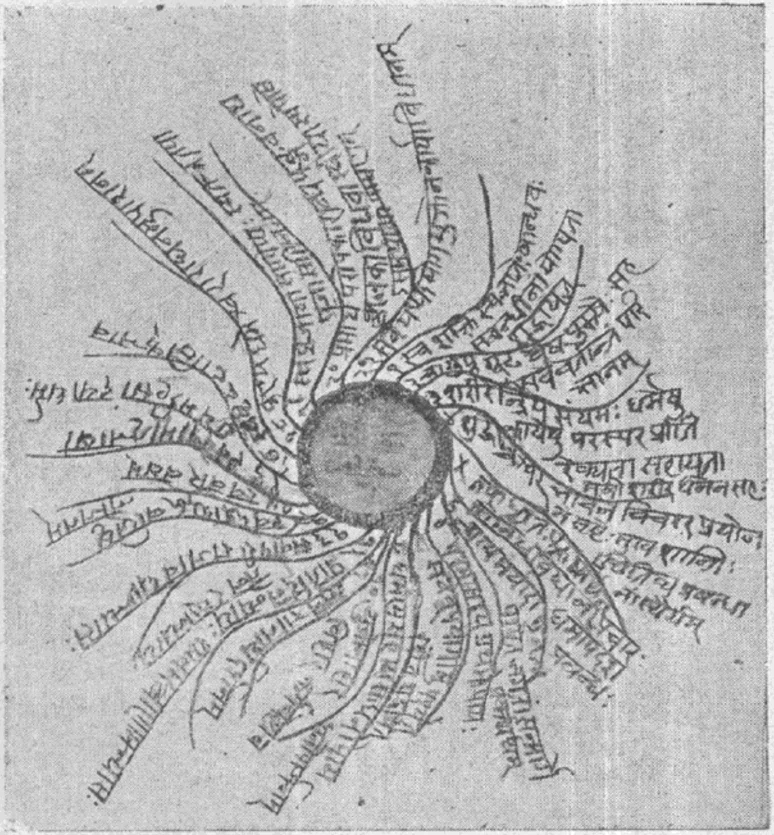

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

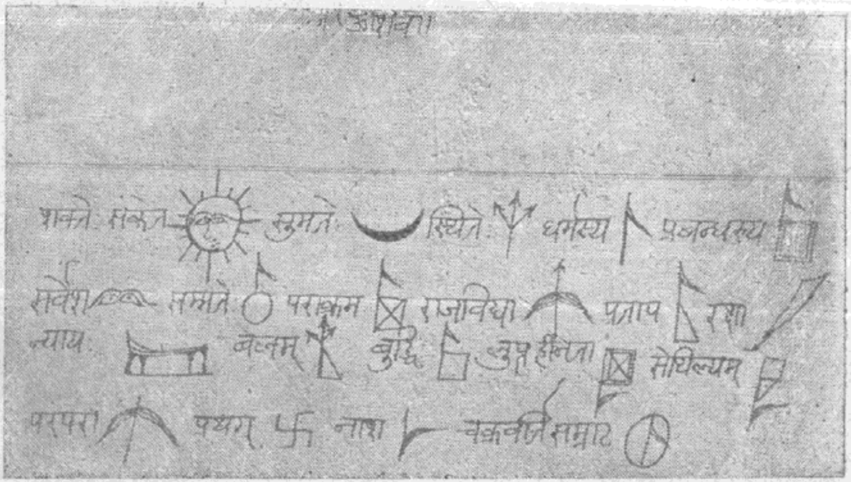

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संकेत ॐ शिव

स्वेच्छे प्रेमरंगे सा योगमाया प्रसन्न।
शान्तियानं श्रद्धयान्वितानन्ददाति योगः
मायया। स्थितिश्च। प्रशान्ते - स्वेच्छ प्रेम
रंग।

स्वाधीनाधिक्यविचार शक्तिः मद्धु
नम् वा महान्बलम् संज्ञा - स्वाधीन
शक्ति

त्रिशूलना प्रकाशयन्ते शुद्धेश्वरन्नाव।
संज्ञा स्थिति

सर्वान्पश्यतीश्वरं साक्षी ज्ञात्वा सर्वे
कार्या संपादनमुच्च पदं प्राप्यते। संज्ञा
साक्षी

इमं परमन्तावं विरुद्धाचरणं पृथग्पृथ
न्यत्वा विनाशनम् संज्ञा पृथग

सूर्यसाक्षीकृत्वा प्रतिदिने शास्त्रास्त्राणाम
न्यास संज्ञा बलम्

चंद्रं साक्षीकृत्वा प्रति दिने सर्वोपरी
विद्यान्यासः। संज्ञा बुद्धिः

विविध विद्यानां प्रचार धर्मोपदेश
प्रबन्धः संज्ञा - विविध

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वहां बल शुद्धि है वहां रक्षान्याय है और इन दोनु से (रक्षान्याय से) राज्य सुस्थिर है अचल है ध्रुव है (नाडिगने लायक) और अच्छा मजबूत है सूर्य चन्द्र के मण्डल स्थिति तक । संकेत सूर्य चन्द्र । संख्या तीन ॥

संकेत त्रिशूल प्रकाश करता है शुद्ध उच्च और ईश्वर भाव (मालकीभाव) से सृष्टियों में स्व- स्ति (अरोग्यता) सुख शान्ति स्थिति संपत्ति वृद्धिः विभूतिः और आयुस का वढना संख्या५ संज्ञा स्थिति ॥

संज्ञा राज्याभिशष-राज्याभिशेष से राजविद्योपदेश है । राजक्रया । राज्यासिंहासन को प्राप्तकरना है संकेत राजासिंहासन है । संज्ञा राज्याभिशेष है संख्या ४ संकेत पतित त्रिशूल प्रकाश करता है अशुद्ध नीच दास भाव से रोग दुःख विघ्न क्रोध कडवापन दुर्घटनं पतनं विनाश और थोडा उमर (आयुश) संख्या ६ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संज्ञा-राज्यम-धर्म से रक्षा न्याय राज्य है। रक्षा न्याय का प्रयोजन सृष्टियों में निरोग्यता सुख शान्तिः स्थिति संपति वृद्धिः और आयुस का बढ़ना है संख्या ७ ॥

संज्ञा-योग-चारे बलों से रक्षा और सत्संगतीयों से न्याय और इन मे प्रजा आपस में सुख चेन से रहे। संज्ञा योग है संख्या ८ है ॥

संख्या ९ बलसे रक्षा-सबकी आत्मा का आत्मा हूं सबकी आशीष आद्दाय में देखताहूं एसा जान कर रक्षा करता है वह राज्य पाता है

संख्या १०-जहां धर्म से रक्षा न्याय नहीं है राज्य भ्रष्ट होजाता है ॥

संख्या ११-बलहीन होकर घटता है और रक्षा हीन दास भाव को प्राप्त होता है ॥

संज्ञा-सुमति राजविद्याशिक्षा माया वा प्रकृति बुद्धि बुद्धि से प्रयोजन न्याय है संख्या १२ ॥

संकेत राजा जीव है बाणाकार है प्रजा शरीर है धनुषाकार है विनजीव शरीरकी स्थिति नहीं है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और न शरीरके विनाजीवकी। संख्या १३ ॥
संख्या १४ छतीस लक्षणों से राज्य है संख्या १४
संख्या १५ छतीस लक्षणोंसे हीन शनैः शनैः नाशहोजाता है संख्या १५ ॥
बल का संकेत त्रिकोणाकार है संख्या १६ ॥
बुद्धिका संकेत वर्ग चतुष्कोणाकार संख्या १७ ॥
बल बुद्धि का संकेत वर्ग त्रिकोणाकार है संख्या १८ ॥
संख्या १९ राजविद्या के अभाव से बुद्धि में हीनता आती है। स्वार्थ सुख भोगेश्वर्य मोह की अधिकता में जादापड़ने से मूल सहित नाश को प्राप्त होजाता है ॥ संख्या १९ ॥
संख्या २० साक्षी सबको देखता है ईश्वरको साक्षी जानताहुवा उद्धारको पाता है ! ॥
२१ सर्वोपरि प्रभु नें पांच तत्वोंसे ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति की है फेर डमरु के सकाश से सात स्वरोंसे सृष्टि की स्थिति के वास्ते सुख शान्ति स्थिति (भोग) वृद्धि (ऐश्वर्य) स्वास्ति आयुस और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपत्ति शासन (राज्यम्) सातोंकी वृद्धि मेरी आज्ञा है इसी तरह इन में हानि करने वालेको मैं मूल से नाश करदेताहूं इसमें संशय नहींहै मेरी आंखे सबको देखती है इसयोग को जान्ता हुवा राज्य को पाता है और उसका राज्य सुस्थिर अचल ध्रुव (अटल) और सुदृढ होजाता है ॥

न्यूनाधिकांशतयाऽथवाल्पत्वाधिक्यं पृथिवी पतित्वं क्षात्र जातिनां परंपरा स्थिति । सिवाऽपरि राज्ञां । परंपरा स्थितिः नकदापि वेतन वाऽन्यथा । पृथिवी पतित्वमैश्वरभावः जात्याभिमानः सुस्थिरमचलं ध्रुवम् तेषां शक्ति दृढ सुपरि राज्ञामपि तथैवच वाऽन्यथा दुर्घट : पतनं शनैः शनैः विनाशनं प्रगामि उपरिराज्य निर्मूलं भूत्वा असाति न संशय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

थोड़ी घणी कम ज्यादा जमीनकी मालकी क्षत्रि-की जातिकी स्थिति परंपरा है और यही उपरी राजाओंकी परंपरा स्थिरता तनखा से वा नौकरी से वा और तरह से नहीं है॥ जमीनदार अधिकार (मालकी) मालकी भाव जाति अभिमान से राज्य अच्छा स्थिर अचल और ध्रुव रहता है और उनकी शक्ति (बल) को दृढ बनाता है यही उपरि राजाओं के लिये इसके सिवाय और तरह दुर्घटन पतन होताहुवा शनैः शनैः नाशको प्राप्तहोजाता है परिणाम उपरी राज्य निर्मूल होकर भ्रष्ट होजाताहै इस में सन्देह नहीं है॥

प्रातर्नित्ये शस्त्रास्त्राणामभ्यासः तथै-व महाजनोपदेशो श्रणुयात तास्त्रां वल बुद्धि तासां रक्षा न्यायः तथोत्कृ-ष्टसमरशका-जितेन्द्रिय नृपालस्य रहितं सत्यमेको पता नि शौर्यं समरेस्थिरः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दानमीश्वरभाव दुर्व्यशेषु निवर्ति तेज क्षमा रक्षा न्यायं पश्येत् प्रजासांमिलनं पालनं सारं वा तत्वज्ञानार्थं दर्शनम् स्वेष्टे प्रीतिः सत्संगतिः धृतिः॥ एतेषु प्रवर्ति पृथिवी स्वयं याति तेषां ग्रहे नि- वाश हेतोः याति वंशसमुन्नति। तथा ऽन्याये न स्वधर्म वर्गा बान्धव सम्बन्ध य स्वप्रजा ऽपरप्रजा परनृपाऽहं मोपरी राजा सर्वैऽधिकृतर सम्मतयशत्रूः भवन्ति चा न्यायकाराजानंविनाशय न्ते॥ जात्योदयेषु विचारशक्तिष्वधि कः तेजः तीव्रता तीक्ष्णता सन्ति तथैव राजाविद्याऽभावेन पतितासु निस्तेजः तीव्रता तीक्ष्णता विनश्यन्ते। सेथि ल्यमतिमानिता दर्पः पारुष्यमज्ञान-

स्मानमदान्वितः नष्टात्मना न्यायेनार्थं संचयति स्वयमीश्वरोऽहजानाति विनश्यति।

राजविद्यायोगमाया क्षात्रजातिषु तेजः तीव्रता तीक्ष्णता विभाति भूति ध्रुवा श्री विजयश्चशासनम् ॥

सदा सर्वदाऽनाशवानाजरामर देहिनः शुद्धोचश्वर भावेन देहांतरोऽह मद्योन्यां राज्यप्राप्तिः पुनःपुनः वा युद्धशस्त्रैः देहं पवित्रंकृत्वात्यजति धीरस्तत्र न मह्याति राज्यप्राप्तिः ध्रुवम् ॥

सर्व भूतानां पंचतत्वा त्पंचावस्थाभूत्वा पृथिव्या जन्मः जलेन कौमारम् । पावकेन पौरुषम् यौवनम् । वायुः तेन जरा आकाशेन मृत्युः भूयः पृथिव्या जन्मे·

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्यादि भक्तिनाऽपारिहार्यैरथैः धुंप्रगतैं चक्रम् ॥

भाषार्थ

हमेश नित्य अस्त्र शस्त्रों का अभ्यास इसी तरह राजाविद्यापदेश सुनना जिससे बढ़े बुद्धि जिसमे रक्षा न्यायः इन दोनुही इढता १७ कर्म है १ जितेन्द्रिय २ आलस्य रहित ३ सत्यम ४ एक पत्नि ५ शौर्य ६ युद्ध मे स्थिर ७ दान देना ८ माल की माव ९ खोटे व्यसनों से दूर रहना १० तेज ११ क्षमा १२ रक्षा न्याय को संभालना १३ प्रजासे मिलतरहना पालना १४ सार बात को जानना १५ अपने इष्ट में प्रीति (प्रेम) १६ सत्संगति १७ धीरज इन में प्रवर्ति रखनेसे पृथिवी अपने आप जातीहै उन के घर मे निवाश के लिये और उस वंश (कुल) कोउन्नति होतीहै इसी तरह अभ्याससे अपना कुटुम्ब बाधु सम्बन्धी अपनीप्रजा दूसरी प्रजा राजा और दूसरी राजा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और सब अधिक सम्मति (राय) सब शत्रु होजा· तेहै और अन्यायकारी राजा को नाश करतेहै जाति के उदय में (चढने में) उनकी विचार शक्ति अधिक तेज तीव्र और तीक्षण होजातीहै याने चढनेवाली जाति के खयाल में जादे तेजी तीव्रता और तीक्षणता आजाती है और इसीतरह राजविद्या के अभाव मे गिरती हुइ जाती निस्तेज होजाती है तीव्रता तीक्षणता जाती रहती है ढीला पन अतिमान घमण्ड कड्वापन अज्ञान मान मद मे चूर अपनी आत्मा को नाश करनेवाला अन्या· य से धनही धन इकठा करता है और अपने आप को उच्च मालिक समजता है सो नाश को प्राप्त होताहै ॥ राजविद्या योगमाया क्षात्र जातियों में तेज तीव्रता तीक्षणता अन्न धन विभव राजल- क्ष्मी विजय और राज्य देतीहै ॥ सदा सर्वदा आत्मा (जीव) अनाशवान अजर अमर है वह शुद्ध उच्च और मालकीभाव से दूसरी देह (शरीर) उच्च जन्म राज्य पाता रहता है वा युद्ध में शास्त्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्त्रों से देहको पवित्र करताहुवा शरीर छोड़ता है और वह धीरजवान पुरुष मोक्षको नहीं प्राप्त होता है निश्चय राज्य पाता है ॥ सब प्राणीयों की पांच तत्वों से पांच अवस्था याने पृथिवी से जन्म। जल से कौमार अवस्था । अग्नि से पौरुष यौवन। वायू से जरा। आकाश से मृत्युऔर फेर पृथिवी से जन्म आदि होकर अटल जन्म होताहै येही जगत का घूमता हुवा (फिरताहुवा) चक्रहै ॥

राजविद्या शिक्षयति स्वस्ति सुख शान्ति स्थितिः संपति वृद्धिः भूतिरायु श्च संवर्धनम् ॥

भावार्थ

राजविद्या सिखलाति है रोग रहित होना सुख शान्ति स्थिति परंपरा संपति वृद्धि राजलक्ष्मी और दीर्घायु होना ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ॐ शिव ॥

राजविद्या ।

प्रारंभ शिक्षा ।

मनुज शरीरं विचार शक्तिभि-स्सृज्याम्यहम् । विचार शक्तिभिरुच्च भावेन सह सर्वार्थं साधितुं च सर्वं कर्तुं शक्नोति ।

भाषार्थ

मनुष्य का शरीर विचार शक्तियों सहित मेने रचा है। विचार शक्ति से उच्च भाव के साथ सब काम साज शक्ता है और सब ही कर शक्ता है।

विचार शक्ति महान्बलम् । एत-द्विद्योपदेशेन ज्ञानं श्रुतेन सह बहुला संतति (परिवार) श्च सर्वे सुख संपति सहतिष्ठते चिरमाभू चंद्रतारकम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ

विचार शक्ति महाँन्बल है। इस विद्या के उपदेश से ज्ञान को सुनने से बोहुत संतति (परिवार) और सर्व सुख संपति के साथ बहुत समय पृथिवी चंद्र तारों की स्थित्ति तक स्थिर रहता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ॐ शिव ॥

राजविद्या।

प्रथमशिक्षा—शब्दार्थ प्रकाश।

१—सम्राट्.

चक्रवर्त्ति राजा समस्ते क्षिति मण्डले।

भाषार्थ

१ सम्राट्—चक्रवर्ति राजा समस्त पृथिवी मण्डल में।

२—स्वार्थिक् बुद्धिः

स्वल्प वा क्षुद्र बुद्धचाया शीघ्र स्वल्प सुखार्थ स्वल्प लाभार्थ चाधर्मेण परस्य हानिं कृत्वा संतोषो यस्य च स्थितिः संदिग्धा सा स्वार्थिकि बुद्धिः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ

२ स्वार्थिक् बुद्धिः—ये स्वार्थिक अल्प (छोटी थोडी) क्षुद्र (नीच) बुद्धि से जलदी थोड़ा सुख और थोड़ा लाभ के लिये दुसरों का नुकसान करने में स्थिति होती है वह नीच दुबधा सहित स्वार्थिक बुद्धि है।

३–पारमार्थिक् बुद्धिः

ययोच्च बुद्धयाया धर्मेण सह महत्प्रयोजनस्यावाप्यते प्रयतेत इयमेव धन सुखयोः स्थितिः सैव पारमार्थिकि बुद्धिः।

भावार्थ

३ पारमार्थिक् बुद्धिः—जिस उच्च बुद्धि से धर्म के साथ बड़े बड़े कार्यों को प्राप्त करने का यत्न करना यही धन और सुख दोनू की है वही पारमार्थिक बुद्धि है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४-रक्षाका.

बलेन दुर्बलं रक्षेत्-बलिनो दुर्बलस्येह रक्षणं प्रयत्नतः।

भावार्थ

४ रक्षा क्या है-बल से दुर्बल की रक्षा करना-बलवान् दुर्बल की रक्षा यत्न से करे।

५-क्षत्रियः

क्षतात्-नाशात् । त्रायते-रक्षाति इति क्षत्र एव-क्षत्रियः।

भावार्थ

५ क्षत्रिय से क्या अर्थ है-नाश से रक्षा करने वाला घाव वा कठिन दुःख को सहन करे।

६-न्याय लक्षण माह.

सुकृतस्यकर्तारं सुफलेन हि योजनम् दुष्कृतैस्ताविधातारं दण्डेन दमनं स-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मृतम् निष्पाप वा निरागसो नावसादं दातुमर्हा।

भाषार्थ

६ न्याय के लक्षण कहे जाते है-अच्छा करने वाले को अच्छा फल देना और बुरा करने वाले को दण्ड देना-निष्पाप निरपराधी दुःख देने योग्य नहीं है।

७-सामकिम्.

शान्तिवाक्यम्-वा सुखेन सहः प्रीय बचनादि तेन कार्यानुष्ठानम्।

भाषार्थ

७ साम क्या है-शान्ति करने का वाक्यः वा सुख के साथ मीठे वचन आदि से कार्य करना।

८-दानकिम्.

लोभेन सहः वा दानेन कार्यानुष्ठानम् वा धनादेः समर्पणम्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

८ दान (दाम) क्या है-लोभ देकर कार्य करलेना।

९-भेदकिम्.

बुद्धिर्द्विधाकरणम् संहतानां शत्रूणां भेदेन सहात्मसात्करणम्।

भाषार्थ

९ भेद क्या है-बुद्धि को दो कर देना वा मिले हुवे शत्रूवों को भेद करके अपने साथ करना।

१०-कोदण्ड:

ताडनेन सह वा विग्रहेन सह कार्यानुष्ठानम्।

भाषार्थ

१० दण्ड क्या है-ताड़ना देकर वा लड़के कार्य करलेना।

११-किंज्ञानम्.

ज्ञानस्य चत्वारोऽङ्गाः चितं मनो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बुद्धिरहंकारश्चेति। येन चित्यते संज्ञायते आत्मनोचित्तम् हृदयापरनामकम्। मनस्तु संकल्प विकल्पात्मकम् संदेह स्वरूपम्। निश्चयात्मिका बुद्धिः वा ज्ञानेन सत्यं कार्यं कर्तव्यम् वा यथा कर्म तथा बुद्धिः अतः एवाहि बुद्धिः कर्मानुसारिणीति। अहमित्यहंकारोऽभिमानाश्चयति। स्थावर जंगमानां यथा तथ्यैव जाननीयम् ज्ञानं प्रोच्यते।

भाषार्थ

११ ज्ञान क्या है—ज्ञान के चार अंश है-चित्त मन-बुद्धि और अहंकार। जिस्से चेत कीया जाय जाना जाय आत्मा से उसे चित्त कहते है। हृदय इसका दुसरा नाम है। मन तो आत्मा का संकल्प विकल्प संदेह सरूप है। आत्मा का निश्चय बुद्धि है वा ज्ञान से सत्य कार्य करना चाहिये वा जैसा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काम तेसी बुद्धि। इस लिये बुद्धि कर्मों के अनुसार बहने वाली है। अहम (मैं) ये अहंकार अभिमान आश्रय है।

१२-परंज्ञानम् वा सारज्ञानम्.

मनसो मोहस्य वाह्येन्द्रियाणां च ज्ञान सर्वेषु स्थावर जंगमेषु विद्यते परं मनुष्येषु जितेन्द्रियत्वम् क्षमा दया सज्जनैः सहः प्रीतिः निर्लोभ दानं भय-शोकहारः मैत्री करुणांच सर्व भूतेसु धैर्यम् सुमतिः श्रद्धा सत्यं सारं ज्ञात्वा ऽद्वेष शुद्ध भावना धारणा चाधिकाः।

भावार्थ

१२ परंज्ञान वा सारज्ञान—मन मोह और बाहिर इन्द्रियों का ज्ञान समस्त चराचरों में पाया जाता है परन्त मनुष्यों में जितेइन्द्रियपन्न-क्षम दया-सज्जनों के साथ प्रीति-निर्लोभ दान-भयशोक को छोडना मित्रता-करुणा समस्त प्राणियों से

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और धीरज सुमतिः (अच्छी बुद्धि) श्रद्धा और सत्य और सार को जानता हुवा वा जान करके द्वेष न रखना·शुद्ध भावना और शुद्ध धारणा अधिक है।

१३–राजविद्या.

विद्यानां राजा सैव विद्या सर्वोपरी प्रोच्यते।

१३ राजविद्या–विद्यावों की राजा वही विद्या सर्वोपरी (सब के ऊपर) कही गई है।

१४–प्रबन्धः

जगत्सु सुख शान्तिः स्थिति रुपायं प्रयत्नं प्रबन्धः प्रोच्यते।

भाषार्थ

१४ प्रबन्धः–सृष्टि में सुख शान्ति और स्थिरता के उपाय वा यत्न प्रबन्ध (इंतजाम) कहे जाते है।

For Private And Personal Use Only

॥ प्रथमाशिक्षा ॥

राजविद्या शब्दवाक्यानामर्थवद्भाष्यं
प्रकाशयते संज्ञा संकेत संक्षेप तथैवच॥

राजविद्या-विद्यानां राजा वा राज्ञां विद्या सर्वोपरी प्रथमोपदेश शिक्षयति राज्यशासन शक्तिम्। तया प्रजानां सन्मार्गे प्रवर्त्तनम्। सत्वं रजस्तमश्चैव साम्यावस्था वा शुद्धिः तया शुद्धाच्चेश्वर भावैः शुद्धाधारणामवलंबनम्। तया शक्तिःसुमतिर्विशुद्धज्ञानं संप्राप्यते। तेन रक्षान्यायः ताभ्यां सृष्टेः सुखशांतिः स्थितिश्च प्रबन्धानां स्थैर्यम्। स्वस्थ संपतिः सौभाग्यामायुश्च संवर्धनम्। तत्त्वज्ञानार्थं दर्शनम् तत्प्रभावेन स्वतन्त्राजाफलम्। यथेष्ट प्राप्ती। शरीर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षरोभाव जीवश्चाक्षरः ब्रह्माक्षरमधिय
ज्ञाहम् परमस्वभाव वा प्रकृति नियमाः
तया भूतानामुत्पन्नं वृद्धि कार्या कर्मः
क्षमा वीरत्वमध्यात्म ज्ञानम् । ज्ञान
योग व्यवस्थितिः । एतांद्विद्याभ्यास
ममाधिकांश प्राप्ता । राज्यं सुस्थिरम-
चलं ध्रुवम् । क्षत्रियाणां मान प्रतिष्ठा
स्थितिश्चाधारः इयं विद्योपदेशः तेन
शक्तिः सुमतिः श्रद्धा भक्तिश्च पुरुषार्थेन
प्रथिवी पतेश्च बोभूयते महद्योन्यां प्र-
जायते । स्वार्थं सुख भोगैश्वर्यं मोह
संभावैश्चाधिकारः। एतेषामधिक्या तया
दुर्बुद्धिः दुर्बुद्ध्या दुष्कृतम् दुष्कृतेन
दुःखमधो जायते । सुकृते सुपात्रे दाने
महोत्साहः। द्यूतकृया दूरत्परि वर्जनम्।
स्वतन्त्रतया राजा प्रजा संमिलनं पर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्परम् । लोक संग्रहं राज्यम् । ज्ञानं संग्रहं ब्रह्मः । धनं संग्रहं वाणिज्यम् । परिचर्यात्मक सेवा ॥

भाषार्थ

भाषार्थ—प्रथमशिक्षा-राजाविद्या के शब्द वाक्यों का अर्थ प्रकाश कीया जाता है और संज्ञा संकेत और संक्षेप (मुख्तसर) राजविद्या-विद्यावों की राजा वा राजवों की विद्या सर्वोपरी प्रथम उपदेश राज्य शासन की शक्ति सिखाता है जिस्से प्रजावों को सत्य मारग पर चलना। सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण की साम्य अवस्था वा शुद्धि तिस करके शुद्ध उच्च और मालकी भावों से शुद्ध धारणा को अवलंब करना जिस करके बल बुद्धि का विशुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होती है जिस्से रक्षा न्याय और इन दोनु से जगत् का सुख शान्ति स्थितिः और प्रबन्धों की स्थिरता है और निरोग संपति सौभाग्य और आयुस

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(उमर) का बढ़ना है। ज्ञान के सार को देखना जिसके प्रभाव से स्वतन्त्र आज्ञा (हुकम) चलना। जो चाहे सो मिले। शरीर नाशवान है और जीव कभी नाश नहीं होता। ब्रह्म अक्षर (अनाशवान) है और अधियज्ञ मैं स्वयं हूं। परम स्वभाव वा प्रकृति (कुदरती) नियम तथा प्राणियों की उत्पति और वृद्धि का कार्य कर्म है। क्षम वीरत्वम और अपनी आत्मा का ज्ञान है। और ज्ञान योग मे जिसकी स्थिति है। इस विद्या के अभ्यास से मेरे अधिक अंश की प्राप्ती होती है और वह राज्य सुस्थिर अचल और ध्रुव है और क्षत्रियों का मान प्रतिष्ठा स्थिति और आधार है। इस विद्या के उपदेश बल, बुद्धि, श्रद्धा, भक्ति, इष्ट और पुरुषार्थ मे पृथिवी पति होता रहता है और उच्च जन्म पाता है सभाव से स्वार्थ सुख भोगेश्वर्य मोह अधिकार है इनका अधिक्ता से दुर्बुधि। दुर्बुधि से दुष्कृत और दुष्कृत से दुःख और नीच गती पाता है सुकृत काम मे और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुपात्र को दान देने मे बड़ा भारी उत्साह रखे। जूवका कार्य शक्त वर्जित है। स्वतन्त्रता के साथ (आजादी से) राजा प्रजा आपस में मिलते रहे। लोक संग्रह करना राज्य है ज्ञान संग्रह करना ब्रह्म है धन संग्रह करना वाणिज्य है और परिचर्यात्म सेवा है ॥

राजा-प्रकृतिः रञ्जनादिति राजा-राजा एतज्जगतां वृद्धिहेतुः प्राज्ञापाण्डि-ता बुधा जगदनुभावुका स्वजातेः निज स्वामिनः शुभचिन्तका वृधाभिःसंगतः। संततं राजा प्रजानां वृद्धिरुपायं संसाधयेत्। राजा सर्वभूतोपकारार्थम्। सर्वभूत हितरतः। सर्वे धर्मकार्येषु सहायता दुष्कृतेषुदण्डः। राज्ञां विचार शक्ति संप्रसारण प्रयोजनं शुद्धोच्चेश्वर भावैः धर्मेण यथा योग युक्तेन जगद्धि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तार्थं रक्षान्यायः ताभ्यांसृष्टेः सुखशा-
न्तिः स्थितिश्च प्रबन्धानां स्थैर्यम्।
स्वस्थ संपति सौभाग्यमायुश्च संवर्धनं।
सर्वे प्रबन्ध पश्येत्। तत्त्व ज्ञानार्थं
दर्शनम्। सर्वोपरी राजाविद्योपदेश
परिपूर्णम्। वीर सुभट्टानां मस्तकः राजा।
प्रजार्थाय राजातिष्टेताचिरम्।
प्रात् समये? शरीरात्मशुद्धिः–शरीर
शुद्ध्यर्थं स्नानम् तथैवात्म शुद्ध्यर्थम्
सर्वं शक्तिपतीश्वर माराधनमुपाशनम्
सदाचारश्च योगः। तत्पश्चात्स्वधर्म
रक्षान्यायं पश्येत्–प्रथम क्षत्रियाणां
वीर सुभटानां प्रतिदिनास्त्रशस्त्राणा
मभ्यासं पश्येत् पश्चान्यायम्—राज्य
कर्मचारीणां योग्यतां कार्याणि पश्येत।
स्वतंत्रतया प्रजा सामिलम्। गुप्तवेष गुढ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरुषैः चारेणोऽत्साहेन गुप्तवर्त्तान्तं परिज्ञानम् । आय व्यय समाक्षणम् । प्रमावश्य प्रथमोपायः । भोजनम् । राज विद्योपदेश वा प्रचीन वीरयश वार्ता श्रुत्वा धर्ममवलबनम् वा वीर सुभटानां यशो वा धनिनां ज्ञानिनां कीर्तीतिहासं शृणुयात । स्वेष्ट दृढास्तिक् भावः शरीरे-न्द्रिय संयमः । सदाचारः । स्वदेश मातृभाषाया प्रीतिः स्वदेश शुद्ध वालिष्ट भोजनम् । स्ववीर वेषमूतेन प्रभावः । स्वजाते मर्यादया विवाहमैक्यं भावः । धर्मयुक्त पुरुषार्थ । प्रकृति रचनां कार्यं पश्येत् । सर्व साधारण परिज्ञानार्थं राज्ञां वेष वाहनंचा साधारणम् विशेष चिन्हमवश्यमेव परंतु गुप्तवर्तान्ते प्राप्त नवश्याः । प्राय वाऽधिकतरांशेन मनुष्यैः

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मानुषी सुख शान्तिः स्थितिश्च प्रब-न्धानां स्थैर्यम्। संपातिः सौभाग्यमैश्वर्यं धनानि सुखानि राज्यमेवच। सहः प्रीत्यया लोक संग्रहं राज्यं सुस्थिर मचलंध्रुवम्। पुरुषायोग्यनास्थि यदि योजकाधिकृतर योग्यः। दूरान्निकट निवाशी स्वदेशी सामिप्यस्थाय्याधिकृ तरुपयोगी यदि धर्मेण प्रवर्तनं परस्परम्। धर्मेण लोक संग्रहम्—जनसमूहं स्वकर-णम्। धर्मेण मिथः परस्पर हितार्थं तपः पुरुषार्थं परिश्रमं कुर्वन्ति तेषां प्रत्यैक फलं सुखानि धनमेवच सर्वं शुद्धान्विश्वर भावेन मिथो परस्परं संविभक्तम् वा प्रति फलानि प्रत्योपकार प्रदानं परस्प-रम् न कश्चित्परिश्रमस्य प्रतिफलं प्र-त्योपकारं हंतव्या। यथा कर्म तथा फलं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्यायः सेवोच्च दृष्ट्या परिपालनं सर्वं धर्मः । एतेषुहानिः तया विविधा विद्या देशोन्नति मिथो परस्पराणां हित प्रीतिः बलबुद्धिः पराक्रम राज्यं सर्वं शनैःशनैः विनश्यन्ते प्रणामे राज्यमपरहस्तेऽपर कुले प्रजायन्ते अतः सततं धर्मे न्याये रक्षणेपारमार्थिके परोपकारे पत्योपकारे प्रतिफलं परदाने लोक संग्रहे प्रवर्ति । धर्मेण सहाय साधनोपायः । स्वपोषेऽ समर्थानामन्ध पंग्वनाथ बालका विधवा स्त्रीय स्वपोषेऽसमर्थानां पोषणम् । विविध विद्यानां प्रचारः । धर्मोपदेश प्रबन्धः । पुण्य धर्मेश्वराराधनमुपाशनम् । न्याय मर्यादां प्रबन्धं पश्येज्जगति सन्मार्गे प्रवर्त्यर्थम् । तथैवापर भूमृद्भिः नृपैः सहःकार्यां प्रीति धर्मेण प्रवर्तनं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परस्परम् । शिल्पौषधालय चिकित्सालय शरीरव्यच्छेदालयानाथालय वायूः जलशुद्धिः प्रजाहितार्थं प्रबन्धः । तपः पुरुषार्थं परिश्रम सेवा सहायता धर्म रक्षान्याय दानं पुण्य पूजा जप भक्ति मान मोह प्रीतिरैक्यता ऐतिहासिकरूपदादि यशोत्साह श्रुणुयात् । प्रियदर्शनम्। सुगन्धादि भोजनं शरीर पोषणार्थं माछादनम्-रक्षार्थम् । सर्वे जगदुपयोगी वस्तवः सामग्रयः निर्माणम् निर्मापणम्। जगदुपयोगी कार्यालय स्थापनम् । नवोपयोगी कोषागारश्चोपार्जनम् तेषां सर्वेषां प्रतिफलं प्रत्योपकारोदारचित्तेन प्रदानम् । प्रजासु कार्योत्साह यथायोग युक्तेन रञ्जनं परस्परम् ।

सर्वे बलबुद्धिः गुणा भिन्नभिन्न मिश्रत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावेन जगज्जनाषु विभज्यतः बलबुद्धिभ्यां रक्षान्यायः ताभ्यां राज्यम्। राज्य चिकीर्षकः राजा स्वतन्त्र तथा प्रजा संमिलेत्। रक्षान्याये शासन कार्ये भूमिराय प्राते सर्वं प्रबन्ध कार्येषु वीर सुभटान्क्षत्रियान् नियोक्तव्या। राज्ञा सतुष्ट प्रजा राज्ञां सर्वं धनं बल सर्वम्। प्रजैव राज्ञां परमामित्रा तथैव राजा यदि दया धर्मेण न्याय परोपकारैश्च प्रवर्त्तनं परस्परम्। शुद्ध भावेनाधिकुपकार सन्मुखे न्यूनापकारं न पश्यते।

स्वामित्रस्यापिचे परी राज्य कर्मचारयः मित्रभावेनापि तेषामधिकारेन भवितुमर्हति नापिस्त्र राज्यस्य बलबुद्धयोर्भेदं प्रकाशयेत्। यदि तेशत्रूः भवन्ति महां हानिकर्तुं शक्नुवन्ति। प्रत्यैके वा सर्वेषु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाति प्रवर्तते । प्रतिकार्यं सीमानोलंघयेत् । जन्तूपजन्तुः प्रजाजनैसूपकारैः तेषामाशीषा तैश्चाधिकाधिक जनसंख्या वा समूहानामधिपतिः सोऽधिपतिः । सततमाशीषाहायं परोपकारं सुकृतं दुष्कृतमुपरी राजा प्रभूः पश्यति। राजाविद्या राजगुह्यं महतत्त्वं सर्वोपरी परमोपदेशं ज्ञात्वा धर्मेण रक्षा न्यायेन प्रजापालनम् स राजाऽखण्ड निस्कण्टकं सुख साहितं चिरकाल पर्यन्तं शाश्वतीः समाः राज्यं करोति ॥

स्वार्थं सुख भोगेश्वर्य साम्यावस्थाऽहिंमावराशीषः धर्म पुरुषार्थं सदाचरणैश्च सुखस्य साम्यावस्था (संवार्ति) सैव सुखमव्ययम् । स्वार्थस्य शान्तिः । भोगस्य स्थितिः परंपरा । ऐश्वर्यस्य प्र-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्धानां स्थैर्यम् । अहिंसायाऽऽयूश्च संवर्धनम् । वराशीष या शुद्धः संतति-रुत्पत्ति वावतरणम् । धर्मेण धनानि सुखमेवच । पुरुषार्थेन मान प्रतिष्ठा स्थितिश्चाधारः सदाचरणेन स्वस्थः स्थितं स्थिराम् ॥ मनोऽन्न धन सत्कारः तैश्च स्वदेश वीर सुभटांच वृद्धां साद्धि-द्यायुक्तां स्वकरणम् तथा दीन प्रजा पालनम् तथा दुष्टानदण्डः राज्य सु-स्थिरमचलं ध्रुवम् ॥

भावार्थ

प्रजा को राजी रखे वह राजा है। राजा इस जगत की वृद्धि का कारण है अच्छी तरह समजने वाला पण्डित बुद्धिमान जगत के अनु-भवी (तजुरबेकार) अपनी जाती का अपने मालिक का सुभचिन्तक और वृद्धों की संगति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करके, हमेश राजा प्रजावों की वृद्धि के उपाय करता रहे । राजा सब प्राणियों के उपकार के वास्ते है । सब प्राणियों के हित मे प्रीति रखे । सब धर्म कार्यों मे सहायता देता रहे और दुष्कृतों को दण्ड देवे । राजावों का विचार बल बढने से प्रयोजन शुद्ध भाव उच्च भाव और मालकी भावों करके धर्म से यथायोग युक्ति से जगत हित के वास्ते रक्षान्याय करे और रक्षा न्याय से मतलब प्रजावों मे सुख शान्ति स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता है और निरोग संपति सौभाग्य और आयुस का बढना है सब प्रबन्धों को देखना चाहिये । ज्ञान के सार को देखना । सर्वोपरि राजविद्या के उपदेश में परिपूर्ण हो । वीर सुभटों का मस्तक राजा है। प्रजा का प्यारा राजा बौत काल तक राज्य करते हैं ।

प्रात समय शरीर आत्मा की शुद्धि करे—शरीर शुद्धि के अर्थ स्नान है इसी तरह आत्म शुद्धि के वास्ते सर्व शक्तिमान ईश्वर की आराधना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपासना—सदाचार और योग है इसके बाद अपने धर्म रक्षान्याय को संभाले । प्रथम क्षत्रियाणां वीर सुभटों के प्रति दिन शस्त्र अस्त्रों के अभ्यास को देखे । फेर न्याय को । राज्य कर्मचारियों की योग्यता और उनके कामों को देखता रहै । स्वतन्त्रता के साथ प्रजावों से मिलता रहै । चार गुप्त गूढ वेष पुरुषों के उत्साह से सब गुप्त वर्त्तान्त को जान्ता रहै । जमा खरच देखता रहै । परम अवश्य का उपाय पहले करना चाहिये । भोजन । राजविद्योपदेश वा प्राचीन वीर वर्त्तान्त वार्ता सुनकर धर्म को पकड़ना वा वीर सुभटों के यश को वा धनवान् और ज्ञानियों की कीर्ति इतिहासों का सुनना चाहिये । अपने इष्ट मे दृढ (मजबूत) आस्तिक भाव हो । शरीर इन्द्रियां अपने वश मे हो । सदाचार हो । अपनी मातृ भाषा मे प्रीति हो । अपना ही शुद्ध बलीष्ट भोजन । अपना ही वीर वेषः तिस करके प्रभाव है । अपनी ही जाति मे मर्याद से विवाह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हो और एक भाव हो। पुरुषार्थ धर्म युक्त हो। प्रकृति रचना और कार्यों को देखे। सर्व साधारण की जान पहचान के वास्ते राजा का वेष और वाहन साधारण न हो कोइ विशेष चिन्ह अवश्य हो परंत गुप्त वर्त्तान्त की प्राप्ती के समय अवश्य नहीं है। जादे वा अधिक अंश से मनुष्यों से ही मनुष्यो की सुख शान्ति स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता है और संपति सौभाग्य ऐश्वर्य धन और राज्य है। प्रीति के साथ लोक संग्रह वा प्रीति के साथ प्रजाजनों को अपना करना वह राज्य स्थिर अचल और ध्रुव है। कोइ भी पुरुष अयोग्य नहीं है जो योजक अधिकतर योग्य है। दूरवाले से पास रहनेवाले वा स्वदेशी पास रहनेवाले अधिकतर उपयोगी (कामके) होते है यदि धर्म से आपस का वर्त्ताव हो। धर्म से लोक संग्रह करना वा लोकों को अपना करना। आपस के हित के लिये धर्म से तप पुरुषार्थ परिश्रम करते हैं तिन प्रत्येक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के परिश्रमादि के फल सुख और धन हैं। सब शुद्र उच्च और मालकी भाव से आपस में बांट देना चाहिये वा प्रति फल प्रत्योपकार आपस मे देना चाहिये न किसी के परिश्रम का वा प्रत्योपकार का फल मारना चाहिये। जैसा कर्म वैसा फल न्याय है वही उस दृष्टी पालना करना धर्म है इनों से हानि होने से सब तरह की विद्यायें देश उन्नति आपस की हित प्रीति बल बुद्धि पराक्रम और राज्य सब शनैः शनैः नाश होजाते है परिणाम में राज्य दूसरों के हात में दूसरे कुलों मे चला जाता है इस वास्ते हमेसा धर्म में न्याय में रक्षा में पारमार्थिक में परोपकार में प्रत्योपकार में प्रतिफल देने में लोक संग्रह मे प्रवर्त्ति हो। धर्म के साथ पैदास करने का उपाय करना! अपने पोषण करने में असमर्थों का आदि पांगले अनाथ बालक विधवा स्त्री अपना पोषण न करसके उन सब का पोषण करना। सब तरह की विद्याओं का प्रचार करना। धर्म के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपदेश का प्रबन्ध करना। पुण्य धर्म और ईश्वर की आराधना उपासना करना। न्याय मर्यादों के प्रबन्ध को देखना जगत को शुद्ध मार्ग पर चलाने के लिये। इसी तरह दुसरे राजावों के साथ कार्य प्रीति और धर्म मे प्रवर्त हो।, शिल्प औषधालय चिकित्सालय शरीरव्यवच्छेदालय अनाथालय और वायु जल की शुद्धि प्रजाहित के लिये सब प्रबन्ध।

तप पुरुषार्थ परिश्रम सेवा सहायता धर्म रक्षा न्याय दान पुण्य पूजा जप भक्ति मान मोह प्रीति एकयत्ता इतिहासिक पदादि यशका उत्साह सुन ना चाहिये। देखने मे प्रीय हो। सुगन्ध आदि भोजन शरीर पोषण के लिये शरीर ढकने को (ओढने पहरने) रक्षा के वास्ते। सारी उपयोगी वस्तुवों सामग्रीयां बनाना बनवाना। जगत उपयोगी कार्यालय स्थापित करना। नव उपगी खजाना भरपूर रखना और इन सब का प्रतिफल प्रतिउपकार उदार चित्त से करना चाहिये प्रजा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वों में कार्योत्साह यथा योग युक्तियों से आपस में सब का राजी रहना है। सब बल बुद्धि और गुण पृथक पृथक मिश्रत भाव से संसार के स्त्री पुरुषों में बटा हुवा है। बल बुद्धि से रक्षा और न्याय करना और रक्षा न्याय से राज्य है। राज्य करने की इच्छा वाला प्रजा से स्वतन्त्रता से मिलता रहै। रक्षा न्याय में हुकम के याने राज्य करने के कामों में पृथिवी की पैदास प्राप्त करने में और सब प्रबन्ध कार्यों में वीर सुभट क्षत्रियों को नियत करना चाहिये। राजा से संतुष्ट प्रजा राजाओं का सब धन बल और सब कुछ है। प्रजा ही राजाओं का परम मित्र है और इसी तरह राजा भी यदि दे। धर्म न्याय और परोपकारों से आपस का वर्ताव रहे। शुद्ध भावना से अधिक उपकार के सामने थोड़े अपकार को न देखना चाहिये। अपने मित्र से भी और उपरी राज्य के कर्म चारियों के मित्र भाव से भी उनके अधिकार में न होना चाहिये और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपने [illegible] के [illegible] बुद्धियों के भेद को प्रकाश न [illegible] चाहिये जो के शत्रू होजाय तो महा हानि कर शक्के है । प्रत्येक मे वा सबों मे अति प्रवर्त्त न होना चाहिये । हरेक काम की सीमा न उलंघना चाहिये । जन्तु उपजन्तु प्रजाजनों मे उपकार से उनकी आशीषें तिन करके अधिकाधिक जन संख्या वा समूहों का अधिपति वही उच्च अधिपति है । हमेसां आशीष द्वारा परोपकार सुकृत दुष्कृतों को उपरी राजा प्रभू देखता है । राजविद्या राज गुह्य का महतत्त्व सर्वोपरी उपदेश को जान्ता हुवा धर्म से रक्षा न्याय से प्रजा पालन करना वह राजा अखण्ड निष्कण्टक सुख सहित बहोत बरसों तक राज्य करता है ।

स्वार्थ सुख भोगैश्वर्य की साम्य अवस्था अहिंसा आशीष धर्म पुरुषार्थ और सदाचरणों से सुख को साम्य अवस्था वही सुख हमेसका है स्वार्थ की साम्य अवस्था शान्ति है भोगों की साम्य अवस्था स्थिति परंपरा है और ऐश्वर्य की साम्य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवस्था प्रबन्धों की स्थिति है। अहिंसा से आयुस बढ़ती है वर आशीषों से शुद्ध संतति का उत्पन्न (जन्म) होना है धर्म से धन और सुख है पुरुषार्थ से मान प्रतिष्ठा स्थिति और आधार है और सदाचार से स्वस्थः स्थितं स्थिरास् (अच्छी रहन सहन ठहराउ अटल) धन अन्न धन और सत्कारों से अपने देशी वीर सुभटों को तथा बुद्धिमान सद्विद्या युक्तों को अपना करना तथा दीन प्रजाकी पालना करना परिश्रम पुरुषार्थ युक्त करना और दुष्टों को दण्ड देना सो राज्य सुस्थिर है अचल है और ध्रुव है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

* दश प्रकार के राज्य *

बल बुद्धिभ्यां प्रजानां सन्मार्गे प्रवर्त्यर्थं दश प्रकार राज्य शासनम्।

१ समस्त प्रजा सम्मत्यानुसार मर्यादाः तदनुसार शासनम्। व्यवस्था तन्त्र राज्यं प्रोच्यते ॥

२ प्रजाभ्यः सभ्यजनाः वृद्धा जगदनुभावुकाः स्वार्थनिस्पृहः दूरदर्शी धर्मे न्याये सत्याताः जगद्धितार्थं पारमार्थिका वृद्धाऽधीत् व्यवहारज्ञा एतेषां सर्वेषां समत्यानुसार प्रजानां स्वाहित सुखशान्ति स्थितिश्च संपत्ति वृद्धिरायुश्च वृद्ध्यर्थं राजा राज्यं शास्ति। धर्म राज्य प्रोच्यते

३ केवल मर्यादानुसार राजा राज्यं शास्ति। मर्यादा राज्यं प्रोच्यते।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४ धनाढ्य जनानां भूम्याधिपतिनां च शासनम् । कतिपय जनतंत्र राज्यं प्रोच्यते ॥

५ मुख्य मुख्य सभ्य योग्य सेनापतिभ्यः शासनम् । सेना तंत्र राज्य प्रोच्यते ॥

६ राज्ञः प्रजानां सभ्यजनाः जगदनुभावुकाः स्वार्थ निस्पृहः दूरदृश्युत्साहेन धर्मे न्याये तत्परा सत्यरता जनैः शासनम् । राजा प्रजैकमत्यया शासनम् प्रोच्यते ॥

७ केवल राज्ञः बुद्ध्यानुसार शासनम् राज तंत्र राज्यं प्रोच्यते ॥

८ राज्ञः भृत्यया कृपा पात्रः जनैः शासनम् । अनियंत्रित राज्यं प्रोच्यते ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९ विद्वज्जनैः प्रजाशासनम् । श्रेष्ठजन तंत्र राज्यं प्रोच्यते ॥

१० दीन धनाढ्य वर्गैः सेनापति रुच्च कुलवैंगः सर्वेषां जातिनां पञ्चानां वैंगः तेषां सर्वेषां समस्तानां सम्मत्यानुसार शासनम् । प्रजा तंत्र राज्यं प्रोच्यते ॥

बल बुद्धि से प्रजावों को सत्य मार्ग में चेलाने के लिये दश प्रकार से राज्य शासन हैं

१ समस्त प्रजाकी सम्मति के अनुसार मर्यादा जिन के मुजिब राज्य-व्यवस्था तंत्र राज्य कहाजाता है

२ प्रजामेसे सभ्य जन बुढे जगत के अनुभवी स्वार्थी नहीं दूरदर्शी धर्म न्याय और सत्य में जिन की प्रीति हो जगत हित के लिये पारमार्थिहो बुद्धिमान जगत के व्यवहार को जानने वाले हो इन सबकी सम्मति के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुसार प्रजावों मे स्वस्ति सुख शान्ति स्थिति संपत्ति वृद्धि और दीर्घायुसकी वृद्धि के वस्ते राजा राज्य करे वह धर्म राज्य कहाजाता है

३ सिर्फ मर्यादा के अनुसार राजा राज्य करता है वह मर्यादा राज्य कहा जाता है

४ धनाढय और भूम्याधिपतियों से राज्य कतिपय जन तंत्र राज्य कहाजाता है

५ मुख्य मुख्य सभ्य योग्य सेना पतियों से राज्य सेना तंत्र राज्य कहाजाता है

६ राजा स्वयं और प्रजावों मे से सभ्य जन जगत के अनुभवी निस्स्वार्थी दूर दर्शी उत्साह से धर्म न्याय मे तत्पर और सत्य से प्रीति वालों से राज्य राजा प्रजा एक मत्या राज्य कहाजाता है

७ सिर्फ राजा की बुद्धि अनुसार राज्य राज तंत्र राज्य कहाजाता है

८ राजा के भृत्य कृपा पात्र जनों से राज्य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनियंत्रित राज्य कहा जाता है

९ विद्वानो से राज्य श्रेष्ठ जन तंत्र राज्य कहा ता है

१० गरीब धनाढ्य वर्ग सेना पति उच्चकुल वर्ग सब जातियों के पंचों का वर्ग इन सब की समस्तों की सम्मातियों के अनुसार राज्य प्रजा तंत्र राज्य कहाता है॥

सत्वं रजस्तमश्चैव त्रिभिर्गुणैः त्रिगुणात्मिक मायया शुद्धो चेश्वरभावा तैश्च तेजः शक्तिः पुरुषार्थः तैः सुखशान्ति. स्थितिश्च तेषां प्रबन्धः॥

सम्राट् रूपमण्डपः तस्य स्तंभा माण्डलिका महाराजा राजानः सामन्ता ग्रामाधिपतयः भूम्याधिपतयः एतेषां मैक्यता मण्डपस्थितिः॥ सम्राट् रूपवितान तस्य रज्जव कीला माण्डलिका महराजा सामन्ता राजानः ग्रामा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धिपतयः भूम्याधिपतयः एतेषामैक्यता स्थातुं शक्नोति ॥ भूम्याधिपति ग्रामाधिपतिः राजासामन्ता महाराजा माण्डलिका राजानः सम्राट् रूप शरीरस्य नशाजालमन्त्राणि सर्व नाडिका सर्वेषु शरीरेषु भोजनसार वा बलं प्रेशयन्ति शरीरस्य । स्थितिः ते विना विनश्यति बहूनि संख्यान्यास्थाभिः प्रयुज्यनमैक्यभावं शरीरस्यस्थितिः पृथग्पृथग्भूत्वा विनश्यतिः सर्वैक्यता विहीना मनुष्याणां गति ॥

भाषार्थ

सत् रज तम तीनु गुणोंसे त्रिगुणीमाया से शुद्ध उच्च ईश्वर वा मालकीमात्र है फेर इनसे तेज शक्तिः पुरुषार्थ है तिन से सुख शान्ति स्थिति और इन के प्रबन्ध हैं ॥

For Private And Personal Use Only

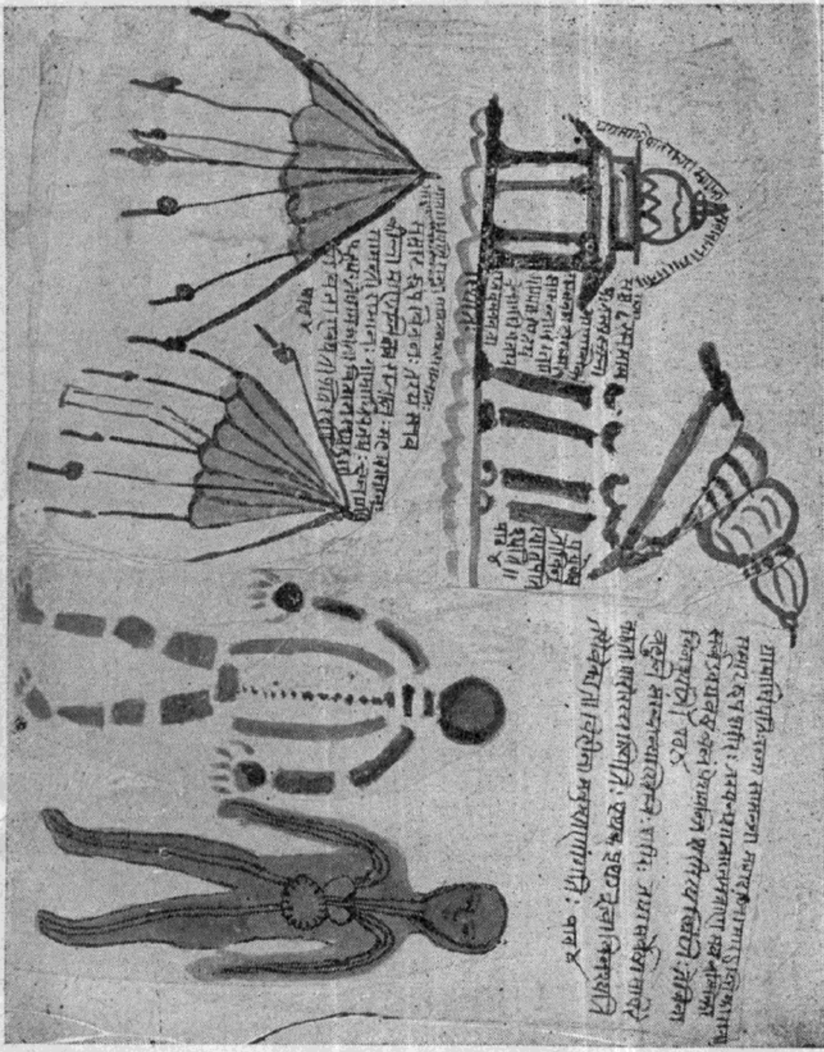

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साम्राजः रूप एक मण्डप है सो थम्भों के आसरे है वे थम्भे मण्डलिका राजा महाराजा सामन्ता राजा ग्रामाधिपति भूम्याधिपति हैं॥ साम्राज रूप एक तम्बु है सो डोरियां चोबांरे आसरे है वे सारी चोबां डोरियां भूम्याधिपति आदि है॥ साम्राज रूप शरीर है सो आंतरा नशांजाल नाड़ों रे आसरे है वे भोजन के रसको खेंचकर सारे शरीरमें बल पोंचावे है जिनसे शरीर की स्थिति है वे भूम्याधिपति आदि हैं उनके विना शरीर नाश होजाता है॥ वहुतसी झाडियों के एक भाव से शरीर जुडाहै वही शरीर की स्थिति है इन सब विना और इन की एक्यता बिना नाश हो जाता है॥ येही एक्यता विना की गति है॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूम्याधिपतियों के प्रकार

१ सम्भावेन न्यूनाधिकांश तथा पृथिवी पतित्वं भूम्याधिपति।

२ भूम्याधिपतीनांपति ग्रामाधिपति

३ पञ्चाशदनुमान ग्रामाधिपति माण्डलिका राजा।

४ शदनुमान ग्रामाधिपति राजा।

५ दश राज्ञामधिपति सामन्त।

६ सहस्रोपरांत द्व सहस्र पर्यन्त वा द्वा सामन्तानामाधिपति राव।

७ यदि राव प्रजानां बान्धव सम्बन्धय प्रीतिः संपादको रावळ प्रोच्यत।

८ द्वे सहस्रोपरांत त्रीणि सहस्र पर्यन्त ग्रामाधिपति महाराव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९ यदि महाराव प्रजानां बान्धव सम्बन्धय प्रीति संपादको महाराबल प्रोच्यते ।

१० दशसामन्तानामधिपतिमहाराजा

११ दश महाराज्ञामाधिपति वा लक्ष ग्रामाधिपति महाराजाधिराज प्रोच्यते ।

१२ दश महाराजाधिराज तेषामधिपति वा दश लक्ष ग्रामाधिपति राजेश्वरमहाराजाधिराज विख्यातं

१३ दश राजेश्वर महाराजाधिराज वा कोटि ग्रामाधिपति साम्राज प्रोच्यते ।

१४ दश साम्राज्ञामाधिपति चक्रवर्ति राजा समस्ते क्षिति मण्डले ।

एतेषां चतुर्दशाणां ध्वजा श्वेतानि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

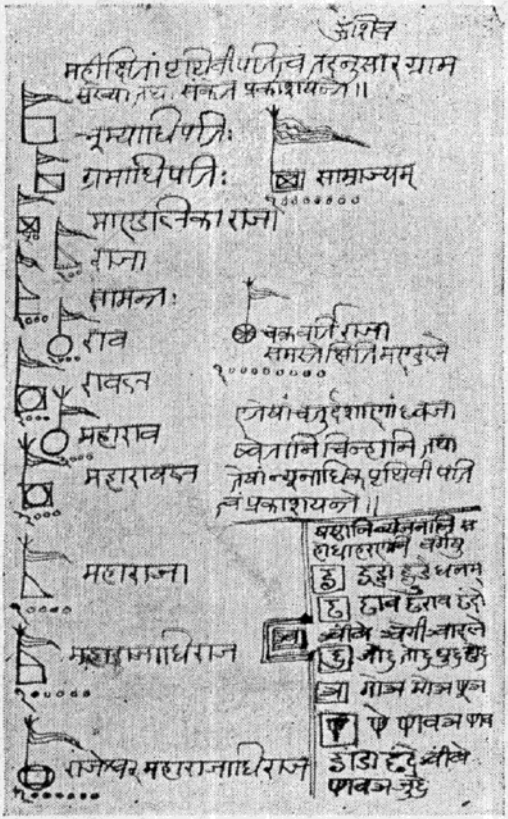

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिन्हानि। न्यूनाधिकांश पृथिवी पतित्वं प्रकाशयन्ते ग्राम संख्या तथैवच॥

भाषार्थ

१ सम्भाव से थोड़ी घणी पृथिवी की मालकी भूम्याधिपति है।

२ भूम्याधिपतियों का पति ग्रामाधिपत्ति है।

३ पचास अनुमान ग्रामाधिपति माण्डलि का राजा है।

४ सो अनुमान ग्रामाधिपति राजा है।

५ दश राजावों का अधिपति सामन्त है।

६ सहस्र से उपरान्त दो सहस्र पर्यन्त वा दो सामन्तों का अधिपति राव है।

७ यदि राव प्रजावों का बान्धव सम्बन्धियोंका प्रीति सम्पादक होतो रावल कहलाता है।

८ दो सहस्र से उपरान्त तीन सहस्र पर्यन्त ग्रामाधिपति महाराव होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९ यदि महाराव प्रजावोंका बान्धव संबन्धियोंका प्रीति सम्पादक होतो महारावल कहलाताहै।

१० दश सामन्तों का अधिपति वा दश सहस्र ग्रामों का अधिपति महाराजा होता है।

११ दश महाराजावों का अधिपति वा लक्ष ग्रामों का अधिपति महाराजाधिराज कहा जाताहै.

१२ दश महाराजाधिराज जिसके मातेत वा दश लक्ष ग्रामाधिपति राजेश्वर महाराजाधिराजहै

१३ दश राजेश्वर महाराजाधिराज जिसकी आज्ञा में है वा कोटि ग्रामाधिपति साम्राज कहाता है।

१४ दश साम्राज जिसकी आज्ञामें है वह चक्रवर्ति राजा सब पृथिवि मण्डल का है इनकी ध्वजावों में इनके निशान प्रकाश है ओर फेर ग्रामों की संख्या भी।

संग्राम के समय संथल पर्वत नदी वा विषम (विकट) स्थानों में युक्ति जानना अवश्य है। रक्षित स्थानों को रोकना याने अपने अधि·

For Private And Personal Use Only

ऊतीव

संग्रामे संयत्ने पर्वत्र नदी [illegible] स्थाने यंत्री परिज्ञानमवश्यमेव [illegible]
[illegible] : शत्रूणां पक्ष विपक्ष [illegible] बलाबलं देशकाल [illegible]
[illegible] प्रयोजनम्। तत्प्रज्ञानेन जगद्गुरो धार्मिकाः सहस्र [illegible]
[illegible] जगद्धाय दुराशी [illegible] विधर्मी दुराचारी [illegible]
[illegible] शत्रु [illegible]
[illegible] सर्वे धार्मिका [illegible]
[illegible] शत्रुः सर्वे दिग्गिरक्रमणं कुर्युः [illegible] यदि [illegible]
[illegible] विजयं प्राप्यन्ते सर्वे युद्धे [illegible]
[illegible] धार्मिकाः अपि शत्रु [illegible] स्वतंत्र स्थाने [illegible] शत्रु
[illegible] शत्रु [illegible] स्थानेन [illegible]
[illegible] युद्धं च करोति विजयं [illegible]
[illegible] तेषां गृहे सर्वं [illegible] ॥

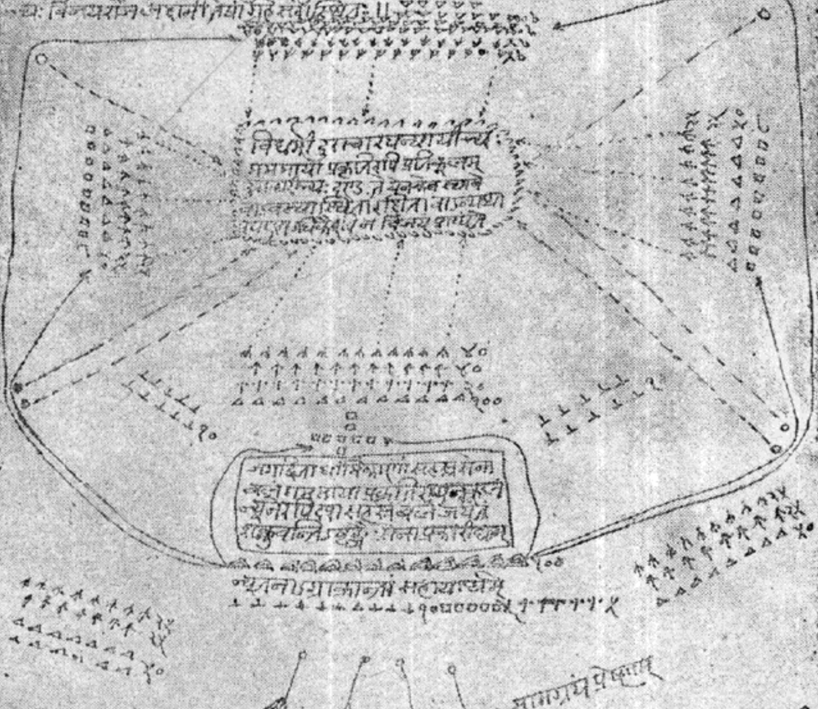

० [illegible] धनुष [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] धनुष बाण [illegible]
[illegible] धार्मिकाणां [illegible]

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

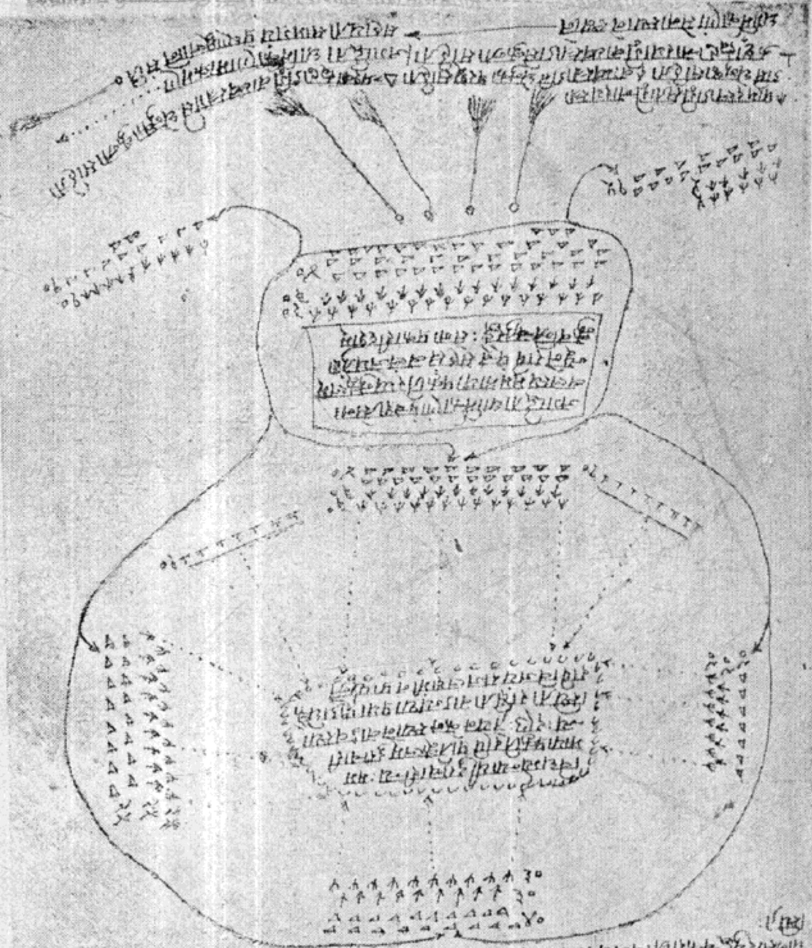

[illegible]

For Private And Personal Use Only

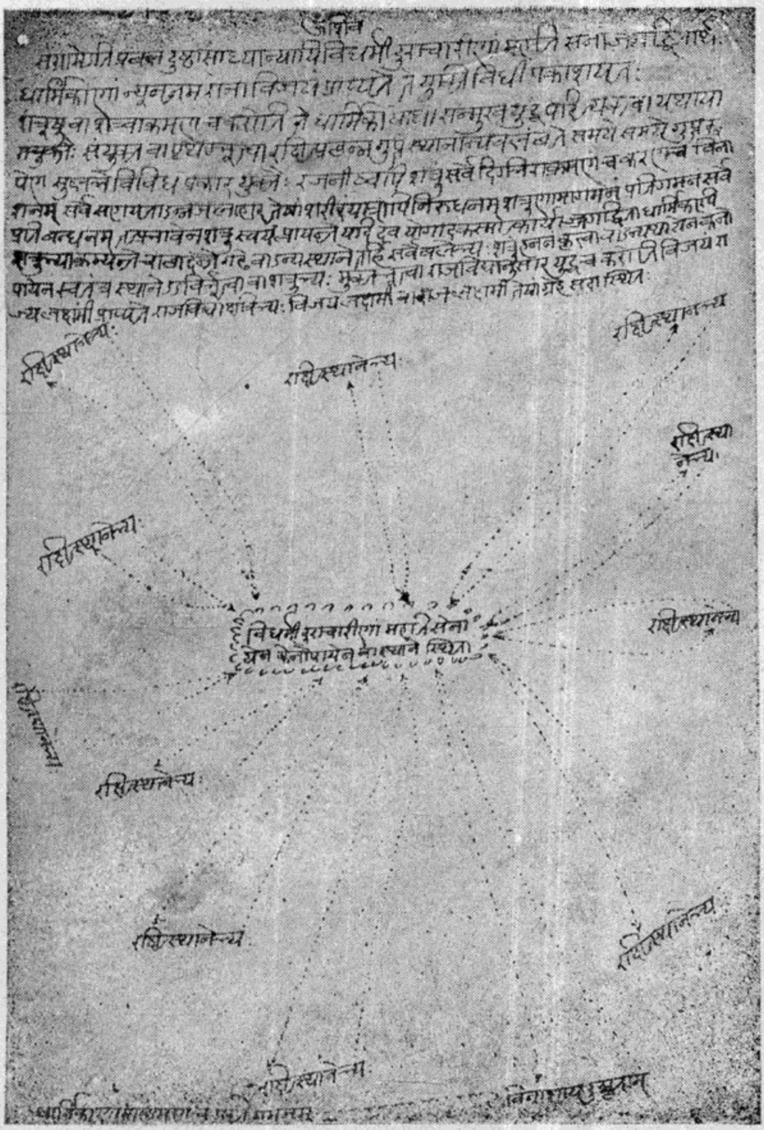

[illegible]

संग्रामे[illegible] प्रबल दुःसाध्यान्यपि विधर्मी दुराचारीणां महती सेना [illegible]

धार्मिकाणां न्यूनजन सेना विजयं प्राप्यते तद् युक्ति निधी प्रकाश्यते:

[illegible]

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार में करले। शत्रु का पक्ष विपक्ष बल अबल देशकाल को भी जानना अवश्य है चार लोगोंके उत्साह से। निचे कहे हुवे नकशे से युद्ध आरम्भ करे जिसके प्रभाव से जगद्धिता धार्मिका सहस्र सैनिका योधा दश हजार दुराचारोंको जीत सकते हैं। जगत की हाय दुराशियों से विधर्मी दुराचारों की मति भी नाश होजाती है और दुर्मति अन्याय से इस भाव सारतत्वको नहीं जान सकते। शत्रुवों की सर्वे सहायता अन्न जल अहार सामग्रय को रोक देना चाहिये। शत्रुवों पर सब दिशावों से याने चोतरफ से आक्रमण करें। सब धार्मिका योधा दिव्य अस्त्र शस्त्रों से अच्छी तरह सजे हुवे जगद्धितार्थ युद्धको करते है वो विजय पाते हैं। सब युद्धके भेद छीपे हुवे रखने चाहिये यदि दैव योग से अकस्मात कार्यों से जगद्धिता धार्मिका भी शत्रुवों से आक्रमण किये जाय और घिरजाय गढ वा अन्य स्थान में तो सब बलों से शत्रुवों को मारते हुवे वा किसी तरह के उपावसे स्वतन्त्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थान में आकरके शत्रुवों से छुटकर राजविद्यानुसार युद्ध करता है सो विजय राजलक्ष्मीको पाता है राजविद्या क्षत्रियों के लिय विजय राजलक्ष्मी उनके घरों में सदा स्थिर रहती है ॥

विधर्म दुराचरणैः सहः संग्रामे यथा संभव यथा शक्नोति शत्रुपक्षं भेदनं वा यथा युक्तेन संहतानां पृथ ग्पृथक्करणम् वा । भिनात्मसात्करणम् (लोभराजित्सुवर्णादि) शत्रु स्व पक्षान्क्रर व्यवहारेण वर्त्तयाति तं स्वकरणम् वा पृथग्करणम् वैरीवा ग्रस्तारम् तमभ्युत्थानम् तथैव स्वपक्षेषु सानुभूति परस्पर प्रीतिरैक्यता सहायता वीरशब्दैवाक्यैरुत्तेजित्करणमुत्साह संवृधनम् ॥

(भावार्थ)

विधर्मी दुराचरणों के सात संग्राम में जहां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तक होसके शत्रुपक्ष को भेदन करणा वा युक्तिमे एकहुए हुवोंको जुदे जुदे करदेना विखेरदेना वा सोने चांदी के लोभसे अपणेसाथ करके लड़ादेना वा शत्रु अपणे पक्षवालोंका क्रुर व्यवहार से वर्त्तता हो उनको अपणा करलेना वा जुदा करदेना विखेरदेना वा शत्रु जिनकेसात वैर ईर्षा रखताहो उनको अलग करना इसी तरह अपणे पक्षमें सानुभूति प्रगट करना परस्पर प्रीतिरेक्यता सहा· यता वीरशब्द वाक्यों से अपणे पक्षको उत्तेजित करना और उत्साह बढाना॥

द्वादश कोप भाषा परिवर्तनम्

देशान्तरानुसार प्राकृत् भाषासु स्वरा २५ तेषु मूल स्वरा तो ३ व्यञ्जनानि ३१ तेषुक यथा कर्म शुद्धार्यंत। ख· खण्डे खण्डे पूर्णम्। गाणज्ञानं प्राप्तव्यमवश्य मेव। व· वनघोर घटाऽस्थिरम्। ङ·कङ्क ण विवाहे रणे शोभितं। च· चारणात·

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साहेण सर्वे वृत्तान्तं परिज्ञानम् । छ-छायाप्रजोपरि । ज- जोषयेत्कर्माणि झ- झुप्यापि रक्षणम् । ञ- जञ्जालं निर्वाणं । ट-टीडिदलं पश्येत् । ठ-ठोर मवलम्बनम् । ड-डाणा । ढ ढंगशुद्धा यैत् । ण ठण्डक् । त तिमिर वा दुख नाशाय ज्ञानम् । थ थक्तिस्वपक्षंसहायं द दान सुपात्रे । ध धनेन दीनजनानां रक्षा । न नवानिधि । प प्रजा पालनम् फ फलं पश्येत् । ब बलं पश्येत् । भ-भोजनं स्वाधिकारे । म मान प्रतिष्ठा रक्षा न्यायेनसहः । य यशोधन । र रक्षा न्याय राज्यं । ल लोकसंग्रहं राज्यं । व विविध विधानां प्रचारः । स स्वार्थसुख साम्यावस्था । ष षड्धा न्यायः । श शान्तिः न्यायेन । ह हि-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रंन्यं विनश्यति लोभलिप्सया ॥ षष्ठा
नि वर्णानि वर्गेषु पश्यते ॥

यावदेवह्याधिक प्रजास्वाधिकसन्मार्गे
प्रवर्त्तु शक्नोति तावदेवह्याधि कुच्चाधिपतिः
न संशयः ॥

(भावार्थ)

जितनी अधिक प्रजाको अधिक सन्मार्ग में
चला सकता है उतना ही अधिक उच्च अधिपति
होता है ॥

रक्षितस्थान्प्राकृन्मनुषकृतश्चेति ॥

(भावार्थ)

रक्षितस्थान प्राकृत याने स्वाभाविक और
मनुष्यकृत होते है ॥

प्रारम्भ स्वेष्टप्रमणा सायोगमाया
प्रसन्नाक्षत्रियान् श्रद्धयान्वितान्ददाति
योगः माययास्थितिश्च ॥ योगक्षात्रहदे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकाशयाति शुद्धोचेश्वरभावा १ यथा योगयुक्ति २ संयमः ३ शौर्यं ४ तेजः ५ जगद्धितार्थं पारमार्थिक दाने समुत्साहः ६ शुद्धविचारशक्तिः धर्मेणरक्षा ७ न्यायश्चेति ॥ ८ ॥ एते सर्वैः स्वस्ति सुखशान्तिः स्थितिः सम्पत्ति वृद्धिरायुश्च सम्वृधनं ॥ यथायोगयुक्तिः प्रयोजनंयोगः ॥

(भावार्थ)

प्रारम्भ में (सत्कर्म) अपणे इष्टमें प्रेम रखने से वा योगमाया प्रसन्न होती हुइ श्रद्धावान्क्षात्रयों को देती है योग और माया से स्थिति (परम्परा वंशका चलना) योग क्षत्रियों के हृदमें प्रकाश करता है शुद्धभाव उत्तमभाव और मालकीभाव १ यथा योगयुक्ति याने जैसीचाहिये वैसी तजबीज २ अपने आपेको वशमें रखना याने अपने आधीन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में रखना ३ वीरता ४ तेज ५ जगतहितार्थ पारमार्थिक दान में उत्साह ६ शुद्धविचारशक्ति ७ धर्म से रक्षा न्याय करना ॥ ८ ॥ इन बातों से रोग रहित रहना १ सुख २ शान्ति ३ स्थिति ४ सम्पत्ति ५ वृद्धि ६ और आयुष बधना सिखलाते हैं ॥ ७८ ॥ यथायोग युक्ति काम में लाना योग है

शुद्धभावेन प्रतिदिनेशस्त्रास्त्राणामभ्यासः सएवशक्तिः तयारक्षा तयाच सुखम् उच्चभावेन सर्वोपरीविद्याभ्यास तेन सुमतिः तयान्यायः न्यायेनशक्तिः सदा ईश्वरभावेन पुरुषार्थ-शुद्धकर्मा सर्ववृत्तान्तपरिज्ञानम् जगद्धितार्थ पारमार्थिकदाने समुत्साहः सएव स्थितिः शुद्धोचेश्वरभाव सरूप त्रिशूल त्रैलोक्यं जयतुं शक्नोति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(भाषार्थ)

शुद्धभावसे प्रतिदिन शस्त्रअस्त्रों का अभ्यास करना वही शक्तिः याने बल है बल से रक्षा जिस से सुख है । उच्चभाव से सर्वोपरी विद्याका अभ्यास जिस से सुमति (आछी बुद्धि) जिस से न्याय और न्याय से शान्ति सदा ईश्वर याने मालकी भाव से पुरुषार्थ–शुद्धक्रिया सब वृत्तान्त को जानना जगद्धितार्थ पारमार्थिक दान में उत्साह वही स्थिति है । शुद्ध उच्च ईश्वरभाव सरूप त्रिशूल तीनु लोक जीतशक्ता है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वार्थ सुखालिसध्याऽज्ञतया कर्त-व्य कार्येषु सैथिल्यं चकरोति पुरुषार्थ व्यज्यंति विषय सुखेषु सज्जान्ति यथा ज्ञानविहीना पषू गर्दभ बलहीनं भूत्वा-ऽधोपताति तमन्य पशवः पक्षयः वितुद्य भक्षयन्ति तथैव पुरुषार्थहीना पुरु-षाणांगतिः ॥

स्वजातेः बान्धवः संबन्धय भूम्या-धिपतयः ग्रामाधिपतयः सामन्ता विना विना हस्तौ। तथैव प्राज्ञा पणिता बुधा वृधा जगदनुभावुका विना विना पादो।

शुद्ध बलीष्ट भोजनं सामग्रय सुख प्राप्ति परंतु व्यायाम परिश्रमाभ्यासं विना उदर प्रसराति चासमर्थ भवति॥

बल बुद्धिः म्यां बलीष्ट मर्यादा राज्ये यद्यज्ञतयाऽल्प बलेन मर्यादां भंग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करोति तदा दुर्गतिराप्नोति यथा समुद्र-जले मग्न भवति विनश्यति ॥

भावार्थ

स्वार्थ सुख में अधिक पड़कर अज्ञानता से करने के कामों में ढीलापन्न करता है और पुरुषार्थ को छोड़ता है और विषय सुखों में पड़ता है। जैसे विन ज्ञान का पशू गद्धा बल हीन हो कर नीचे पड़ जाता है तो उसको दुसरे पशुपक्षी तोड़ कर खा जाते हैं। इसी तरह पुरुषार्थहीन पुरुषों की भी मोत होती है।

अपनी जाति के बान्धव सम्बन्धी भूम्याधिपति ग्रामाधिपति सामन्त बिना २ हाथों कैसा है। इसी तरह अगम बुद्धि वाले पण्डित बुद्धिमान वृधाजिन को जगत का अनुभव पूरा हो इनके विना विना पैरों कैसा है।

शुद्ध बलिष्ट भोजन सामग्री सुख की प्राप्ति है परंत व्यायाम (कसरत) और मेहनत के अभ्यास विना पेट बढ़कर असमर्थ हो जाता है!

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

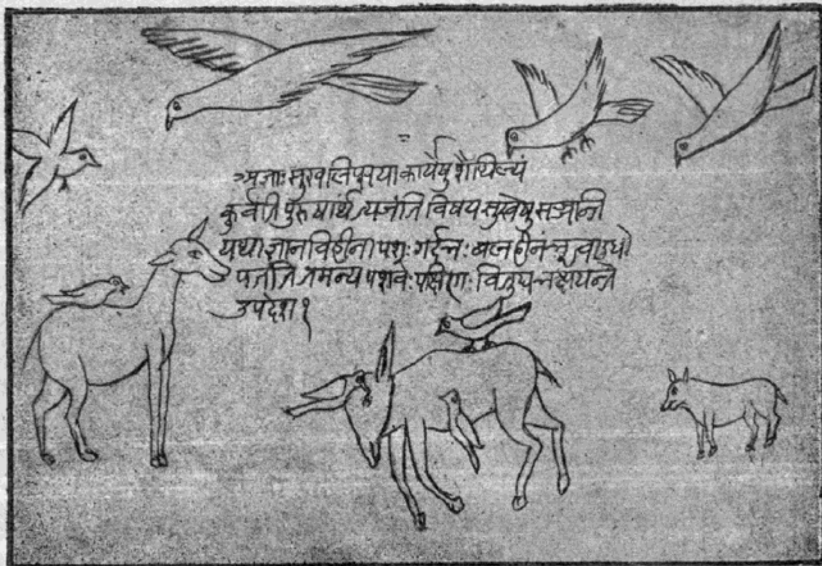

For Private And Personal Use Only

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

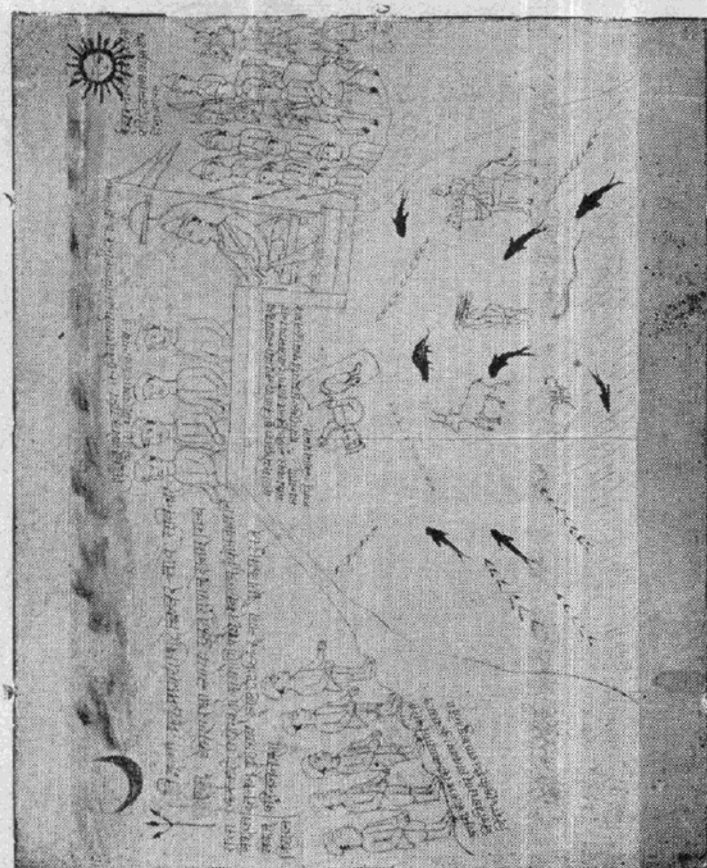

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बल बुद्धि से बलवान मर्यादा राज्य में जो अज्ञानता से अल्प (थोड़) बल के साथ मर्यादा को भंग करता है तो दुर्गति घेर लेती है जैसे समुद्र जल में डूबना और नाश होना।

वादि प्रतिवाद्योभो पक्षयोशांतिः नस्तः वाधिकाधिक पुनर्विचारार्थाक्षिपा बोभूयन्ते न्यायाधीशस्यायोग्यता विद्य ते प्रत्येक राज्यकर्मचारी स्वे स्वे कार्ये-पुरता तेभ्यः राज्यहितप्रजाहितभवतः प्रजा विलाप रहिता वर्धनम्। राजा प्रति शांति प्रजानांपंचाक्षिपा कर्मचारीभ्यः क्षमा कुर्यात्तत्पश्चात्कठिंडंडावश्यमेव ॥

भावार्थ

वादि प्रति वादि दोनु पक्ष की शान्ति नहीं है वा अधिकाधिक अपीले होती रहें तो न्याया-धीशों की आयोगयता समझी जाती है प्रत्येक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्मचारी अपने अपने कार्यों में प्रीति रखते हुवे जिनसे राजहित, प्रजाहित होवे और प्रजा विलाप रहित तरक्की के योग्य है। राजा प्रति सइकड़े प्रजाओं की पांच सिकायते कर्मचारियों के लिये माफ करने योग्य है इससे उपरांत कठिन दण्ड अवश्य ही देवे ।

राजा व्यक्तिगत सेवकातिरिक्ता सर्वे राज्यकर्मचारयः प्रजा सेवकोच्यंते ते सर्वे प्रजाषु सुखशान्तिः स्थित्यर्थम् तथैव सेना रक्षार्थम् यदि वैकल्पमापतेत् तर्हि तऽयोग्या संख्या विसृजानिया तेषां स्थानेऽन्या सुयोग्या नियोक्तव्या राज्ञां परमोधर्मः वाऽन्यथा राज्यापराधिकारे प्रजायते ॥

भावार्थ

राजा के निज सेवकों के सिवाय राज कर्मचारी प्रजा सेवक कहे जाते है वे सब प्रजा के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुख शान्तिः स्थिति के लिये है इसी तरह सेना रक्षा के लिय यदि सुख शान्ति स्थिति में फरक पड़े तो अयोग्यों को दूर करे। और उनकी जगह दुसरे सुयोग्य रखना राजाओं का परम धर्म है। अन्यथा राज्य दुसरों के अधिकार में चला जाता है।

भावार्थ

प्रजासु प्रतिशत्येको धर्मोपदेशकः एको वैद्य त्रय शिल्पकार्येषु चतुर विदग्धज्ञ विदुषावरोपाशकाप्रति शति दश क्षात्रिया रक्षार्थम् पंच परिचारिया क्षुद्रा सर्वेऽन्न शाकौषधयः फलान्यादि कृषी वाणिज्य गोरक्ष कार्येषु चत्वारशत षट्त्रिंशगदवश्यकः पयोग्याकरज धातु काष्ट पाषाण मृत्तिका ऽस्थि चरम कपास लोम रुहां वल्कलकेशादि विविधकार्यार्थम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रजाओं में प्रति सेकडे एक धर्म उपदेशक, एक वैद्य तीन शिल्प कार्यों में, चार वेद यज्ञ जानने वाले ईश्वर उपासक, प्रति सइकडे दश क्षात्रिय रक्षा के वास्ते, पांच शूद्र हुकम मुजिब काम चाकरी करने वाले, सब अन्न शाक ओष-धालय आदि खेती वाणिज्य गौ रक्षा कार्यों में चालीस, छतीस जगत के अवश्य उपयोगी खान धातु, लकडी, पत्थर, मिट्टी, हाड, खाल, कपास लोम, रुहां, बल्कल, केश आदि विविध कार्यों के लिये ।

क्षत्रियाणांभूदाय विभागे विवादे समुत्पन्ने भूमिः विभजने न्यायोऽष्टधा प्रोच्यते । सामन्तानां प्रजागणेषु सभ्य व्यक्तिजनानां सम्मतिरन्विष्या अधि-कायां सम्मतौ न्यायं परि समासे ॥१॥ वादि प्रति वादिनां राजविद्या ज्ञातृत्व-स्य तदनुसार बलं बुद्धोर्योगयतायाश्च

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चतुर्णांसभा सदां सभापत्यैश्च राज्ञो वा सन्निधौ परीक्षा ॥२॥ कोषेण लक्षं विध्यत वाऽशिना एक वारेण कवचं छिद्यते ॥ ३ ॥ स्वयं ज्योतिः परब्रह्मात्मकं तेजः तत्व ज्ञानार्थं दर्शनमध्यात्म ज्ञानं दिव्यम् ॥ ४ ॥ दानशक्तिः प्रवर्तिः यशोधनः ॥ ५ ॥ अधिको सन्तानोत्पत्ति ॥ ॥ वीरत्वेन धेनुकादि क्षुद्रशस्त्रै सिंहहननम् ॥ ७ ॥ एतेषु सर्वेषु परीक्षासूत्त्व· योग्यताधिकस्य सम्बन्ध सामान्यच शान्ते शुद्धसदाचारे दृढचित्तकृतज्ञच दातव्यमधिकोभागः नतु हीनत्वे दुराचारे दुष्ट दुर्जने क्रुधे नास्तिकेऽधिकोभागः स र्वैर्योग्यतापरीक्षणाया न्यूनाधिकयोग्यतानुसारं दातव्या ॥ दायविभागे न्याये निष्पक्षतयावश्यमेव विपरीताचरतोस्व

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हस्ता न्यायो निर्गत्या पर हस्ते प्रजा-
यते तेन लघुतां प्राप्यते ॥

वीर सुभट क्षात्रिभ्यः बान्धव संबन्धीभ्यः भूमिः प्रदानं राज्यं हासं नैति परं वृधि प्राप्यते राज्य मूलान्य धिक्यं भवन्ति। येन केन राज्याधिकारे ऽधिकाधिक बान्धव सबन्धयः वीर सुभट क्षात्रियः स राज्य सुहढतां प्राप्यते। योग्यतानुसार दाय विभाग न्यूनाधिकं प्रदीयते। राजविद्यानुसरणं त्यागेन यद्यन्यायेन राज्यं हसते न वीर सुभटां भूमिः विभाग प्रदाने। यथा प्रकृति स्वभाव नियमाद्विरुद्धं वृधि भवति नाधिकः संतति बांधुभ्यश्चाधरे-भ्यः सतांशः भूमेचर संपते शरीरयात्रा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नुसारः । मातुर्विभाग तस्याःपोषणादारे-भ्यः चर संपते विंशांश पर्यंतमापिदात व्यम् द्वितीय मातुर्तस्या पोषणादारेभ्य शतांशः तृतीया मातुर्तस्या पोषणादा-रेभ्यः द्वे शतांशः चतुर्थ मातुः तस्या पोषणादारेभ्यः त्रि शतांश तत्पश्चात् कमंश न्यून तरांशः । मातुः सुता स्व सुताभूप विभाग पोषणार्थम् ग्रहमा-दिषु चर संपत्तिषु पोषणादारेभ्याधांश पर्यन्तम् । मातुः सुत स्व सुता तथा तयो संतति स्व संततिरेव वर्त्तयते वि-भागे। स्व पुत्राभावे मातु सुता स्व सुता वा तयो संततिरपि स्वेव माननायः सर्वे विभागे दत्तक पुत्रेव । सिमा चिन्हं ना न्यथा कुर्यात् ॥ विद्याज्ञानानां संग्रह-ज्ञानसमुच्चयः साद्वि धा मनुजमुच्चपदं च

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वै सुख प्रदायिनी तथैवासाद्धिया पातयति नर्केऽशुचौ ॥

स्वाधीन परिपूर्ण सुखसहित पोषणम्। सर्वै कार्यास्वाधिकारो स्वेच्छाचारी। विचार शक्तिः तत्वज्ञानार्थं दर्शनम्। मनश्चित्तबुद्ध्यहङ्कारेण दूर दर्शनं तर्क वितर्कम् प्रमाणेन वस्तु परीक्षणम्। परि प्रश्नम्। विचार शक्ति संप्रसारणं सप्तधा शुद्धास्तिक भावेन सह ॥ १ ॥ उच्च पारमार्थिक भावेन सह ॥ २ ॥ रक्षान्याय इश्वर भावेन सह ॥ ३ ॥ पुण्य धर्मेश्वराराधनमुपाशनं प्रबन्ध भावेन सह ॥४॥ दया करुणाऽहिंसा भावेन सह ॥ ५ ॥ स्वार्थ सुख भोगेश्वर्य मोहाधिकताषु दृष्टा वोभावेन सह ॥ ३ ॥ शुद्धोच्चश्वर भावेन सृष्टः स्वास्ति सुख शान्तिः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थितिः संपत्ति वृधि भूति रायुश्च वृध्यर्थम् । विचारानंताऽव्ययम् तान्सर्वान् अनश्यकलानुसार सुमति बलेन संप्रसारणम् । निरर्थक न किञ्चिदपि विधेयम् सा विचार शक्तिः महान्बलम् । स्वार्थ रूपा सुरं वा दुर्मतिः रूप पिशाच निर्जित्वा सर्वान् साधयति वा ऽ यथा ते उभौ बलेन प्रेषयतः निर्यम् ॥

भावार्थ

क्षत्रियां के मुदाय विभाग में विवाद (झगड़ा) पैदा होणे में भूमि का भाग देण में न्याय आठ प्रकार से कहा जाता है। सामन्तों की प्रजागणों में सभ्य व्यक्ति जनों की सम्मति हो अधिक सम्मति (राय) यां से न्याय समाप्त हो वादी प्रति वादीयां की राज विद्या ज्ञान की जिस के अनुसार बल बुद्धियां की योग्यता से चार सभा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सदां की और सभापतियां से राजा के सामने परिक्षा हो। एक कोष से निसान को बेध देना वा तरवार के एक वार से कवछ को छेद देना। स्वयं (अपणे आप) जोति पर ब्रह्म का तेज ज्ञान के सार को देखना और अपणी आत्मा का दिव्य ज्ञान। ४ दान में शक्ति प्रवर्त्तिः यशोधनः यशहिथन है ५ सन्तानां की अधिकता ६ वीरता से ओछे शस्त्र से सिंह को मारना ७ इन सब में परीक्षा में उचे। योग्यता अधिक सम्बन्ध का पाश होना शान्त शुद्ध सदाचार मे दृढ चित में कृतज्ञताभे देन योग्य है अधिक भाग परंत तत्वां से हीन को दुराचारी को दुष्ट दुर्जन क्रोधी को और नास्तिक को अधिक न दे। सब योगता की परीक्षा करनी चाहिये कम जादा योग्यता नुसार देना चाहिये। दाये के विभाग में न्याय में निर्पक्षता अवश्य होनी चाहिये विपरीत आचरण से न्याय हाथ से निकले जाता है ओर दुसरों के हाथ मे चला जाता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है जिससे लघुता (छोटा पन) प्राप्ति आता है।

वीर सुभट क्षत्रियों के लिये बान्धव सबन्धीयां के लिये भूमी देने से राज्य घटता नही है परंत वृधि को पाता है राज्य की जडे अधिक होती है।

जिस किसी राज्य के अधिकार में अधिक अधिक बान्धवों सबन्धी वीर सुभट क्षत्रिय है वह राज्य अछी दृढता को पाता है योग्यता नुसार दाय विभाग कम जादा दीया जाता है राजविद्या के अनुसरण को त्याग ने से अन्याय से राज्य घटता है परंत वीर सुभटों को भूमि विभाग देने से नही जैसे प्रकृति स्वभाव नियम के विरुध अधिक वृधि नही होती है। संतति बान्धवों के लिये आधे से सो अंश तक भूमि विभाग और चर संपत्ति मे से शरीर यात्रा नुसार। माता के लिये चर संपत्ति मे से उसके पोषण से लेकर बीसवां अंश तक देना चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वितिय माता के लिये उसके पोषण से लेकर सो अंश तक। तीसरी माता के लिये उसके पोषण से लेकर दोसो अंश तक। चोथी माता उसके पोषण से लेकर तीन सो अंश तक। तिसके उपरांत कम कम। माता की बेटी अपणी बेटी भूमि मे भाग पोषण के लिये घरादि मे चर संपत्ति मे पोषण से आधे अंश तक। माता की बेटी अपणी बेटी तथा इन दोनु को संतति विभाग देने में अपनी संतति की तरह वर्त्तें जाते है! अपणे पुत्र अभाव से माता की बेटी अपणी बेटी और इन दोनु की संतति भी अपणी संतति की तरह मानने योग्य है सब विभाग देने में गोद लिये हुवे पुत्र की तरह॥ सिम चिन्ह को न हटाना चाहिये। विद्या ज्ञान का संग्रह है: ज्ञान को समुच्चय सद्विद्या मनुष्य को उच्च पद पांचाती है और सब सुख देने वाली है इसी तरह अस-द्विद्या नर्क में गेरती है॥ स्वाधीन--परिपूर्ण सुख सहित पोषण करना। सब काम अपने अधिकार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में हो । अपनी इच्छा नुसार चलना । विचार शक्तिः— ज्ञान के सार को देखना । मन चित्त बुद्धि अहंकार से दूर देखना याने विचारणा । तर्क वितर्क करना । प्रमाण से वस्तु की परिक्षा करना । प्रश्नोतर करना । विचार शक्तिः संप्रसारणम् सात तरह से—शुद्ध आस्तिक भाव के साथ १ उच्च परमार्थिक भाव के साथ २ रक्षा न्याय माल की भाव के साथ ३ पुण्य धर्म ईश्वराराधन मुपाशनम् प्रबन्ध भाव के साथ ४ दया करुणा अहिंसा भाव के साथ ५ स्वार्थ सुख भागेश्वर्य मोह की अधिक जीवां में दुष्ट नीच भाव के साथ ६ शुद्ध उच्च मालकी भाव से सृष्टि के सुख शान्ति स्थिति अरोग्यता संपति वृधि धन आयुस की वृधि के वास्ते । विचार अनन्त हमेश है उनको सबको आवश्यक्ता नुसार अच्छो बुद्धि बल से विस्तार करना चाहिये निरर्थक कुछ भी न करना चाहिये वो विचार शक्ति महां बल है । स्वार्थ रूप असुर और दुर्मति रूप पिशाचनी को

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीत कर सब साथ लेता है और नहीं तो वे दोनु बल पूर्वक नर्क में भेज देते हैं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ॐ शिव ॥

राजविद्या

शब्दार्थ बोध।

प्रथम शिक्षा-राजविद्या शब्दानां स्पष्टार्थ

प्रश्नोत्तरैः ज्ञानम् ।

१-कोधर्मः

प्रकृति नियमातिरिक्तायाः सर्व शक्तिमत्याः संप्रेरिकी मायाया नियमाद्विरुद्धं नाल्पमपि विधेयम् । सा शुद्ध धारणा यया सृष्टेस्सुखशान्ति स्थिति प्रबन्धानां स्थैर्यं भवेत स एव धर्मः

भावार्थ

प्रकृति नियम के सिवाय सर्व शक्तिमति प्रेरणा करनेवाली माया के नियम के विरुद्ध कोई भी धारणा न करनी चाहिये और ऐसी शुद्ध

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धारणा जिससे सृष्टि के सुख शान्ति स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता बनी रहे वही धर्म है ॥

२–राज्यंकिम्.

धर्मेण सहाज्ञाफलं साऽपि साम दान भेद दण्डैः सहः परिवर्तनम् ।

भावार्थ

राज्यक्याहै? धर्म के साथ आज्ञा का चलना वा साम दान भेद और दण्ड के साथ हो ॥

३–केयंविद्येति.

पदार्थानां याथा तथ्यज्ञानमिति विद्या चेच्छाकृति श्चातो विद्या सर्वोपरी यथार्थ ज्ञानमेव ही महाँ बलम् ॥

भावार्थ

येविद्याक्याहै? पदार्थों का यथा योग्य ज्ञान इसे इच्छा कीया फल मिल सक्ता है इसे ये विद्या सर्वोपरि है जैसा चाहिये वैसा ज्ञान होना महान बल है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४--किंबलम्.

कर्तुंशक्नोति यत्कार्यं येन तद्बल-मुच्यते॥

भावार्थ

जिस्से जो काम कीया जाय वह बल है॥

५--तप.

परिश्रमेण कार्यं संपादनमेव तप इति प्रोच्यते सर्वं तेजोरूपत्वम् वा श-रीर वाङ मनसापरिश्रमं करोतीतितपो-च्यते॥ शस्त्रास्त्राणामभ्यासो महाँतपः॥

भावार्थ

मेहनत के साथ काम करना ही तप कहला-ता है वह तेजरूप है वा शरीर बाणी और मन से परिश्रम करना तप है और अस्त्र शस्त्रों का अभ्यास महाँ तप है॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६--तेज.

आलस्य रहितः वास्वस्तेर्विनाय कृयते सतेजः प्रकाशरूपत्वम्।

भावार्थ

आलस्य रहित वा विना सुस्ती के करना वह तेज है और ये प्रकाश वान है ॥

७--त्याग.

दुर्लोभ पदार्थादिभ्यो निकृष्ट कुकृत्यानां परिहरणमेव त्यागः।

भावार्थ

हरेक वस्तुवों में खोटा लोभ और निकृष्ट खोटे कामों को छोड़ना ही त्याग है ॥

८--सत्सङ्गति.

काम क्रोध लोभ मोहांकाराणामधिकयं निरुन्धानां तांच संभावेन वशी-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुर्वंति या निश्चयात्मिका बुद्धि विचार शक्ति नामिका पर पर्य्यं सोच्च संगतिर्वा सत्संगतिः जगदनुभावुकः दृढास्तिकः स्वार्थ निस्पृहः दूर दर्शीः शुचिः न्यायः सत्यरतः कुलीनः शुभाचाराभियोग रहिताः ईदृशा जनानां संगति सत्सं- गति प्रोच्यते।

भावार्थ

काम क्रोद्ध लोभ मोह अहंकारों की अधि- क्ता को रोक्ता हुवा और उनको संभाव से अपने वशमें रखता हुवा वा निश्चयात्मिका विचार शक्तियों की उच्च वा सत्सङ्गति जगत्के कामों से तजरुबेकार पक्का आस्तिक स्वार्थ रहित दूरदर्शी पवित्र जो न्याय और सत्य में जिनकी रति हो कुलीन हो जिनके चलन अच्छे हो और जिनकी कोइ सीकायत न हो ऐसों की सङ्गति सत्सङ्गति कही जाती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९--सेना.

वीर सुभट जितेन्द्रिय प्रतिदिने परिश्रमेऽभ्यासे चास्त्र शस्त्राणामभ्यासे परिपूर्णः सभ्यता शिक्षिता बलान्विता सज्जिता पुरुषाणां समूह सेना प्रोच्यते।

भावार्थ

सेना—वीर सुभट जितेन्द्रिय और हमेशा महनत और अस्त्र शस्त्रों के अभ्यास में परिपूर्ण हो और सभ्य शिक्षित और बलवान् सजे हुवे पुरुषों का समूह सेना कहलाता है।

१०—शुद्धाधारणा.

सर्वे परस्परं सुखेन प्रवर्त्तते सैव शुद्धाधारणाः साऽपि विघ्न रहिताश्च शान्तिः।

भावार्थ

शुद्धाधारणा—सब आपस में सुख से रहने की प्रवर्त्ती रखें येही शुद्धाधारणा कहलाती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्धाचारणा जो विघ्न रहित है सो ही शान्ति है।

११–शुद्धभावना.

सर्वे शुद्धाचित्तन जगाद्धितार्थं पारमार्थिक विचारः शुद्धभावनाः।

भावार्थ

सर्वे शुद्ध चित्त से जगत् के हित के लिये पारमार्थिक विचार शुद्धभावना कहलाती है।

१२–सुख.

यथेष्टं स्वानुकूल पदार्थानां प्राप्ति सुखम् वा तदातिरिक्तं दुःखम्।

भावार्थ

इच्छा कीया हुवा वा अपने अनुकूल पदार्थों की प्राप्ति सुख है और इसे विरुद्ध दुःख कहलाता है।

१३–लोभ,

अज्ञतया प्रायः सुखाभिलाषः लोभः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ

अज्ञान्ता से जादे करके सुखकी अभिलाखा करना लोभ है।

१४--सत्यलोभ.

यशसेऽति गृध्नुता सत्यलोभः।

भावार्थ

सत्यलोभ–यश के लिये लोभ करना सत्य लोभ है।

द्वितीय शिक्षा.

स्वार्थ सुखस्य संभावादधिक्का सर्वेशुभं सर्वदा स्थिति सर्वस्वंच विनाशकानि तौ प्रबलं शत्रू परिहृत्वा सर्वे परस्परं शुद्ध भावेन शुद्धाधारणा विना न प्रीति न सुखं न च बलम् ते विना सर्वे विनश्यन्ति न कोऽपि व्यक्तेः वा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जातेश्च स्थितिः।

उन्नत पदकांक्षिणा जना वृधिमिच्छता राजविद्योपदेशेन शक्तेः सुमते विशुद्ध ज्ञानं संवाप्यते ताभ्यां रक्षा न्यायः स्वाधिकारे क्षत्रियाणां स्थिति।

भावार्थ

द्वितीय शिक्षा—स्वार्थ सुख की संभाव से अधिकता सारे शुभ कार्यों को और हमेश की स्थिरता को नाश करने वाले दोनू प्रबल शत्रुवों को मारकर समस्त आपस में शुद्ध भावना से शुद्धधारणा विना न प्रीति न सुख और न बल है इनके विना सब नाश को प्राप्त होजाते हैं और किसी व्यक्ति वा जाति की स्थिति नहीं है। उच्च पदकी इच्छा करने वाले अपनी वृद्धि चाहने वाले राजविद्या के उपदेश से बल बुद्धि के शुद्धज्ञान को प्राप्त करें जिनसे रक्षा न्याय अपणे अधिकार में होना क्षत्रियों की स्थिति है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्व शक्ति मति शर्वा प्रेरिका शांभवी शिवा। शान्तैक वीरा माहेशी शिवार्धंगा शिवा प्रीया॥ प्रसौम्यं महा शक्ति पतिंचा शुभ भजंनम्। प्रकाश्यते राजविद्या क्षात्रियाणां हितायच॥ आभू चन्द्रार्क तारंस्यात् राज्य शासन वर्धनम्। सुप्रतिष्ठितमेवास्तु मानुष्यं सुखमेवच॥

भाषार्थ

सर्व शक्तिवाली उत्पन्न करनेवाली प्रेरणा करनेवाली स्वरूप शिवा शान्त स्वरूपवाली एकही वीरा माहेशी शिवार्धङ्गी शिवाप्रीया महा शक्ति अशुभ को नाश करने वाले शिवके समीप सौम सभाव होकर प्रकाश की जाति है।

भावार्थ

सर्व शक्ति मति इस नाम से राजा अपनी समस्त शक्तियों का समर्ण (ध्यान ज्ञान) करे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याने शरीरिक बल आत्मिक बल सर्व सुयोग्य सेना बल सर्वें बान्धव संबन्धीयों की बल बुद्धि एकयता का बल १ शर्वा इस नाम से राजा धर्म से आय का प्रबन्ध रखे याने अच्छी पैदाश हो और प्रजा चर्णी रहे २ प्रेरिका इस नाम से मतलब ये है कि राजा समस्त प्रजा को सन्मार्ग में प्रेरणा करता रहै जिस्से प्रजा की सुख शान्तिः स्थितिः और प्रबन्धों की स्थिरता बनी रहे ३ शांभवी इस नाम से राजा अपने आप स्वाधीन्ता से अपना राज्य कार्य करता रहे किसी के आश्रभूत होके न रहे ४ शिवा इस नाम से राजा अपनी समस्त प्रजावों में कल्याण सुख चैन बना रखे ५ शान्ता इस नाम से राजा शान्त सभाव वाला हो उत्पाति और कु-चाली न हो ओर और जितेन्द्रीय हो ६ एकवीरा इस नाम से राजा को बोद्ध कराता है कि कुसङ्ग को त्यागता हुआ क्षत्रिय जाति के स्वाभाविक गुण माफिक वीर ही भाव में मग्न रहे ७ माहेशी ये नाम बोद्ध करता है के क्षत्रि नीच भाव को छोड़

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के उच्चभाव (मालकी भाव) रखे नीच विचार वा नीच भाव हरगिज न रखे नीच भाव से नीचा और उच्च भाव से ऊचा। उच्च नीच भाव ही कारण है जेसा भाव वेसा फल ॥ ८ ॥ शिवार्धङ्गी ये नाम बोद्ध करता है के अपनी एकही पत्नी को अर्धंग में रखे अर्द्धंग पुरुष और अर्द्ध स्त्री दोनू मिलकर एक अंग होजाता है और एक से जादा अर्द्धंग स्त्री न बनावे एक ही स्त्री को अपने अर्द्धंग के माफिक रखे और इसी तरह अपनी प्रजा से सदा मिला रहे राजा मस्तक और प्रजा धड़ है ये दोनु मिलकर सामीप्य रहे और जहां तक होसके प्रजा के दुःखों को मिटाता रहे और प्रजा के साथ दुर्भाव कुछ भी न रखे ॥ ९ ॥ शिवा प्रीया ये नाम बोद्ध करता है के राजा अपनी एक ही विवाहिता स्त्री को प्रीय रखे इसी तरह प्रजा का भी प्रीय बना रहे राजा अपने हृदे में कोमलता और मुख में मधुरता और अपने बान्धवों का संबन्धीयों का प्रजावों का और सेना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का प्रीति संपादक हो। पारमार्थिक भाव रखे और दान में उत्साह रखे इस तरह महा शक्ति के पति और अशुभ को नाश करने वाले के साथ उनकी अनुग्रह से निर्मल होकर क्षत्रियोंके हित के लिये राजविद्या प्रकाश की जाती है जिस्से पृथिवी चंद्र और तारों तक उनका राज्य स्थिर रहै और मान के साथ मनुष्य पनका सुख मिलता रहै ॥ १० ॥

सृष्टेर्सुखशान्तिःस्थितिः प्रबन्धानां स्थैर्यं सर्गे प्रारंभे शिव शक्त्यार्यं समवादोभूत स एव तेज शक्तिः सुमतिर्मयि राजविद्याया प्रथमोपदेशोऽस्तियं भगवानो विवस्वते प्रोवाच। पश्चात्परम्परा प्रोक्तवान व्ययमसोऽपि समये समये लुप्त प्रकाशश्च बोभूयते।

भाषार्थ

सृष्टी की सुख शान्ति स्थिति और प्रबन्धों

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को स्थिरता के लिये सृष्टी आरंभ में शिव शक्ति का संवाद हुवा वह तेज शक्ति सुमति मयि राजविद्या पर पहला उपदेश है जिसको श्री विष्णु भगवान ने राजा विवस्वान से कहा फेर परम्परा से ये राजविद्या का योग चलता रहा वह समय समय में लुप्त प्रकाशित होता रहता है ।

राजविद्या ।

॥ प्रथमोपदेश ॥

॥ प्रकृति स्वभाव नियम विद्या प्रशंसा ॥

अस्या सृष्टेरवधिः चतुर्दश मन्वन्तर पर्यन्तः प्रति मन्वन्तरे मनुष्याणां बलबुद्धिः कर्मायुर्भेदो विद्यते स्वार्थ सुख लिप्सया स एवाधोगतिं नयति शास्त्राणि च तमुद्धमाकर्षन्ति यथा सूर्यो जलम् ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ

इस सृष्टी की अवधी चवदे मन्वन्तर तक की है। हरेक मन्वन्तर में मनुष्यों की बल बुद्धिः कर्म और आयु में फरक पड़ता है और ये फरक स्वार्थ और सुख में पड़ने से होता है और ये स्वार्थ और सुख नीचि गति को लेजाता है और शास्त्र उनको उच्च गति में खींचता है जैसे सूर्य जल को।

एतच्छास्त्रावलंबी जनास्त्रिपुलोके पूच्चपदं लभते एतद्विद्या पुरुषाणां कर्माणि शोधयित्वा बलायुर्बुद्धिः संतातिश्च संपदा संवर्द्धयाति ।

भावार्थ

इस शास्त्र का अवलंबी जन तीन ही लोक में उच्च पद पाता है ये विद्या पुरुषों के कर्मों को शुद्ध करती हुई बल आयु बुद्धिः संतति (परिवार) और संपदा को बढ़ाति है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पृथक् पृथग्विधानानाभान्त्यनेक रचना जन्तूपजन्तुनां सुख दुःख तेषां कर्मानुसारेणैव देशोपरिपाटिनानुसारेणैव पृथक् पृथग्धर्मान् राज्यानिच स-रूपाणि स्वभावान् विविधा भाषाश्च एवमेव चाचरणं रीतिः मर्यादाश्चाह-मेव सृजामीति। नैतान्सर्वान्पृथग्भूता न्सहत्यैको कर्तुकोऽपि समर्थः।

भावार्थ

जुदी जुदी विधविध की अनेक भांति की रचना जंतु उपजंतुवों का सुख दुःख उनके कर्मानुसार और देश की परिपाटी के भी अनुसार जुदा जुदा धर्म जुदा जुदा राज्य जुदा जुदा स-रूप जुदा जुदा स्वभाव जुदी जुदी बोलीयां इसी तरह जुदि जुदि रितां मर्यादा मैने रची है इन जुदे जुदे को एक करने की सामर्थ किसी की भी नहीं है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रजासु सभ्यता प्रचारः समुन्नति मार्गे च शिक्षणीया। जगद्धानि कराणि विषयाणि कार्याणि कुर्वन्ति निरोद्धव्या परं तासां स्वधर्मे व्यवहारे प्राचीन मर्यादायां च हस्ताक्षेपो न विधेया। येन केन साम्राज्येऽधिकारेऽधिकाधिक माण्डलिका राजानः स सम्राट सुदृढतां प्राप्नोति। यत्र तत्रैव जन समूहः तस्य रक्षा न्याय हितार्थाय पृथक् पृथक् राज्य स्थापयामि तस्मान्माण्डलिकानि राज्यानि पृथिवी पर्यन्तं शोभूयन्ते न कदाऽपि नाशं जायंते।

भावार्थ

प्रजावों में सभ्यता का प्रचार और उन्नति मार्ग शिखलाना चाहिये। जगतहानि कारक कामों के करने से रोकना चाहिये परंत उनके धर्म व्यवहार और प्राचीन मर्यादों में हात न डालना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चाहिये जिस साम्राज्य के अधिकार में जितने अधिक मांडालिक राजा है वह सम्राट अपनी दृढता को पाता है। जठे कठे ही जन समूह होता है उनकी रक्षा न्याय के लिये मै जुदे जुदे राज्य स्थापित करता हुं इसतरह माण्डालिक राज्य पृथिवी पर्यंत होते रहेंगे और किसी काल में नाश न होंगे।

राजा प्रजा च द्वावपि एकः स्त्री पुरुष रूपं धार्यंतः ममैवात्म भागौ तौ भिन्नमूर्तिं जगदुत्पत्यै। तयोर्जीवोऽपि राजा शरीरं प्रजा। ययोः शक्तिः सुमतिर्मम प्रकाश एवास्ति यो राजाविद्या रूपेण ज्ञान चक्षुषा पश्येत्स निष्कंटकं राज्यं करोति पुनः लभते च परमंपदम्। राजसजीवः क्षात्रियः प्राजापालनंकर्मः स प्रजानामाधिपः न्याये रक्षायै शासनीयः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सात्विक जीवो ब्रह्मः शरीरं वेद शास्त्राणि यस्मिञ्ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं च मम प्रकाशा एव सन्ति स एव ब्रह्म जानाति स ब्राह्मणः पूज्यः माननियश्च।

राजससात्विक जीवो वैश्यः शरीरं गणित द्रव्यश्च कृषि गो सवा वाणिज्यानि च मम प्रकाश एवास्ति तस्मै सा सत्यधारणा मान योग्यः। तामसी जीवः शूद्रः शरीरं सेवाकर्मः सेत्र मम प्रकाश एवास्ति तस्माच्छूद्र पालन योग्यः।

अनया विद्याया पराक्रम सुमतेश्च विशुद्धज्ञानं समवाप्यते तेन च शुद्ध धारणा यया सुकृत कर्म संपादने पुरुषार्थो जायते ईदृश नैव पुरुषार्थेन शुद्ध भावनोत्पद्यते तयाच मनुष्य कोटा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वुच्छायां क्षत्रिय जातो जीवो जन्म सं-
प्राप्नोति।

भाषार्थ

राजा प्रजा दोनू ही एक स्त्री पुरुष रूप धारे हुवे है और वह मेरे ही आत्मा के भाग है वह दोनू जुदि जुदि मूर्ती जगत की उत्पत्ती के वास्ते है उन दोनू में जीव राजा और शरीर प्रजा है और उन में बल बुद्धि मेरा ही प्रकाश है जो राज विद्या रूपी ज्ञान की आंख से देखता है वह निष्कंटक राज्य करता है और फेर परमपद पाता है।

राजसी जीव क्षत्रिय है और प्रजा पालन कर्म है वह प्रजावों का मालिक है और न्याय रक्षा और राज्य करने योग्य है।

सात्विक जीव ब्रह्म है उनका शरीर वेद शास्त्र है जिस में ज्ञान विज्ञान और आस्तिक भाव मेरा ही प्रकाश है और ब्रह्म को जानता है वही ब्राह्मण है और ब्राह्मण पूज्य और मान योग्य है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

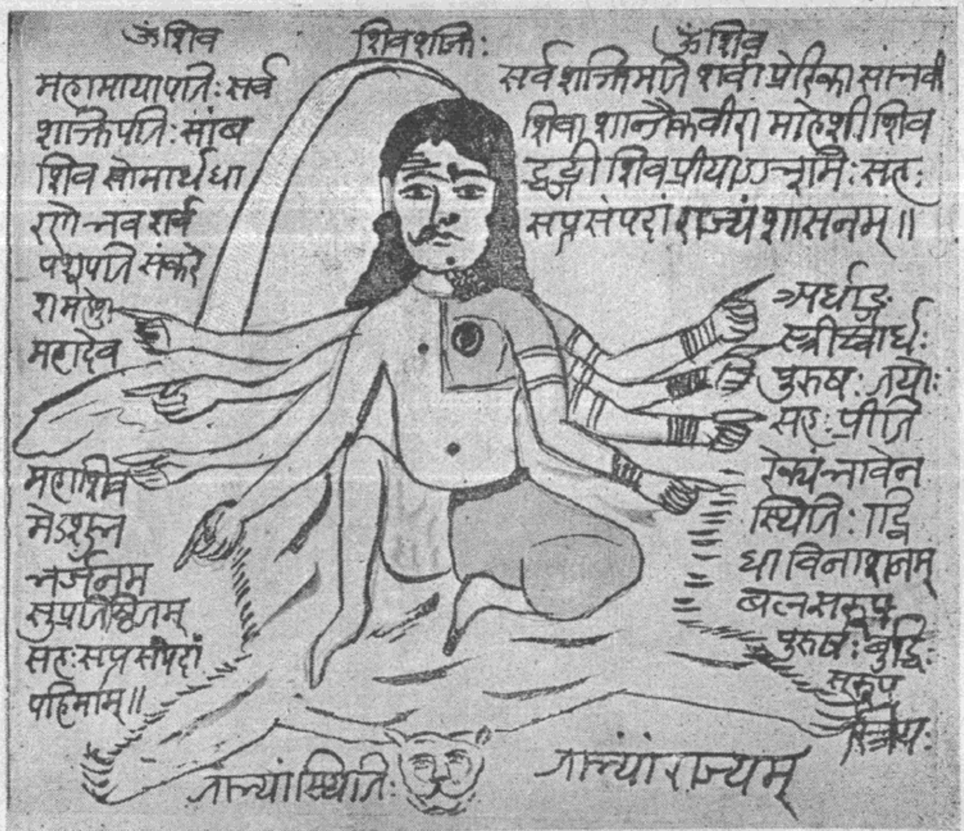

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजसी और सात्विक जीव वैश्य है उनका शरीर गणित और द्रव्य है उस में खेती गो सेवा और वाणिज्य मेरा ही प्रकाश है उस में वही सत्य धारणा मान योग्य है। तामसी जीव शूद्र है उनका शरीर सेवा का काम है और वही मेरा प्रकाश है इस लिये शूद्र पालने योग्य है।

इस विद्या से पराक्रम और सुमति के शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होती है जिस से धारणा शुद्ध होजाती है और शुद्ध धारणा से सुकृत करने में पुरुषार्थ होता है और एसे पुरुषार्थ से भावना शुद्ध होजाती है और भावना शुद्ध हो जाने से मनुष्य कोटी में उच्च कोटी क्षत्रिय जाति में जीव जन्म पाता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजविद्या।

॥ द्वितियोपदेश ॥

मनुज शरीरमपार शक्तिभिः सृज्यामिति।

इदं मनुज शरीरं मया सर्व शक्तिमते संप्रेरिकी माययानन्त शक्तिभिः साहितमेव सृष्टम् परं काम क्रोध लोभ मोहाकारणामाधिक्येनैताः सर्वे शक्तयः तत्त्वेषु तत्त्व मयोभूत्वा तेष्वेव लीयन्ते तदायं मनुजः प्रसंगेन साधारण वृत्तिःरवलंबते। यश्चोन्नत पदाः काङ्क्षण मनुज राजविद्यायाः सारः यः सर्वोपरि स्थितो योगः स संयतेन्द्रियत्वं पंचानां कामादि नाम वशीभूयः एतैरेव स्वका-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यौंपयोगं दिव्यं शक्तिश्चानुशास्ति त-
त्प्रत्यक्षमवगम्यते ॥

भावार्थ

यह मनुष्य का शरीर मुजसे सारी शक्त्यों वाली प्रेरणा करने वाली माया से अनन्त शक्तियों सहित रचा हुवा है परंत काम क्रोध लोभ मोह अहंकारों की अधिक्तासे ये तमाम शक्तियां तत्त्वों में तत्त्वमयि होकर उन में लीन होजाती है तब ये मनुष्य जेसी संगत पाता है वेसी ही साधारण वृत्ति पकड़ लेता है। वह जो उच्च पद की इच्छा करने वाला मनुष्य राजविद्या से सार जो सर्वोपरी योग है वह इन्द्रियों को वश में रखना और पांचों काम आदि के वशी भूत न होकर और उन से काम लेता हुवा दिव्य शक्तियों का प्रत्यक्ष ज्ञान कराता है।

मया प्रथममाकाशमुत्पन्नमाकाशा-
द्वायु संभवः वायोस्तेजस्ततश्चापस्तत
पृथिवी समुद्भवः तेषां काम क्रोध लोभ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऽहंकारैःसहदानं धृतिस्तेजो शौर्य-मीश्वर भावं प्राप्यते एतेषां स्वदेश मातृ भाषा भोजन वेष विवाह पुरुषार्थैः सह प्रवर्तते येषां धर्म धरा धन दारा प्राणानां संबन्धः ततः ज्ञान योग व्यत्र स्थिति स्वाध्यायः न्यायाभयमार्जवं प्रेरयते तेषां समुत्साहिता चित्ते गंभीर-ता शक्ति सुमति पराक्रमेण सहिताश्च शुद्ध भावनाऽत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्य-ति सर्वयुपयोग्यभ्यास तत्त्व ज्ञानार्थं दर्शनम्। दीन रक्षास्सदाचार शरीरे-न्द्रिय संयमः जितेन्द्रियत्वं मनोषैव धारयते स राजा समस्ते क्षितिमण्डले।

भाषार्थ

मुजसे पहले आकाश को उत्पन्न काया गया और आकाश से वायुः वायुः से तेज (अग्नि)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेज से जल और जल से पृथिवी हुइ। तिन से काम क्रोध लोभ मोह अहंकार के साथ दान धृ· ति तेज शूरवीरता और माल की माव की प्राप्ती है और इन से स्वदेश मातृ भाषा भोजन वेष विवाह और पुरुषार्थ के साथ प्रवर्त कीया जाता है जिन से धर्म धरा धन दारा और प्राणों का संबन्ध है। फेर ज्ञान योग मे व्यवास्थिति अपनी ही राजविद्या का अभ्यास न्याय अभय और सरलपन मे प्रेरयते (प्रेरणा कीया) जाता है तिन से उत्साह चित्त में गंभीरता बल बुद्धि के पराक्रम के साथ शुद्ध भावना और अपने माफिक सब प्राणियों में देखता है और तमाम उपयोगी अभ्यास और ज्ञान के सार को तत्त्व करके देख· ना। दीन (गरीब) की रक्षा करना सदाचार शरीर इन्द्रिय वश में रखना जितेन्द्रिय पन्न मनुष्य की बुद्धि ही धारण कर शक्ति है वह राजा समस्त पृथिवी भर का है।

कामाद्धम संग्रहो तस्य च रक्षणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च दानं धर्मोपदेशः प्रयोजनम्।

भावार्थ

काम से धर्म का संग्रह करो और धर्म की रक्षा करो और धर्म का दान धर्मोपदेश है।

क्रोधाद्धर्मेण सह पृथिव्युपार्जनं तस्या रक्षणम् दानंचेति।

भावार्थ

क्रोध से धर्म के साथ पृथिवी प्राप्त करना है और उसकी रक्षा करना और दान देना बांधवों और संबन्धियों को।

लोभाद्धनं धर्मेण सह संग्रहो रक्षा दानंचेति।

भावार्थ

लोभ से धन को धर्म के साथ संग्रह करो और रक्षा करो और दान भी दो।

मोहाद्दाराणां संततः संबन्धिनांच संग्रहो रक्षा कन्या दानंचेति विवाहेन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोह से स्त्री संतती (परिवार) और संबन्धियों का संग्रह हो और इन की रक्षा और दान कन्यावों का विवाह करके।

अहंकारात्प्राणानां योगयुक्तेन संग्रहो पथ्येन च रक्षा दानंचेति युद्धे।

भावार्थ

अहंकारों से प्राणों का योग युक्ति संग्रह करो पथ्य के साथ और रक्षा करो और युद्ध में दान प्राणों का भी हो।

समरे शौर्यम् युद्धि विक्रमः उपयोगीषु कार्येषु यथा योग्य तेजः धृतिः परिश्रमश्च।

भावार्थ

लड़ाई म शूरवीरता युद्ध में पराक्रम और उपयोगी कामों में यथा योग्य तेजी धीरज और परिश्रम करना।

दानं देशे काले सुपात्रेषु वा कन्या दानं स्वजाति विवाहेन यथा योग्येन च।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

दान देश देखकर समय देखकर और सुपात्रों को देना इसी तरह कन्या दान स्वजाति विवाह करके यथा योग से देना।

क्षत्रियेश्वर भावाकाशवदुच्च तंच त्यागात् शनै शनै भ्रंसंति।

भाषार्थ

क्षत्रियों का मालकी भाव आकाश समान उच्च है तिसको छोड़ने से शनैः शनैः भ्रष्ट होजाते है।

मातृभाषा परित्यागेन चिरकालेन पूर्वजैरनुभूता दिव्य शास्त्रानुभवः तेन शुद्धा धारणा क्षीयते। न्यायेऽनुभवावश्यमेव। मातृ प्राकृत भाषाऽभावेन जगत्सुदायी धर्मस्य महती क्षतिर्जायते। धर्मेनष्टे समूलंच विनश्यति।

भाषार्थ

मातृभाषा (देश बोली) छोड़ने से बहोत काल से पूर्व पुरुषों का अनुभव (तजरुबा) और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अच्छे अच्छे शास्त्रों का अनुभव और एसे अनुभव से शुद्ध धारणा चली जाती है॥ न्याय में तजरुबा जरूरी है॥ मातृ प्राकृत भाषा के अभाव से जगत सुखदायी धर्म की महाँ हानि होजाती है॥ धर्मके नाश से समूल नाश होजाता है॥

स्वदेश शुद्ध बलिष्ट भोजन परिवर्तनेन शरीरं पुरुषार्थं विहीनं कृत्वा धरया परि त्यज्यते॥

भाषार्थ

अपणा देशी शुद्ध बलीष्ट भोजन छोड़ने से शरीर पुरुषार्थ हीन करके पृथिवी उसको छोड़ देती है॥

वीरवेषं परिवर्त्तनेन स्व मनोगत विचार प्रेरणा परिवर्तते तेन शुद्ध भावनाऽपि परिवर्तनेन धनक्षयः सम्पद्यते सजीवात्मा जन्मान्यपि न स्वजातेः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परि जायते यस्मात्साजाति हस्यति ॥

भाषार्थ

वीर वेषको छोड़ने से अपने मनकी गति विचार प्रेरणा फिर जाती है जिस्से शुद्ध भावना भी उलटी होजाने से धन का नाश होजाता है और शुद्ध भावना विगड ने से वह जीवात्मा अ· पनी जाति में जन्म नहीं लेशक्ति है जिस्से वा जाति घट जाती है ॥

स्वजातेः विवाह परित्यागेन स्व दाराणां स्व सन्ततिश्च स्व जातेक्षंति जायते वर्णशंकरश्च सम्भवमापि ॥

भाषार्थ

अपणी जाति का विवाह त्यागने से अपणी स्त्रियां और सन्तति और अपणी जाति का नाश होता है और वर्णशंकर भी पेदा होते हैं ॥

पुरुषार्थ परित्यागेन प्राणानां हा-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निः सर्वस्वं च विनश्यन्ति ॥

भावार्थ

पुरुषार्थ के त्यागने प्राणों की हानि है और सर्वस्व नाश कर बेठता है ॥

धर्मेण धरायाः स्थैर्यम् धरया च धनस्य ॥ धनेन दाराणाम् ॥ दारैश्च संततेः ॥ संतत्या च प्राणानां परम्परा प्राप्तौ जन्मानि स्थितिः ॥

भावार्थ

धर्म से पृथिवी की स्थिरता है और पृथिवी से धनकी और धनसे स्त्रियों की और स्त्रियों से सन्तति की और सन्तति से प्राणों की पीढी दर पीढी जन्म पाने की स्थिति ॥

———:०:———

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज विद्या ।

॥ तृतीयोपदेश ॥

बल रक्षा–द्वादश बलानि ॥

पूर्णावयव सामग्री सहितं शारीरिकात्मिकं बांधवानां सम्बन्धीनां बलम् प्रथमम् ॥ तपश्च पुरुषार्थौ द्वितीयम् ॥ तृतीयम् द्रव्य विद्या कोप बलम् ॥ चतुर्थं धर्म वीरता बलम् ॥ पञ्चमं राज्य शासनं पराक्रम पुन्यश्च ॥ बुद्धि चातुर्य्येण युक्ता सहःसत्यभाव ज्ञानश्च षष्ठम् ॥ सप्तममस्त्र शस्त्राणामभ्यासो बलम् ॥ अष्टमश्च मित्राणां सम्बन्धीनाञ्च स्नेह प्रीति सहाय्यम् ॥ नवमम् नित्यमभ्यासे सभ्यता वशम्वदा सैनिकम् ॥ समय विचारोऽर्था

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्तस्यञ्च वृथा न यापनम् दशमम् ॥
एकादशस्थान दृढता दुर्गादि बलम् ॥
इष्ट योगस्य च द्वादशमिति ॥

भाषार्थ

पूर्ण अवयव (हाथ पग आंख कानादि) सामग्री सहित शरीरिक और आत्मिक और बांधव और सम्बान्धियों का बल पेला है ॥ तप और पुरुषार्थ दूसरा बल है ॥ तीसरा द्रव्य विद्या कोष (खजाना) बल है ॥ चौथा धर्म और वीरता का बल है ॥ पांचमा राज्य शासन (राज्य करना) पराक्रम और पुन्य का ॥ छटा बुद्धि चतुर्ता सहित सत्यभाव और ज्ञान ॥ सातमा अस्त्र शस्त्रों के अभ्यास का बल ॥ आठमा मित्र और सम्बन्धियों की स्नेह प्रीति और सहायता का बल ॥ नवमा नित्य अभ्यास पाई हुइ अपने वश में सेना का बल ॥ समय में विचार करना याने वृथा न बिताना ये दशमा बल है ॥ इग्यारमा स्थान दृढता दुर्गादि बल है ॥ इष्टयोग बारमा बल है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वे हितार्थाय वायुः जलयोः शुद्धिः ॥ प्रतिशरीरे मनसात्मनश्च शुद्धिः तां समीक्षयः न्याये ॥

भाषार्थ

सब के हित के लिये वायुः जलकी शुद्धिः प्रति शरीर में मनसा और आत्मा की शुद्धि न्याय के समय में देखना चाहिये ॥

स्थूल शरीरस्य भोजनं सात्विकं नियामितं साधारणं चास्ति ॥ सुक्षमस्य सदाचारः ॥

भाषार्थ

स्थूल शरीर का भोजन सात्विक नियमित और साधारण है और सूक्षम का सदाचार है ॥

स्थूल शरीरस्य व्याधयो ज्वरः कासः क्षयादि विकारश्च तथैव काम क्रोद्ध लोभादयः सूक्षमस्य ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

स्थूल शरीर की व्याधियां (बिमारियां) ज्वर कास क्षयादि विकार है इसी तरह काम क्रोध लोभादय सूक्ष्म शरीर के रोग हैं ॥

अतिशयः कामो वीर्यं क्षिणोति ॥ अशक्तंच सन्तानोत्पत्तौ ॥ कामी पुरुषः प्रायाल्प सन्ततिर्भवति वा कन्यानामधिकं सम्भवम् ॥

भाषार्थ

अति काम से वीर्य क्षीण होजाता है और सन्तान उत्पति होने से अशक्त होजाता है ॥ कामी पुरुषः प्राय थोड़ी सन्तति वाला होता है वा कन्यावों का जन्म अधिक होता है ॥

ऋतु कालो एकस्मिन्संवत्सरे द्वादशः अथवा त्रिषु वर्षेषु तथैव श्रेष्ट द्वादशः त्रिणि त्रिणि वसन्ते वर्षा शरदि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चैकैक हेमन्ते ग्रीष्मे शिशिरेच इत्थंचे दृश पौरुषान्वितस्य पुरुषस्य बलवती दीर्घायुश्च सन्ततेरुत्पत्तिं सम्भाव्यते ॥

भाषार्थ

एक संवत्सर में ऋतुकाल बारे है अथवा तीन वर्ष में ही बारे हैं और तीन तीन वसन्त वर्षा और शरदी में और एक एक हेमन्त में ग्रीष्म में और शिशिर ऋतु में इस तरह पौरुषवान पुरुष की बलवान दीर्घायु सन्तान उत्पन्न होती है ॥

॥ तरुण्यावस्था प्रोच्यते ॥

अति शीतले देशे पुरुषस्य पञ्च चत्वारिंशत वर्षाणि यावदुत्तमतारुण्य प्रारम्भः स्त्रियाश्च त्रिंशद्यावत् ॥ मध्यमं पुरुषस्य च तारुण्यं पञ्च विंशति वर्षा णि स्त्रियाश्च विंशति ॥ कनिष्टं तारुण्यं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरुषस्याष्टादश वर्षाणि स्त्रियास्तु षोडशः ॥

भाषार्थ

अति शीतल देश में पुरुष की पैंतालीस वर्ष में उत्तम तरुण (जवान) अवस्था सरु होती है और स्त्री की तीस वर्ष की ॥ मध्यम पुरुष की पचीस वर्ष में और स्त्री की वीस वर्ष में ॥ कनिष्ट पुरुष की अठारे वर्षों में और स्त्री की सोले वर्षों में ॥

साधारणेच्च नाति शीतोष्णे देशे उत्तमं पुरुषस्य तारुण्यं पञ्चविंशति वर्षाणि स्त्रियाश्च विंशति ॥ मध्यमं पुरुषस्याष्टादशः स्त्रियास्तु षोडशः ॥ कनिष्ट तु पुरुषस्य षोडश वर्षाणि स्त्रियास्तु त्रयोदश ॥

भाषार्थ

साधारण देश (न अति ठंडा न अति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गर्म) पुरुष की उत्तम तरुण अवस्था पचीस वर्ष में और स्त्री की वीस वर्षों की ॥ मध्यम पुरुष की अठारे वर्षों में और स्त्री की सोले वर्षों में ॥ कनिष्ट पुरुष की सोले वर्षों में और स्त्री की तेरे वर्षों में ॥

अत्युष्ण देशेच्च पुरुषस्य विंशति वर्षाणि यावदुत्तमं तारुण्यं स्त्रियास्तु षोडश वर्षाणि ॥ तदेव मध्यमं पुरुषस्य ष्टादश वर्षाणि स्त्रियास्तु चतुर्दशःकानिष्ट तत्र तारुण्यं पुरुषस्य षोडश वर्षाणि स्त्रियास्तु द्वादशः ॥

भाषार्थ

अति उष्ण देश में पुरुष की वीस वर्षों में उत्तम तरुण अवस्था और स्त्री की सोले वर्षों में ॥ मध्यम पुरुष की अठारे वर्षों में और स्त्री की चवदे वर्षों में ॥ कनिष्ट पुरुष की सोले वर्षों में और स्त्री की बारे वर्षों में तरुण अवस्था आती है ॥

——:※:——

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ चतुर्थोपदेश ॥

बुद्धिः कर्मयोगः न्यायश्च

ज्ञानेच्छा कृतिभिरेव स्वार्थिकी पारमार्थिक्यौ बुद्धौः सम्भवः अनेकासु योनिषु मनुष्य योनि (शरीर) माययै दृशी रचिता ययानेकजन्माभिनिष्पादितानि शुभाशुभानि कर्माणि मनुजो विशिष्य दुरितावहानि सुकृतावहानि वा सुसम्पादायितुम् शक्नुयात् ॥

भाषार्थ

बुद्धि कर्मयोग और न्याय ज्ञान इच्छा और क्रियावों से स्वार्थिकी और पारमार्थिक बुद्धियों का होना सम्भव है ॥ अनेक योनियों (शरीर) में मनुष्य शरीर माया से एसा रचा है ॥ जिससे अनेक जन्मों से किया हुआ शुभ अशुभ कर्म

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनुष्य विशेष करके ठीक करसक्ता वा बिगाड़ सक्ता है ये मनुष्य के आधीन (इख्त्यार) में है ॥

यदि स यत्किञ्चित्सु सम्पाद्यं दुस्सम्पाद्यं वा कर्तुमिच्छेन्नास्ति तस्य किमपि दुष्करं यथाऽसौ नरः स्वार्थिक कर्मरतो भूत्वा स्व सर्वस्व विनाशयेत तथैव पारमार्थिकेषु कृत्येषु रतश्चेत स्वकीयं सर्वस्वं संसाधयेत् ॥

भाषार्थ

यदि मनुष्य कुछ भी सुधारना चाहता है वा बिगाड़ना चाहे तो कुछ भी मुस्किल मनुष्य के लिये नहीं है जैसे ये मनुष्य स्वार्थिक कर्मो में लगा हुवा अपना सर्वस्व बिगाड़ लेता है इसी तरह पारमार्थिकार्यों में लगा हुआ अपणी सारी बातें सुधार लेता है ॥

मायया मनुजः स्वेच्छाचरण शी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेव रचितः स्वार्थिक्या बुद्धया कार्य विधानेनरस्याल्पतरोलाभोल्पञ्च सुखम् ॥ संजायते मुहुर्मुहु निकृष्ट (कपूय) योनिषु जन्मापि एवमेव पारमार्थिक्या बुद्धयाच महाँल्लाभोनन्तसुखमखण्डितञ्च महद्योनिषु जन्मापि भवति ॥

भाषार्थ

मायाने मनुष्य को अपणी इच्छा माफिक चलने वाला रचा है ॥ स्वार्थिक बुद्धि से कार्य करने से थोड़ा लाभ थोड़ा सुख होता है और वार वार नीच योनियों जन्म लेता है इसी तरह पारमार्थिक बुद्धि से महान लाभ अनन्त अखंडित सुख मिलता है और वार वार उत्तम योनियों में जन्म पाता है ॥

स्वभाव परिमाणेन स्थावरे जंगमेषूच्चेषुनीचेषुयोनिषुजीवो संजाय-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते ॥ बुद्धिकर्मानुसारिणी वर्त्तमाना तथैवच॥ तस्मात्कर्म शुद्धारयेत् पुरुषो हिसुविचारतः सुखंतु पुरुषार्थेन नान्यथाचान्यकर्मणा ॥

भावार्थ

स्वभाव परिमाणे चराचरमें उच्चनीच योनियों मे जन्म पाता है ॥ बुद्धिकर्मानुसारिणी है चाहे इस जन्म के हो चाहे पूर्वके ॥ इस वास्ते पुरुष अपने अच्छे विचारों से कर्मों को शुद्धारे ॥ सुखतो पुरुषार्थ है न और तरह से और और कर्मों से ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ पंचमोपदेश ॥

पुरुषार्थः

हे पुरुष मात्याक्षी पुरुषार्थम् ॥ पुरुषार्थं कृतिममेवाज्ञाः सोममैव स्वरूपंच ॥ यस्मिन्नहंनिवशामि ॥ सोऽप्यहमेवास्मिच ॥

भाषार्थ

हे पुरुषः पुरुषार्थ को मत छोड़ ॥ पुरुषार्थ करना मेरी आज्ञा है वह पुरुषार्थ मेरा ही सरूप है ॥ जिसमें मैं निवाश करता हूं और पुरुषार्थ भी मैंही हूं ॥

पूर्वास्मिन्मनुजशरीरेण कृतस्य पुरुषार्थस्य फलेन्नास्मिँल्लोके सौख्येन लाभेनच इदानि प्राप्तेन भूयते ॥ न चैतत्केनाप्यन्यथा कर्तुंशक्यते ॥ पुरु-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पार्थी वीर सुभटोऽस्मिँल्लोके सर्वस्वं जयति स्वर्गमपि तथैवच ॥ तस्या संततिरपीहलोकेऽखण्डितया कीर्त्या सह सुखेन सुस्थिरया तिष्ठति ॥

भावार्थ

पूर्व जन्म मे इस मनुष्य शरीर से किये हुवे पुरुषार्थ के ही फल से इस लोक मे सुख और लाभ पाता रहता है जिसको कोई और तरह नहीं करसक्ता है ॥ पुरुषार्थी वीर सुभट इस लोक मे सर्व पासक्ता है वा जीत सक्ता है और इसी तरह स्वर्ग को भी ॥ और उसकी संतति भी इस लोक में अखण्ड कीर्ति (जस) और सुख के साथ स्थिर रहती है ॥

एतद्विद्याऽभावेन सुविचारहीना तथा तेजोसुमति पराक्रम श्रद्धा शक्ति पुरुषार्थहीना प्रदुष्यन्ति मम माया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकृति भाग्यं कर्म तथा मामपि परं मनुज शरीराय न कोप्यहमवशेषितम् मनुष्यः मामपि वशं (स्वाधीन) कर्तुं शक्नोति। यदि स्वार्थ सुख मथिल्या म धिकतां त्यक्त्वा शुद्ध भावेन पुरुषार्थं च करोति सार्वकालं सत युगैव प्रवर्तते सर्वा संसाध्यते॥ विशुद्ध ज्ञाने न शक्ति पुरुषार्थैन यंयं चिन्तयते कामं तंतं प्राप्नोति ॥ सर्वयुपयोग्यभ्यासे परिपूर्ण योग्यता सर्वांच प्राप्यते ॥

भाषार्थ

इस विद्या के अभाव से अच्छा विचार तेज आछी बुद्धि बल श्रद्धा शक्ति और पुरुषार्थ से हीन मेरी प्रकृति मायाको भाग्यको कर्मोको और मेरे को भी दोष लगाते हैं परन्त मनुष्य शरीर के लिये मैंने कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा है मनुष्य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेरे को भी अपने वशकर सकता है, यदि स्वार्थ सुख ओर सैथिल्यकी अधिकता को छोड़ता हुआ शुद्ध भाव से पुरुषार्थ करता है वह सब समय सतयुग ही वर्तता है और सबको साभलेता है ॥ शुद्ध ज्ञानवाला मनुष्य शक्ति पुरुषार्थ से जो जो काम चाहता है (चिन्तवन) करता है उनको वह हासल करलेता है॥ सब उपयोगी अभ्यासमें परिपूर्ण योग्यता से सब सिधियों को अपने आप पा लेता है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोमपाठ १ राज्य सम्भवः सेवक्षात्रियाणां षट्त्रिंशल्लक्षणाः ॥

शुद्धभावेन मनुज शरीरं प्राप्यते तस्मिन्विचार शक्तिः विशेषः (अधिकः) तया च शक्तेः सुमतेर्विशुद्ध ज्ञानं सम्भाव्यते ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महादेवी प्रश्न—को राज्यं शास्ति ईश्वर उवाच–शक्ति पराक्रम सुमतिः तयोर्योगश्च ॥

पराक्रमस्य प्रयोजनं रक्षा—तस्मै समुत्साहिता तद्योगश्चेदशः प्रति समयं शरीरेन्द्रिय संयम (स्वाधीनमेव) ताभ्यां बलपौरुषौ ताभ्यां पथ्येन व्यायाम परिश्रमेऽभ्यासंच समीक्षण तथैव वाहनामस्त्र शस्त्राणामभ्यासे प्रीति रक्षार्थमतत्पश्चात्प्रजानां प्रत्येक जनानां प्राना स्वतंत्रता द्रव्यांचेश्वर भावेन सहः रक्षणम् उपयोगीस्थावरजगमपि तथैवच । सुमते प्रयोजनं न्यायः—तस्मै समुत्साहिता तद्योगश्चापीदशः स्वशुद्ध भावना ब्रह्मचर्य्यम् स्ववीर्यं रक्षणम् वीर पौरुषम् धर्मम् स्वजातिमर्यादया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवाहमैक्यम् परस्पर स्नेह प्रीति सहा·
य्यम् स्वदेशमात् भमौ प्रीतिः शुभ
[illegible] संगमः वृद्धैः प्राज्ञैः सज्जनैः
सहः सभा सम्मतिः प्रीति मातृभाषा·
स्वदेश शुद्ध भोजनम् सहवीरवेषम्
प्रजानां हितमिच्छता सुखशान्त्यारो·
ग्यता सम्पदां समृद्धिच सम्वर्द्धनम्
उपयोगीचराचरमपि

भावार्थ

श्रीमत्परमपवित्र सोम पाठ १ राज्य सम्भवः राज्य के योग होना यहां क्षत्रियों के ३६ छत्तीश लक्षण है शुद्ध भावना से मनुष्य के शरीर की प्राप्ती है जिसमें विचारशक्ति विशेष है विचारश· क्ति से बल और बुद्धि का शुद्ध ज्ञानकी प्राप्तिहै।

महादेवी प्रश्न करती है—राज्य कोन करता है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ॐ शिव ॥

१ शरीरेन्द्रिय संयम:
स्वेच्छ दरमेव
२ समुत्साह पुरुषार्थ
३ बल पौरुष: सत्साह:
४ पथ्येन व्यायाम
५ परिश्रमेऽभ्यास:
६ शास्त्राध्ययनम्
अभ्यास यथार्थं
नव प्रति दिने
७ वाहनानामभ्या
स:
८ समस्त नाति
नामैक्यता
योग्यता

१ स्वधर्म न्याय मर्यादा प्रबन्ध रक्षणम् ।
२ प्रजानां धर्म शरीर प्राण स्वातंत्र्य द्रव्य
धन वित्तं च रक्षणम् ।
३ प्रजानां सदाचार कुल परंपरा रक्ष
णम् ।
४ प्रजानां घर मठ मंदिर धर्मशाला
पवित्र स्थान यज्ञ कर्माणि धर्मकार्या
णि रक्षणम् ।
५ [illegible] गिरि पर्वत नद्य सागर [illegible] वनौ
षधीषु रक्षणम्
६ प्रजानामुपयोगी पशवस्तथा तेषां
[illegible] रक्षित भूमि रक्षणम् ।
७ सर्वे उपयोगी ~~स्थावर जंगमं रक्षणम्~~ ।
८ स्वदेश मात्र
भूमि:

१ प्रजा मण्डलाध्यायम्
२ यावच्छक्य स्वदेश शुद्धि नो
न्नतम्
३ स्ववीर क्षेमम् सन्यम्
४ यथार्थ निर्णय:
५ निष्पक्षता
६ प्रजा हितार्थ धर्मेणाय
साधनोपाय:
७ धर्मेण सुख शान्ति: स्थि
तिश्च प्रबन्धानां स्थैयम्
८ वायु जल शुद्धि: प्रजा [illegible]
रोगमुक्ता उपाय:
९ सर्वे उपयोगी [illegible]
न्याय: दया धर्माहिंसा
जैसे प्रवृत्ति:
१० धर्मेण प्रजासु समृद्धि
संपदा संवर्धनम् ॥

१ शुद्ध भावना
२ उत्तम भाव
३ ईश्वर स्वभाव
४ [illegible] मर्याद
या विवाह [illegible]
५ परस्पर स्नेह प्रीति:
सहायता धर्मगुरु
[illegible] महोत्सव
६ स्वदेश मातृभूमि
[illegible] चिन्ता
मग्न
७ संगम: प्राज्ञै: पण्डितै:
[illegible] जगदनुना
[illegible] स्वार्थ निस्पृह:
निज स्वामीन: शुल
चिन्ता [illegible]
८ प्रजानां सन्मार्गे प्रवर्तनम्

[illegible]

पाठ १

हावि [illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ईश्वर ने कहा-बल और बुद्धि और इन दोनुका योग बल का प्रयोजन रक्षा है और रक्षा करने मे उत्साह हो रक्षा का योग इस तरह है-प्रति समय शरीर इन्द्रियों को अपने वश मे रखे इसमे बल पोरुष होता है और बल पोरुष होने से परहेज के साथ कसरत करे और मेहनत का अभ्यास रखे इसी तरह वाहनों का और अस्त्र शस्त्रों के अभ्यास मे प्रीति रक्षा के वास्ते रखे तिस पीछे प्रजा के शरीर प्राण स्वातंत्र और द्रव्य की रक्षा करे मालकी भाव के साथ और इसी तरह उपयोगी चराचर की भी।

अच्छी बुद्धि से प्रयोजन न्याय है और न्याय करने मे उत्साह हो न्याय करने का योग इस तरह पर है-अपनी भावना शुद्ध रखे ब्रह्मचर्य याने अपने वीर्य की रक्षा रखे पुरुषार्थ-धर्म मर्याद मे अपनी जाति मे विवाह करे एकयता भाव रखे आपस मे स्नेह प्रीति और सहायता करता रहे अपनी मातृ देश भूमि से प्रीति और उसका शुभ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

।चिंतक रहै संगत मे बुद्दे बुद्धिमान पण्डित और सज्जनों के साथ सभा सम्मति रखे मातृ भाषा से प्रीति रखे अपना देशी शुद्ध भोजन करे अपना देशी ही धीर वेष रखे फेर प्रजा के हित चाहने वाले हो प्रजा को सुख शान्ती आरोग्यता संपदा और धन धान्य मे पूर्ण रखे और उपयोगी स्थावर जंगमों के साथ भी न्याय वर्ते ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ २

राज्य स्थापनम् ॥

महादेवी प्रश्न–प्रत्येक व्यक्तेः वा सर्वेषां व्यक्तीनांच को मुख्यो धर्मोऽस्ति ॥
ईश्वर उवाच–धर्मदृशा शान्ति प्रबन्धेन सहिता सप्रेमणा प्रभोराज्ञा पालनीयम्॥
अहार सुख दुःखादि ज्ञानमापि (शुक्र) वृक्ष वनस्पत्याद्यचराः चरे मनुष्य पशवः ते सर्वेऽहार सुख दुःख भयक्रोध निद्रा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोह स्पर्श मैथुन प्रसूति पालनादि तीव्र ज्ञानेन सह: विचार: समानभावे नाल्प: प्रवर्त्तते परं मनुष्येष्वाधिको विचार शक्ति तथैश्वर ज्ञानं भवति तच्च सुक्ष्मंत्रिधा: अवधि: मनोपरं केवलंच तेभ्यो: परंपद प्राप्ती॥ स्थूल ज्ञानं मति: श्रुतिश्च ताभ्यां विज्ञानोत्साह: तस्मा- द्धर्म: धर्मेणेष्ट: इष्टेन वीरता तया जि- तेन्द्रियत्वम् तया बलपोरुषौ बलेन बुद्धि: ताभ्यां पुरुषार्थ: तेनैव राज्यम्॥ तत्प्रासिध राज्य यस्मिन्प्रथक् मुद्रायंत्र तुला प्रमाणम् तथा पृथक् समाचार पत्रालया: शुल्कालया: राज्य शपथश्च॥ एकाप्रसिध जाति ध्वजाचोति सापि रागाकृति चिन्है स्वै: स्वै: पृथक् पृथक्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ २ राज्यकी स्थापना ॥ महादेवी प्रश्न करती है-प्रत्येक व्यक्ति वा सर्व व्यक्ती वा समस्त जातियों का धर्म क्या है। ईश्वरने कहा-धर्म हर्षो के साथ और शान्ति और प्रबन्ध के साथ हो वह आज्ञा अपने मालक की प्रेम के साथ मानने योग्य है अहार सुख दुःखादि ज्ञान के साथ वृक्ष वनस्पत्यादि अचर है और चरों पे मनुष्य पशू वे अहार सुख दुःख भय क्रोध निद्रा मोह मैथुन और प्रसूते (बच्चे) पाळने आदि का तेज ज्ञान है और विचार मामान्य भाव में अल्प है परंतु मनुष्य मे विचारशक्ति अधिक (जादा) है जिससे ईश्वर ज्ञान भी हो जाता है वह सूक्षम रूप से तीन तरह का है- -अवधि-मनपरे और केवल जिनसे परम पद की प्राप्ती होजाती है ॥

स्थूल ज्ञानमति और श्रुति का है जिस्से विज्ञान (तर्क) की उत्साह होजाता है और विज्ञान से

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

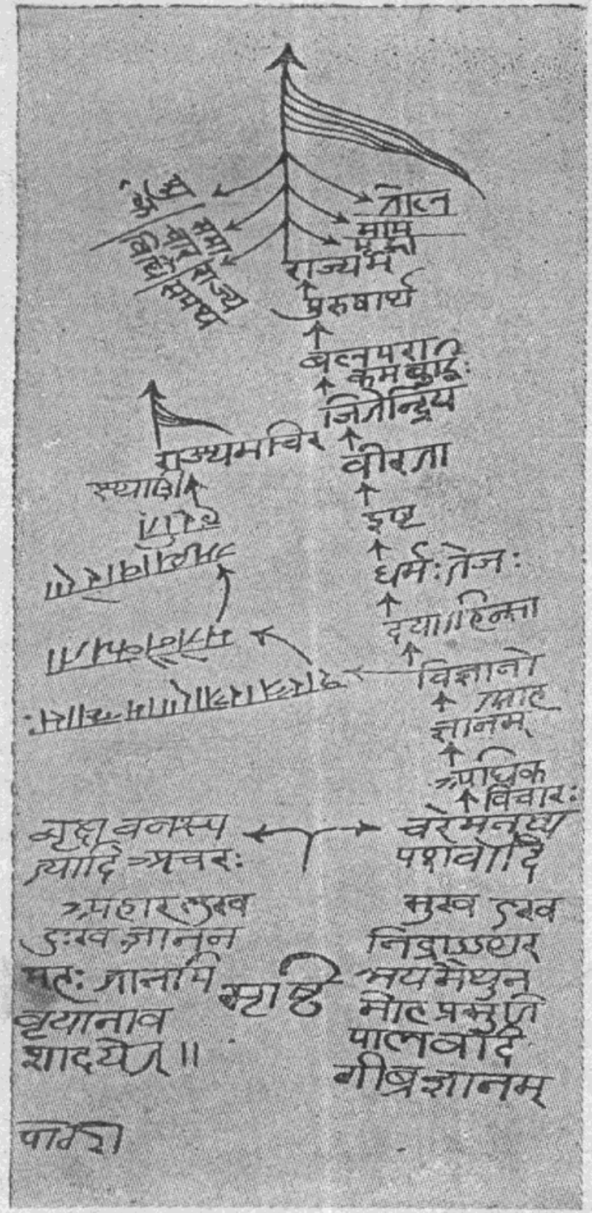

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्म धर्म से इष्ट इष्ट से वीरता वीरता से जितेन्द्रिय पन्न इस्से बल बल से बुद्धि और बल बुद्धि इन दोनु से पुरुषार्थ कीया जाय सोही राज्य है ॥ वह प्रसिध राज्य जब है जिसमे मुद्रा माप और तोल जुदा है और समाचार पत्रालय डाणघर और आन चलती हो और एक प्रसिध जाति ध्वजा रंग और निशान से जुदि हो ॥

श्रीमत्परम पवित्र साम पाठ ३

किमर्थं राज्यं समर्पणम् ॥ सृष्टिरियं मया राजसु निक्षेप इव समर्पिता एनां संततं वृद्धि कुर्युः भूभृद्भ्यः स्वप्रभुणा राज्यमे तदर्थ समर्पितम् यतैर्लोक हितैषिभिः प्रजानुरंजन शीलैश्च भाव्यम् नतुस्वा· त्म भोग तत्परैर्भाव्यं केवलम् ॥ राजा स्वसंतति पुत्र निर्विशेषं प्रजां रक्षेत् प्रकृति रंजनात्राजा ॥ योनृपः स्वकर्मणा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाधिकृतानां विपरीत कृत्यानामन लोक्येन प्रजा दुःखं समुत्यादयाति सनूनं निरयंयाति ॥
प्राति समयं कर्मचारिणां योग्यतां समीक्षणीया ॥ क्षत्रविद्यानुसरणंत्यक्त्वा यः प्रजाभ्यो धनमधिगच्छाति सनिरपत्यो भूत्वाऽधोगतिं प्रजायते ॥
एतत्तत्वं सार ज्ञात्वा सम्यक प्रजाः पुत्र निर्वौरसान्पालयेत् तस्य राज्ञः राज्यं सुस्थिरंच स राजा तिष्टतेचिरम् बहुला संततिः सहः ॥

भावार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ३

राज्य किस लिये मिला है ॥

ये सृष्टि मुज से राजावों में एक अमानत धरोवर की तरह सूंपी हुई है इसको हमेसा वृद्धि करते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहैं ॥ राजावों के लिये राज्य इस लिये सूंपा गया है के वे लोक हितैसी होकर रहै और प्रजावों को राजी रखे और उनकी वृद्धि के माफिक चलने वाला हो न की अपने ही भोगों में लगा हुवा रहे॥ राजा अपने पुत्र संतति से भी विशेष प्रजा की रक्षा करता रहे प्रजा को राजी रखने वाला राजा है ॥ जो राजा अपने कामों से वा कर्मचारियों के विपरीत कामों से वा उनके विपरीत कामों को न देखकर प्रजा को दुःख पोचाता है वह निश्चय नर्क को जाता है॥ हर समय कर्मचारियों की योग्यता देखता रहे ॥ क्षात्र विद्या के अनुसरण को छोड़ के जो प्रजा से धन लेता है वह निस्संतान होकर नीच गति को पाता है ॥ इस तत्व के सार को जानता हुवा समस्त प्रजावों को अपने पुत्रों से विशष पालता रहै उस राजा का राज्य स्थिर बना रहता है और वह राजा बहुत काल तक बहोत संतति (परिवार) के साथ राज्य सुख शान्ति से करता है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ४
राज्य स्थैर्यम् ॥ सैश्वर्य्यं क्षत्रिया वीरा प्रबद्ध्या भूमिः शासने (भूमि प्रदाने नेश्वर भावेन सह) ॥ नैश्चल्यं लभते भूपो राज्यंहि स्थिरतां तथा ॥ वीर क्षत्रियान् भूमे रक्षकान विधाय तेभ्यो भूमि विभाग प्रदानमेव एतेवै वाङ्कायः मनः प्राणैर्धनैश्च सर्वथा स्वामि रक्षार्थं परिकर बद्धा प्रयतां नित्यं यत्नमातिष्टेयुः पृथक् नियतां वार्षिकां राज्य सेवा नियतकर प्रदानञ्च दद्युः एषां योग्यता प्रति वर्षमेकदा स्वामिना परीक्षणीया॥ धनकोषो गुप्तः प्रकाशितश्च द्वेधा विधेयः तथैव सेनापि ॥ सैनिक सामग्री तथैवच॥ गुप्त सेना प्रायः सामन्तामेव तथा समुद्राकाश सेना पर्वत मस्तके वा समुद्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तदे सुदृढमेव ॥ भूचरा खेचराश्च जल-चरा सेना विषमे स्थाने पाताले प्रति समयं सम्यता बलान्विता सुदृढमेव ॥ सम्य दुर्ग सेना तथैवच ॥ क्षात्रियाणां भूप्राप्ति फलंतु सर्वेषु तत्त्वेषु प्रभूत्वमेवच स्वाधिकार एव ॥ कस्याचिद्राज्यस्या-धिकारे बहुना क्षत्रियाणां स्वामित्वं तस्य समग्रस्य राजस्य भूमौ तस्य रा-जस्य स्थिरतामखण्डतां करोति ॥ ईदृश राजाविद्या शिक्षिता क्षत्रियाणां प्रभुत्वानि तस्य राज्यस्य मूलानि ज्ञात्वा प्रभवान्ति यावान्त तावन्त्येव राज्य स्थिरतां सहतु भूतानि चैवतानि न्यूनानि भवान्ति स्थैर्यं विनाशकानि च जायन्ते ॥

एकाकी केवलो राजा वेतन परिग्रहीत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेनाभिः कार्हिचित्सलयग्रामं प्राप्य राज्यात् ध्वंसते ॥ वहु सामन्ताश्च भूस्याधिपतयः राजा स्थारिथरतां दृढं करोति ॥ मूलानि तथा वृक्षस्यैक सवन्धेन वृक्षस्यास्थिति ॥

सम्राट रूप वृक्षः सः मुलान्याश्रत् स्थिरः तस्य प्रधान मुलानि बलपक्षे महाराजानैव तथैव बुद्धिः पक्षे बुधा क्षात्रिया जगदनुभाहुका ब्राह्मणा वैश्या वा पश्चात्स्थूलतम बलपक्षे सामन्ता (महाराव) तथैव बुद्धिः पक्षे बुद्धा क्षत्रिया राजाविद्या पाण्डता वा ब्राह्मणा वैश्याना तत्पश्चात्स्थूलतर बलपक्षे राजान् (राव) तथैव बुद्धिः पक्षे प्राजा स्वार्थाधिकता स्तुनिस्पृहः ॥ बलपक्षे स्थूल मुलानि ग्रामाधि पतयः तथैव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बुधि पक्षे स्वामीनः शुभचिन्तका क्षात्रि· या ब्राह्मणा वैश्या वा राजविद्या ज्ञाता ॥ वृक्षस्य मूलानि भूम्याधिपतयः बलपक्षे नश्चैव बुद्धि पक्षे सर्वोपरी परिज्ञाता क्षात्रिया ब्राह्मणा वैश्या वा ॥

मूलान्यधं संबन्धेनाधस्य स्थितिः ॥ निसंबन्धेन प्रत्येक्ष विनाशः वृक्षाणां मूलयु भूमि ददाति नीरं शुद्धा रस परंत न्य येन ददाति पावकः तेन त मूलानि प्रदहन्ति वृक्षश्च विनश्यति ॥

केवलो वेतन परिगृहीत सेना रूपेण मूलानि स्यकदापि पृथिवी तलान्नीर शुद्धारसं नाकुपन्ति तेपां मूलान्याप्यो र्द्ध सजायन्ते न चागाधः स्थितश्च ते सर्वे वेतन संज्ञकनीरम् ॥ शुद्धा रस मिच्छन्ति राजभ्या परेभ्यश्च न तु स्व·

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यमाकर्षणकर्तुं शक्नुवन्ते अक्षय वट वृक्षस्य मूलानि वृक्षस्य स्थितिरास्ति तथैव शाखा तेषां मूलान्यपि राजरूप वृक्षं सुदृढं करोति एवमेवाऽधिकशाखाऽधिक दार्ढ्यम् ईदृशं वृक्षं न वायुकोपविचालतुं शक्नोति तथैव वीर सुभट क्षत्रियेभ्यः भूमि विभाग प्रदानम् राज्य सुस्थिर दृढ करोति न कोपि हर्तुं शक्नोति ॥

कश्चिद्राज्यस्य सर्वं भूमि काञ्चन कल्प लतैवास्तरणमेवानन्त रत्नमयी सविस्तरेण प्रसराति तमपर सेना नायकाः राजविद्याऽभावेन तेषां स्वभावेन हर्तुमिच्छन्ति यदि तद्भूम्युत्तमास्तरणं बहु सामन्तानामधिनत्वेन स्वामी भावेन सहः नास्ति । बहुनि सामन्तानां भू-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म्याधिपतिनां तले दृढ स्थितां न कोपि हर्तुं मिच्छाति न च हर्तुं शक्नोति न्यून तराधिकारं हर्तुं शक्नोति इच्छाति हसाति पृथिवी सर्वं भोगेश्वर्यं पदार्थानिमाक्रमण करोति तथैवाधिकाधिक बल बुद्धयाधि कार दृष्ट्वा प्रतिगच्छन्ति ॥

बलेन रक्षा बुद्धेः प्रयोजनं न्याय । रक्षा न्याये पश्येत संततम् स राजा मनोऽ भिलाषितं फल प्राप्यते यदि सैथिल्यं करोति कल्प वृक्षस्य फलान्य परापि प्राप्यन्ते वृक्षछेतुंमपि शक्नुवन्तो ।

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ४

राज्य की स्थिरता ॥

मालकी भाव के साथ वीर क्षत्रिय भुमि के साथ बन्धे हुवे याने भूमि देकर राजा अपने जागीर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दार बना रक्खे इस तरह का शासन करने वाला राजा निश्चलता को पाता है और उसका राज्य स्थिर होजाता है। वीर क्षत्रियों को भूमि के रक्षक मुकरिर करके याने अपने जागीरदार बना के भूमि का विभाग दे और वे वाणि शरीर और मन से प्राण और धन के साथ सब तरह से अपने स्वामी की रक्षा के लिये हमेसा यत्न के साथ कमर बान्धे हुवे तयार रहैं और मुकरिर की हुई वार्षिक राज्य सेवा और कर देते रहैं॥ इनकी योग्यता प्रति वर्ष में एकवार मालिक से देखी जानी चाहिये॥ धन का खजाना गुप्त और प्रकाश दो तरह मे हो इसी तरह सेना भी और ऐसे ही सेना सामग्री॥ गुप्त सेना अस्वसर सामन्तों की हो तथा समुद्र आकाश सेना पर्वत के मस्तक मे वा समुद्र के तटपर दृढ रक्खे॥ पृथिवी पर चलने वाली सेना आकाश जल में चलने वाली सेना विषम स्थान में पाताल में प्रति समय अभ्यास पाई हुई और बलवान दृढ रहे इसी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

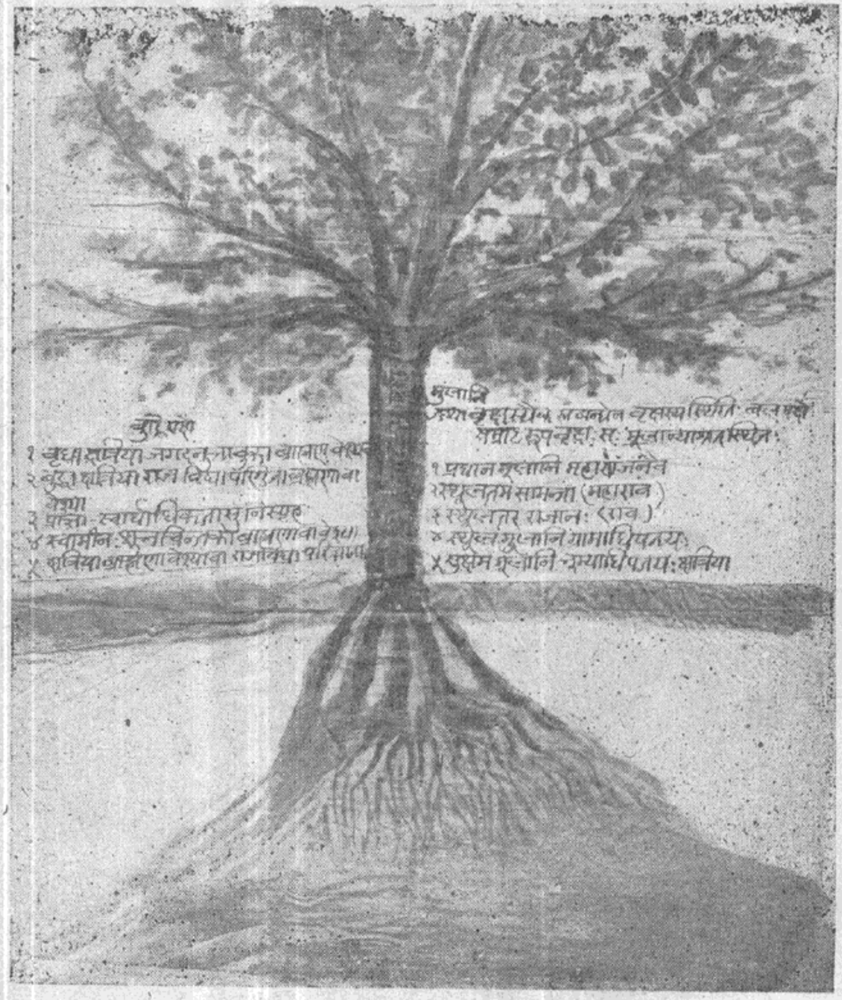

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तरह शिक्षित सभ्य दुर्ग सेना ॥
क्षत्रियों को भूमि दान से मतलब उस भूमि के सारे तत्वों पर मालकी हो याने वहां के सब तत्त्व उनके अधिकार में हो ॥

जिस किसी राजा के अधिकार में बोहत से क्षत्रिय मालकी भाव के साथ होने से उस राज्य की समस्त भूमि में राज्य की स्थिरता को अखण्ड करती है ॥ इस तरह राजविद्या के शिक्षित क्षत्रियों का मालकी भाव उस राज्य की जड़ां और शाखां जब तक स्थिर रहती है तब तक राज्य भी स्थिर रहता है और जब ये शाखां जड़ां जितनी कम होती है उतनी ही स्थिरता की हानियें है॥ राजा सिरफ नोकर सेना ही से कभी समय के फेर में आजाता है और राज्य से भ्रष्ट होजाता है ॥ बोत सामन्त और जागीरदारों मे राजा की स्थिरता को दृढ करता है॥ सिर्फ नोकर फोज रूप जड़ें अपने आप पृथिवी तल से नीर शुद्धारस न खेंच सकती हैं उनकी जड़ें भी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपर को जाती है ऊंडी नहीं जाती वे सब तनषा लाक जल शुद्ध रस चाहती है राजा या दूसरे से अपने आप नहीं खींच सकती है जड़ तथा वृक्ष का एक सम्बन्ध वृक्ष की स्थिति है।

सम्राट रूप वृक्ष जड़ों के आश्रे है उसकी बड़ी जाडी जाडी जड़ें बल पक्ष में महाराजा है इसी तरह बुद्धि पक्ष में वृद्ध क्षात्रिया जगत के तजरूबे कार ब्राह्मण तथा वैश्या फेर उनके बाद जाडी जड़े बल पक्ष में सामन्ता है इसी तरह बुद्धि पक्ष में बुद्धिमान क्षत्रिया राजविद्या के पण्डित ब्राह्मण तथा वैश्या उनके बाद की जाडी जड़ें बलपक्ष में राजा याने राव इसी तरह बुद्धि पक्ष में प्राज्ञा स्वार्थ की अधिकता से निस्पृह (इच्छा न करने वाले) फेर स्थूल जड़ें बल पक्ष में ग्रामाधिपतयः (ठाकर) इसी तरह बुद्धि पक्ष में अपने मालिक का शुभचिंतक क्षत्रिया ब्राह्मण वा वैश्य राजविद्या के जानने वाले फेर सूक्षम जड़े (पतली पतली जड़ें) भूम्याधिपतयः बल पक्ष में इसी तरह बुद्धि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

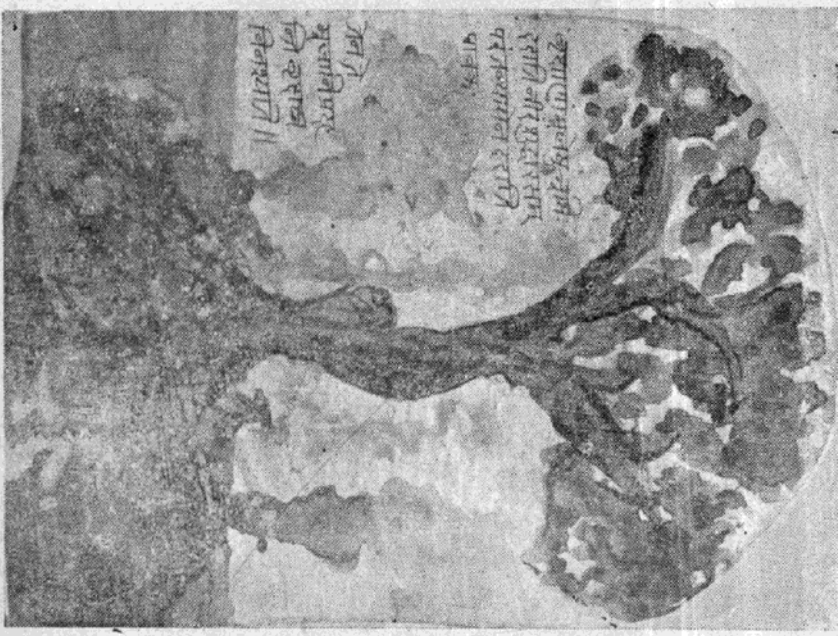

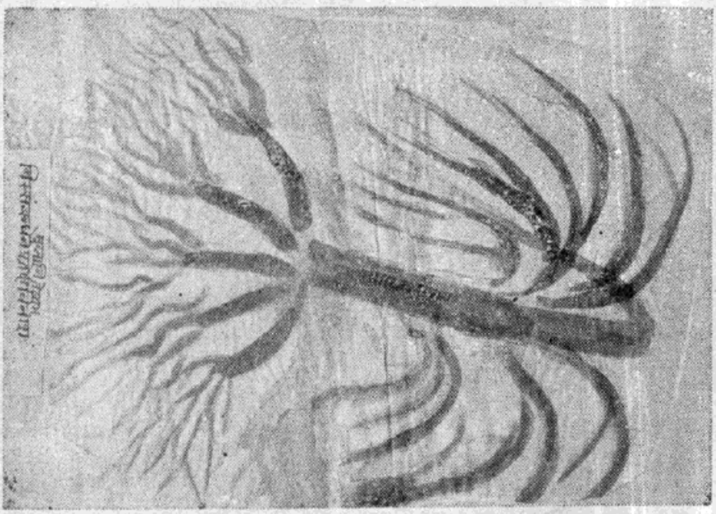

For Private And Personal Use Only

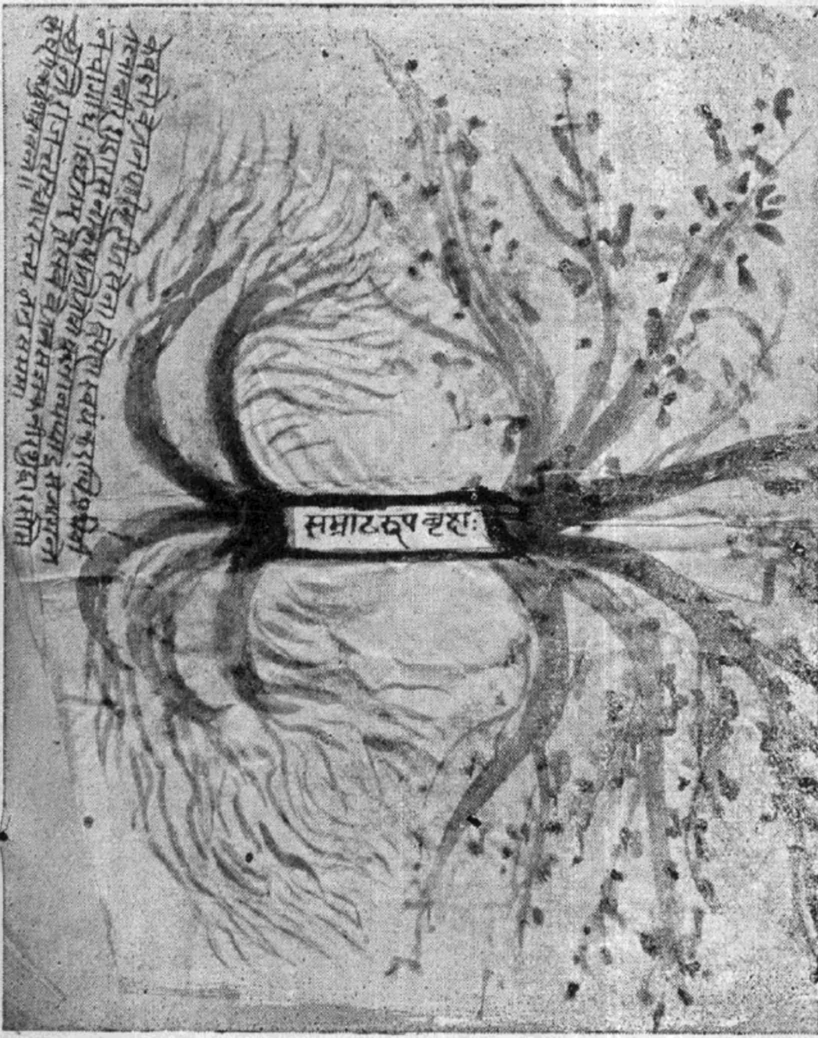
सम्राटरूप वृक्षः

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

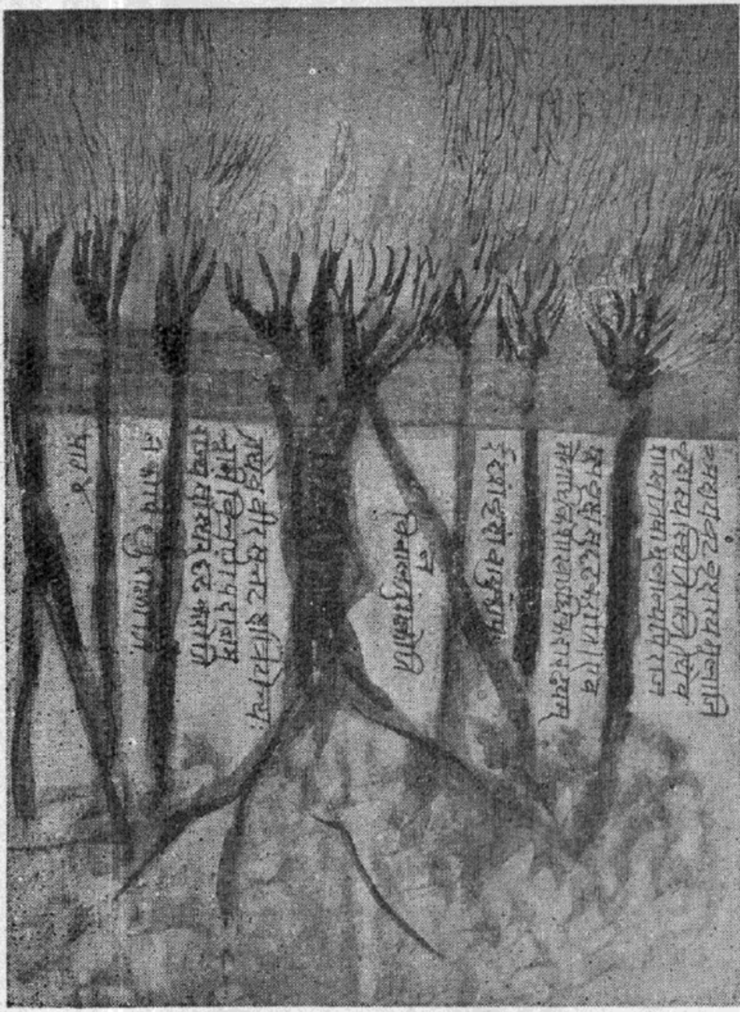

For Private And Personal Use Only

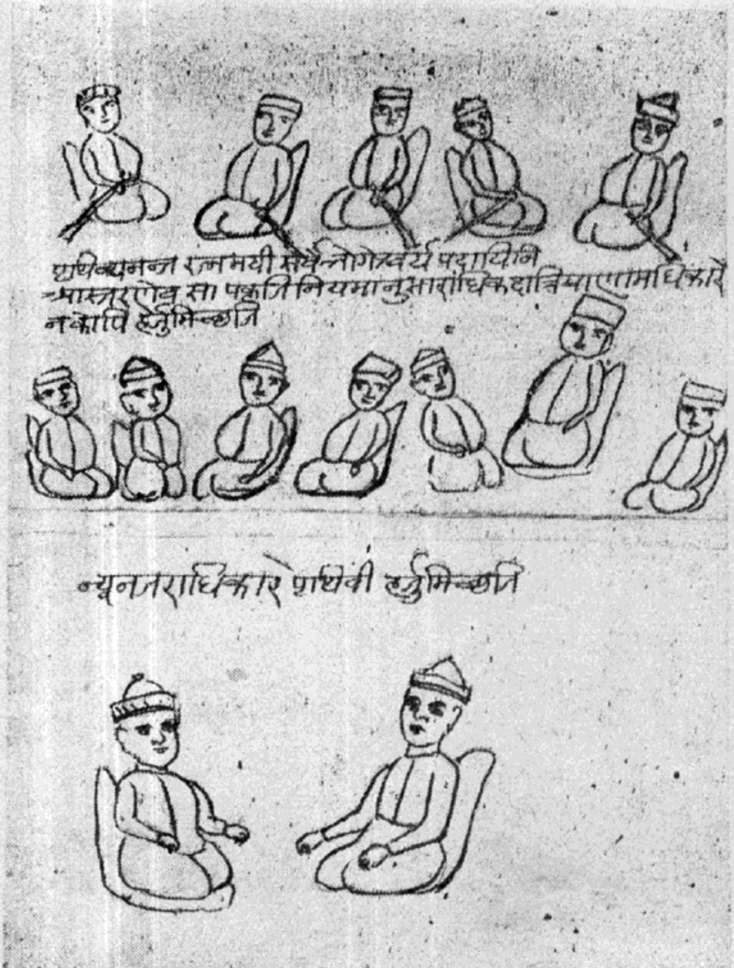
न कापि हर्तुमिच्छति
न्यूनतराधिकारे पृथिवीं हर्तुमिच्छति

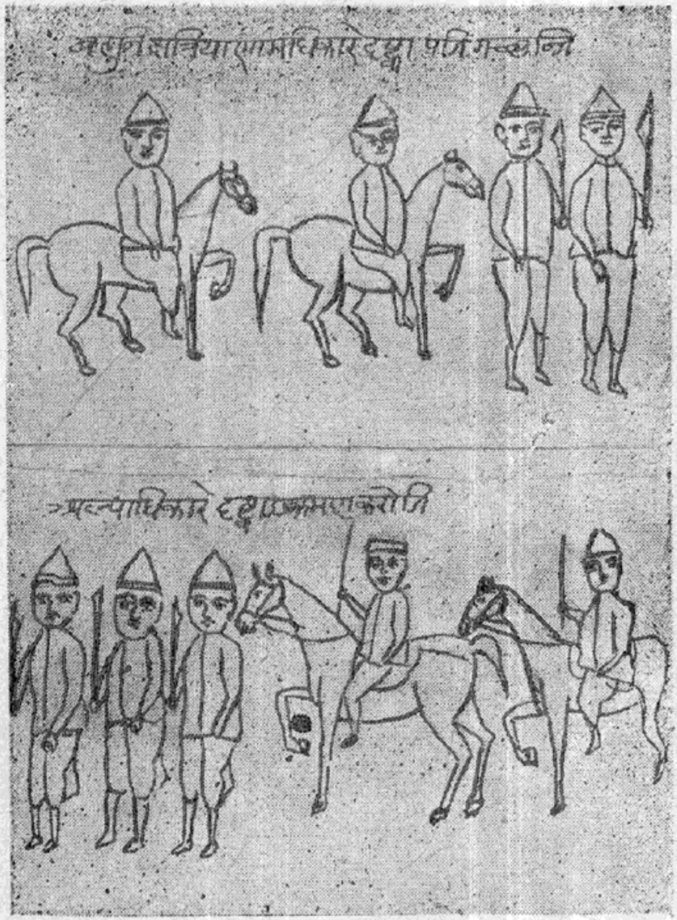
अलुकी क्षत्रिया स्वामाधिकारे दृष्ट्वा पतिं गच्छन्ति
अल्पाधिकारे दृष्ट्वा आक्रमणं करोति

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पक्ष में सर्वोपरी विद्या परिज्ञाता क्षत्रिय ब्राह्मण तथा वैश्या है॥ इन जड़ें और वृक्ष के आधे संबन्ध से आधे वृक्ष की स्थिति है और बिलकुल सम्बन्ध नहीं रहने से प्रतेक्ष नाश है॥ वृक्षों की जड़ों में भूमि जल शुद्ध रस देती है परन्त अन्याय से जड़ों में अग्नि देती है जिस्से जड़ें जल जाती है और वृक्ष नाश होजाता है॥ अक्षय बट वृक्ष की जड़ वृक्ष की स्थिति है इसी तरह उनकी शाखों की जड़ों भी वृक्ष को मजबूत कर देती है इसी तरह अधिक शाखा अधिक मजबूत करती है ऐसे वृक्ष को वायू कोप विचाल नहीं सकता है इस तरह वीर सुभट क्षत्रियों के लिये भूमि का भाग देना (जमीन देना) राज्य को सुस्थिर दृढ करता है उस राज्य को कोई नहीं हर सकता।

किसी राज्य की सब भूमि एक कंचन की कल्प लता की तरह पथरना की तरह अनन्त रत्न सहित विस्तार सहित बिछा हुवा है जिसको

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूसरे सेना नायक राजविद्या अभाव से स्वभाव से रहने की इच्छा करते है यदि वह भूमि उत्तम पथरना मोहत सामन्तों (वीर क्षत्रियों) के आधिन में गालकी भाव के साथ न हो और जो सोहत सामन्तों भूम्याधिपतयों के नीचे दृढ कीये हुवे को कोई हरने की इच्छा न करता है न हर सकते हैं थोड़ों के अधिकार में ले सकते है पृथिवी सब भोग ऐश्वर्य की देने वाली को आक्रमण करते है इसी तरह अधिकाधिक के अधिकार को देखकर पीछे जाते हैं ॥ बल से रक्षा बुद्धि से प्रयोजन न्याय है। रक्षा न्याय को हमेशा देखता रहे वह राजा मन्छाफल को पाता है और रक्षा न्याय में ढीलापल करता है तो कल्प वृक्ष के फल को पराये (दुसरे) हर लेते है और वृक्ष को काट भी डालते है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ९

समीप वर्ग वा सत्संगति येभ्यः मंत्री सेनापतिः राज्यदूत ॥ समीप वर्तिनां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

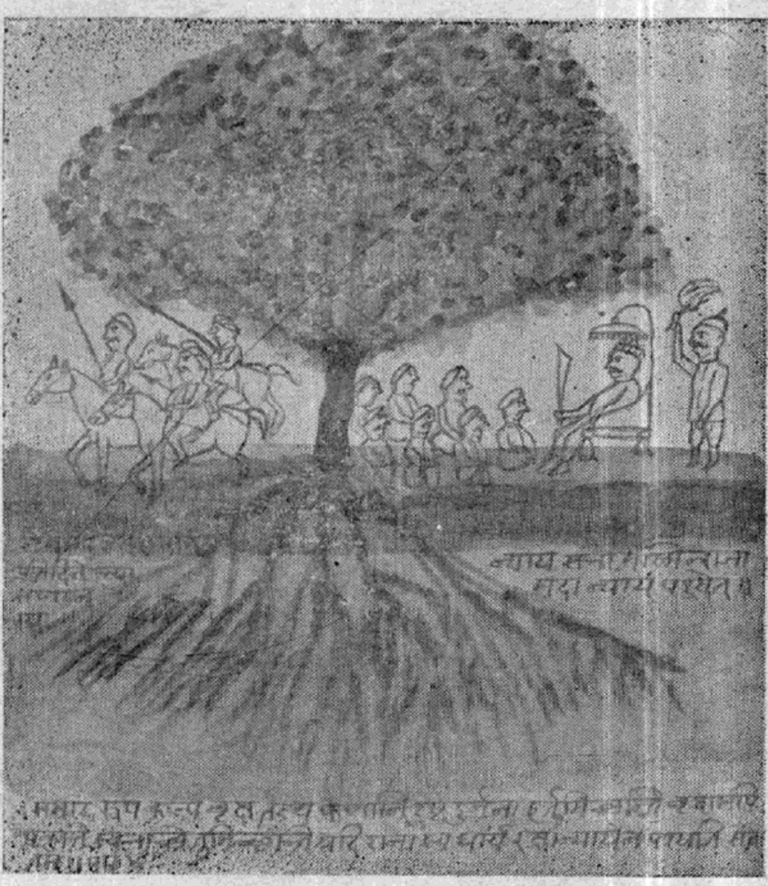

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्मति दातृणां च गुणाः अधीत व्यवहारज्ञम् जगदनुभावुकः स्वार्थनिस्पृहः दूरदर्शीः शुचिः न्याय सत्यरतः कुलीनः धैर्यम् धीमान् शुभाचारः प्रवीणः दक्षः राज हितरतः निज स्वामिनः शुभ चिन्तकः अभ्योग रहितः प्राज्ञ पराचितोपलक्षकः वीरास्त्र शस्त्र राजविद्याभ्यासे परिपूर्णः यावच्चैवस्य सर्वं कर्मचारश्चैक देशस्थमेव वा स्वदेशानि वा शीभवितुमर्हति नतु देशहिताऽनुभव रहिताः ॥ इदानि सुसंगत्या संपादित सुकृत वर्तमान सुखं सहाय्य संपाद्य तद्वृद्धयित्वा च तेषां भाविनां सुखानामुच्च योनौच जन्मनोहेतुः सुकृतं प्रायः सुसंगत्या जायते ॥ सर्वेषु पुरुषेषु सर्वगुणाऽसंभवः वा दुर्लभः महतमेषु श्रेष्ठ तमेष्वपि के-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नचिद्दोषोऽवश्यं भूयते अतः साति स्व-ल्पेपराधे विधेया उपेक्षा माति च तस्य शोभनकृत्य प्रसादः कार्यः एवं विधं वर्त्तनं शुद्धचितष्वेव विधेयं नतु शटेषु वञ्चकेषु धूर्तेषु असत्यवादिषु च एवं विधास्तु दूरतोहि परिहरणीयाः यास्ते षामाचरणं शुद्धतरं स्फुटं परिक्षायां नावगम्यते ॥ एते सर्वैक विंशतिगुणाः न्यूनाधिकेक विंशाति पुरुषेषुतो प्राप्तु शक्नोति । सेव राज्ञां सत्संगाति ॥

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ५

पास रहने वाले और सत्संगति जिनमें से मंत्री सेनापति और राजदूत ॥ पास रहने वाले और सलाह देनेवालों के गुण—वे जगत के व्यवहार को जानन वाले हो ॥ जगत का उनको तजरुबा हो ॥

For Private And Personal Use Only

स्वार्थी न हो ॥ दूर सोचन वाले हो (दूर अंदेश हो) पवित्र हो ॥ न्याय और सत्य में जिनकी रति हो ॥ कुलीन हो ॥ धीरज वान हो ॥ बुद्धि मान हो ॥ शुद्ध चलन के हो जिन के आचरण अच्छे हो ॥ प्रवीण हो ॥ चातुर हो ॥ राज के हित में जिनकी रति हो ॥ अपने मालिक का शुभ चिंतक हो और जिनकी जगत सिकायत न करते हों ॥ पण्डित हो ॥ परायेके चित की बातको लख ले ताहो ॥ वीर हो ॥ अस्त्र शस्त्र और राज विद्या के अभ्यास में परिपूर्ण हो ॥ जहांतक हो सब कर्मचारि एकदेश (स्वदेशी) हो ॥ नकी देश हित के अनुभव से रहित ॥ इन अच्छी संगतियों से सुकृत बन्ता है वह वर्तमान सुख को सहायता कर के उसको बढाकर के आइंदे सुखों के लिये उच्च योनियों में जन्म होनेका कारण होता है सुकृत जादे करके अच्छी संगती से होता है ॥ सब में सब गुण होना असंभव है वा दुर्लभ है बड़े से बड़ों में और अच्छे से अच्छों मेभी कोइन कोइ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दोष अवश्य ही होता है इसवास्ते थोड़े अपराद्ध पर देखा न देखा (आंखटाळी) करना चाहिये और अच्छे करने पर प्रसन होना चाहिये और एसा वर्ताव शुद्ध चितवालों के साथरखे नके शट ठग धूर्त और झूटों के साथ मे और एमे ठग झुटों को दूर ही रखना चाहिये जबतक उनके आचरण साफ तौर से परीक्षा के साथ शुद्ध न हो जावे ॥ ये सैवे इकीस गुण कम जादा इकीस पुरुषोंमे तो होवे ही । सोही राजावों की सत्सम्मति है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ६

राज्यांगानि प्रोच्यंते राज्यशासन स्या-ष्टावंगान्यज समन्तास चिंतयेत् ॥ प्रत्ये-कांगाधिकृतेन राज्ञो मंत्रिणा भाव्यम् ते च प्रत्येकांगाधिकृता सचिव प्रधान मंत्रिणोऽधस्तात् कार्यं विदधीरन् ॥

१ प्रतिदिनं सभ्यता बलान्विता साम-न्ता वशंवदा सेनावेतन परिगृहीत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथैवच

२ धर्मेण सहाय सधनोपायः

३ आय व्यय समीक्षणम् ॥

४ प्रजा सुविविध विद्यानां प्रचारः धर्मोपदेश प्रबन्धः ॥

५ शिल्पौषधालय चिकित्सालय शरीर व्यच्छेदालयानाथालय वायुः जल शुद्धिः पुर स्वच्छतादि प्रजाकार्याः ॥

६ न्यायः मर्यादाश्च ॥

७ अपर नृपैः सहकार्याः तथा स्वराज्यो मिश्रितानां वृतान्तानां पर राष्ट्रेषुच परेषां वृतान्तानां गुप्त पुरुषेणवा चारैः परिज्ञानम् ॥

८ पुन्य धर्म ईश्वराराधनमुपाशनम् विप्राणामधिकारे भूम्यायः तथा रक्षा न्याय प्रबन्धः सर्वे शासनकार्याणि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षत्रियाधीनत्वेन क्रयते तथैव गणि-
तश्च लेखक कार्याणि वैश्य हस्ते ॥
प्रचर्यात्मक कार्माणि शूद्राधिकारे ॥

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ६

राज्य के अंग कहे जाते हैं। राज्य शासन करने के आठ अंगो को ध्यान में रखने चाहिये ॥ प्रत्येक अंग का अधिकृत्य (स्वामी) राज का मंत्री हो और तमाम प्रधान मंत्री के अधिकार में कार्य करते रहैं ॥

१ प्रतिदिन सभ्य (शिक्षिता) बलवान सामन्तों की सेना अपने वश में हो ॥ और इसी तरह नोकर फोजों की सेना भी ॥

२ धर्म के साथ पेदास का उपाव

३ जमा खरच देखता रहै

४ प्रजाओं में तरह तरह की विद्यावों का प्रचार और धर्म प्रचार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ शिल्प औषधालय (सफाखाना) चिकित्सालय चीराफाड़े का घर अनाथ आश्रम वायु जल की शुद्धी ओर पुरस्वच्छता आदि प्रजा के कार्यः

६ न्याय मर्यादा

७ दुसरे राजावों के साथ कार्यः तथा अपने राज्य के भिन्न भिन्न वृतान्तों का दुसरे राजावों में और दुसरों के वृतान्तों को गुप्त वेष पुरुषों करके जान्ता रहे ॥

८ पुन्य धर्म ईश्वर आराधना ॥ ये कार्य ब्राह्मणों के अधिकार में हो पृथिवी की पेदाश तथा रक्षा न्याय के प्रबन्ध और सब हुकम के कार्य सर्वे क्षात्रिय अफसरों के आधीन में हो इसी तरह गणित लेखा कार्य वैश्य के हात में हो॥ और सेवा याने नीचि नोकरीयें शुद्रों के अधिकार में हो ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ७

प्रति दिने सभ्यता शिक्षिता बलान्विता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सामन्तानां वशंवदा सेना वेतन परि-गृहीत तथैवच ॥ सेना च परराष्ट्रेभ्यो रक्षार्थं रक्षाधिकृत पुरुषाणां सहाय्यर्थं च साम्राज्य रक्षार्थैः संग्रह्या ॥ साप्रति दिने सम्भृता बलान्विताऽवश्य मेव ॥ प्रत्येक स्वबलं वा सर्वेषां स्वेषां बान्धवानां संबन्धीनां स्वे स्व सेना बलं न कदापि न्यूनं कुर्यात् येषां सर्वेषमाश्रेहि राज्यम् ॥ सामन्त वेतन परिगृहीत सेना वीर कुलीन धीमान क्षत्रिय समीक्षासु परीक्षिता हस्ते दद्यात् ॥ क्षत्रियाणां मान प्रतिष्ठा स्थिरतार्थे तेभ्यः पृथक् न्यायलयश्च दण्ड सग्रहः न तु मिश्रित सर्व साधारण प्रजानुसारणैव परिवर्तते ॥ यदि क्षत्रियापि सर्व साधारण प्रजानु-सारणैव परिवर्तयन्ति प्रथम तेषां धर्म

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मानस्य महति क्षतिर्जायते द्वितियं च तेषां वीरता महोत्साहश्च नाशजायते विना वीरता न राज्य स्थितिः तृतियं तेषां जात्यभिमानं हीनं जायते तेन च तेऽपि साधारण वृत्तिमवलंबते तेन तद्राज्ञः बल विनश्यति ॥ सर्वे क्षत्रियाणां योग्यता प्रति समये समीक्षणाया ॥ तेषां योग्यतानुसारेण भूमि पतित्वमवश्यं प्रदान मेव ॥ अयं परं सारानुपर्णी राज्यस्य स्थिरतां दृढ करोति ॥ वेतन परिगृहीत सेना केवला चिरकालायोपयोगीः पर महत प्रयोजनाय चिरकालाय ईश्वर भावेन मानेन सह भूमि प्रदानम् तथैव दायविभाग योग्यतानुसारेण दातव्यम् ॥

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ७

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रति दिन शिक्षित सभ्यता बलवान सामन्तों की अपने वश में सेना इसी तरह नोकर सेना॥ सेना पुर और राज्य की रक्षा के लिये हो और रक्षाधिकृत पुरुषों (रखवाल) की सहायता के लिये हो और साम्राज्य की रक्षा के लिये हो॥ वा हमेसा शिक्षित सभ्यता और बलवान अवश्य हो॥ प्रत्येक को अपना वन्श वा अपने समस्त बान्धवों का संबन्धीयों का और अपनी अपनी सेनाबल न कभी भी कम करना चाहिये इन सबों के आश्रे ही राज्य है॥ समस्त वेतन (नोकर) सेना वीर कुलीन बुद्धिमान क्षत्रिय पास शुद्धा की देख भाल मे उसके हात में हो॥ क्षत्रियों की मान प्रतिष्टा स्थिरता के लिये उनके लिये जुदा न्यायालय और दण्ड संग्रह हो न के मिले हुवे सर्व साधारण प्रजा के साथ वर्ते जाय और जो क्षत्रिय भी सर्व साधारण प्रजाके माफिक वर्तेजाय तो प्रथम उनके धर्म और मान की बडी हानि होती है दुसरा उन की वीरता और मनोत्साह का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाश होजाता है और विना वीरता राज्य कीस्थि-ति नहींहै तीसरा इसतरेह वर्तनेसे उनका जाति अभिमान हीन होजाताहै ।जिस्से वेभी साधारण वर्तीको पकड़ लेतेहैं जिस्से उस राजाका बलनाश होजाताहै ॥ समस्त क्षत्रियों की योग्यता हर समय देखनी चाहिये ॥ उनको योग्यता के अनु-सार पृथिवी पर मालकी देनी चाहिये ॥ ये परम सार उपरी राज्य की स्थिरता को द्रढ करताहै ॥ नोकर सेना थोड़े कालके लिये उपयोगी है परंत बड़े प्रयोजन के लिये और बाहुत कालके लिये मालकी भाव के साथ और मान इजतके साथ पृथिवी देनाहै इसी तरह दाय विभाग (भाइ बंट और दुसरा हक का बंट) उनकी योग्यता नुसार देना चाहिय ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ८

धर्मेण सहाय साधनोपायः सेव राज्ञः नव निधयः पृथिवी जलादिभिः परि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रमेण सपादशत लाभः प्राप्यते ॥ कृषा धान पत्र प्रकाण्ड शाक तूलं वीज फल पुष्पादि विंशति ॥ वनेन पुष्प मूलौषधी वल्कलादि विंशति ॥ वृक्ष वनस्पत्यादि प्राप्तौ काष्ठ फल पुष्प निर्यास मधून्यादि विंशति ॥ आकरजेनाष्ट विंशति ॥ पशवादिभिः समास्त्रिंशत्धा ॥ करश्चषट त्रिंशत्धा ॥ पृथिव्य पतेजादि समंतं यंत्र कला कौशलम् ॥ विविध भाजनानिवस्त्वादि च निर्म्मापणम् ॥ पृथिवी वाय्वाकाशादिभिः विविधानि विमानान्याकाश गामीन्यस्त्राणिच ॥ कालोहि महाँ धनानिधिः यादि सवृथान याप्येत ॥ दिग्भ्यो यथेष्ट संचार लाभः ॥ स्वात्मानं स्वार्थेन स्वल्प सुखार्थेन तुच्छी न क्रियेत ॥ परमार्थतः सा परम पवित्र महा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

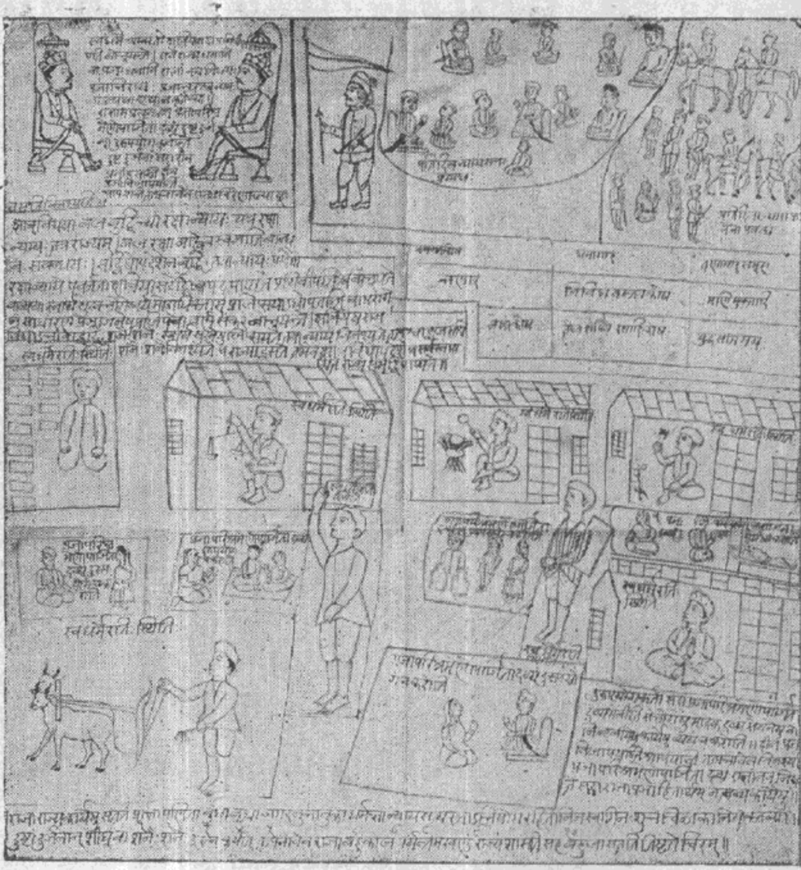

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्सर्वोत्तमश्च मन्यते ॥ मन्सोत्साहः संवर्द्धयैः तैस्परमोलाभः ॥ एते नवानिधयः॥ नवकोषा—अन्न वस्त्र माणिमुक्ताद भण्डार धनं तैल घृत रसादि तृणागार विविध वस्तव शस्त्रास्त्र युद्ध सामग्रय ॥ राजविद्योपशेन स्वार्थं नैराश्यमश्रद्धां चाप्य पौरुषं परित्यजते ॥ सर्वं स्वं जयति ॥ विना प्रजाहितार्थं रक्षा न्याय प्रजाभ्य· धनमुपार्जनं निस्संतानं भूत्वा निर्ग्रयान्ति दुर्घटनमाप्नोति आयुश्चाल्प ॥

भाषार्थ

॥ श्री मत्परम पवित्र सोम पाठ ८ ॥

धर्म के साथ पैदाश करने के उपाव वही राजा के नव खजानें है ॥ पृथिवी जलादि से परिश्रम करने से सवासो लाभ प्राप्त होते हैं ॥ खेती से

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धान पत्ता (पान) डांकला शाग रूई बीज फल पुष्पादि बीस लाभ है ॥ वनमे पुष्प जड़ ओषधी छाल आदि बीस ॥ वृक्ष वनस्पति आदि से प्राप्त होये हुवे लकडी फल फूल गूंद सेहत आदि बीस लाभ है खान से २८ अठाइस है पशू आदि से सैंतीस लाभ है ॥ और लाग बहाग छत्तीस है ॥ पृथिवी जल तेजादि से यंत्र कला कौशलम् तरह २ के विमान और आकाश में चलने वाले अस्त्रः ॥ समय (वक्त) ही बड़ा भारी खजाना है जो वह वृथा न बिताया जाय ॥ दिशावों से चाहे जिधर चलने का लाभ ॥ अपणी आत्मा का स्वार्थ और अल्प सुख से तुच्छ (छोटी) न करना चाहिये ॥ परमार्थ सेवा परम पवित्र बड़ी सबसे उत्तम मानी गइ है ॥ मनको उत्साह को बढ़ाना चाहिये तिससे वह परम लाभ है ॥ येही नव खजानें है ॥ नव कोष–अन्न कोष–वस्त्र–मणि मुक्तादि-भण्डार धन–तैल घृत रसादि तृणागार-विविध वस्तव शस्त्रास्त्र युद्ध सामग्रीयः ॥ राज-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विद्या के उपदेश से स्वार्थ को निराश को अश्रद्धा को और अपुरुषार्थ को छोड़ना चाहिये वह सब को जीत लेता है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ९

आय व्यय समीक्षणम् ॥ आय व्ययौ प्रेक्षणीयः आयद्वयो यथा संभवः नाधिकः कर्तव्य : प्राति समयेऽल्पाथवाऽधिकं सुसुखं संग्रह्यम् ॥ अल्पाद्भूरि रक्षणम् ॥ अस्मिञ्जगाति तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ॥ दानमुत्तम श्रेष्ठगाति सैव लभतेऽखण्डं प्रकाशमानं कीर्तिः सुखमव्ययम् ॥ मध्यमम् भोगः तृतियम् धोगाति नाशः ॥

स्वार्थ सुख भोगेश्वर्याधिक्तायुसं क्षाति- जायते यतः प्रकृति नियमैः पुर्व प्रारब्ध साचित कर्मानुसार शरिरं न्यूनाधिक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुख दुःख भोगेणसहः प्रपद्यन्ते ॥ एतान् शीघ्रं शीघ्रं चाधिकाधिकं भुक्त्वा तथा संचय न कृत्वाच शरीरं निश्शेषान्मृत्युं प्राप्नोति ॥ दीर्घायुः कांक्षिताजना एतान् शीघ्रमभूक्त्वा न समापयाति परं संचयं करोति अवश्यं दीर्घायुर्भवति ॥ यावन्ति संचित कर्माणि चावशिष्टानि संचितानि च वर्द्धन्ते तावन्ति शरीरायुःस्थिति वर्द्धयाति ॥ इदं मनुष्य एवाहि कर्तुं शक्नोति मनुष्याधीन सर्वेतत् ॥ न शीघ्रं भूक्त्वा न समापयेत् स योग प्रोच्यते तस्यायुर्वर्ष संख्या बहूनि वर्षाणि वर्द्धते ॥ पथ्याशनेन संयमेन नियमेन च योगाभ्यासेनानन्त सिद्धियुक्तं शरीरमजरतां प्राप्नोति ॥ एतेवैशस्य योयोगेनश्च हस्ते भवेताम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ९

जमा खर्च देखना चाहिये ॥ जमा और खरच दोनु देखना चाहिये ॥ कमाके खरच जहां तक संभव हो जादा नहीं ॥ हर समय थोड़ा ना ज्यादे सुख के साथ संग्रह करना चाहिये ॥ थोड़ेसे घणे की रक्षा करनी चाहिये ॥ इस जगत में धन की तीन गति होती है दान उत्तम श्रेष्ठ गति है जिस्से अखण्ड प्रकाश मान यश (कीर्ति) और हमेश का सुख मिलता है ॥ मध्यम गति भोग है॥ और नीच गति नाश है॥ स्वार्थ सुख भोग की अधिकता आयुष को क्षय करती है॥ प्रकृति (कुदरति) नियम से पूर्व प्रारब्ध संचितकर्मानु-सार शरीर कम ज्यादे सुख दुःख भोग के साथ पाता है ॥ इन स्वार्थ सुख भोगों को जल्दी जल्दी अधिक अधिक भोगता हुवा और संचय न करता हुवा शरीर बाकी न रहता हुवा मौत ही को पालेता है ॥ दीर्घायु बड़ी उमर की इच्छा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करने वाला जल्दी जल्दी न भुगत कर समाप्त नहीं करता है॥ परत् संचय करता है वह अवश्य दीर्घायु (बड़ी उमर) होता है॥ जबतक संचित कर्म बाकी रहते हैं और संचय बढता है जबतक शरीर की आयुस की अवधी बढती है॥ ये मनुष्य ही कर सक्ता है और मनुष्य के ही आधिन है॥ न तो जलदी भुगतता है और न समाप्त करता है वह योगी है॥ उसकी आयुस के वर्षों की संख्या बड जाती है॥ पथ्य से अपणा आपा हात मे रखने से नियम से और योगा भ्यास से अनन्त सिधि सहित शरीर अमरता को पाता है ये वैश्य और यागी के हात मे है॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १०

शिल्पौषधालय चिकित्सालय शरीरव्यच्छेदालयानाथालय वायुः जलशुद्धि पुर स्वच्छतादि प्रजा कार्याणि॥ यद्रा·

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्याय दशांशं प्रजाहितार्थम् । तेन शिल्पविद्या प्रचारानाथालयौषधालय चिकित्सालय शरीर व्यच्छेदालय वायु जल शुद्धि पुरस्वच्छतादि तथाऽन्ध पङ्गनाथ बालका विधवा स्त्रीणां तथा स्वपोषऽसमर्थानांच पोषणम् पशु चिकित्सादि परमावश्य कार्या प्रतिष्ठापनम् ॥ न्यायालयाद्याधिकरणानां वादीनां शुल्क शालादि राज्यायालयानांच स्थापनम् ॥ प्रजानामवश्यक् कार्यानुसारे चितम्॥ यद्वस्तुनः स्थिरतावश्यकः तया काङ्क्षिता चेतर्हि सा स्थैर्य मूलैरस्या ॥ यंत्रकला कार्याणि वर्णशंकर शूद्रयोर्हस्ते परं समीक्षा सुपरीक्षित ब्राह्मणाय स्वामी प्रकारेण (भावेन) प्रदद्यात् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १०

शिल्प औषधालय चिकित्सालय शरीर व्यवच्छेदा-लय अनाथालय वायुः जलशुद्धि पुर स्वच्छतादि प्रजा के काम॥ राज्य की पैदाइश जिसका दशवां हिस्सा प्रजाहित के लिये मुकर्रर हो। जिस्से शिल्प विद्या का प्रचार हो अनाथालय औषधा-लय (सफाखाना) चिकित्सालय वायु जल की शुद्धि और पुर स्वच्छता (सेहर सफाई) आंधा पांगला अनाथ बालकों विधवास्त्रियों की तथा अपणा पोषण करने के असमर्थ हो उनके पोषण के लिये और पशु चिकित्सादि परम अवश्य काम स्थापित हो॥ न्यायलया अधिकरणों की वादी-यों की सायरात के मकानादि राज्य के मकान स्थापित करें॥ प्रजा कार्यों के अनुसार आवश्य-क्ता मुजिब स्थापित करना उचित है॥ जिस वस्तु (चीज) की स्थिरता (पायदारी) अवश्य है वह पायदार हो यंत्र कला के काम वर्णशंकर शूद्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के हाथ में हो परंतु उसकी देखभाल अच्छे पास शुद्ध ब्राह्मण के हाथ में दी जाय ॥

श्रीमत्पाम पवित्र सोम पाठ ११

प्रजास्तु विविध विद्यानां प्रचारः धर्म प्रचारश्च तथैवच ॥ प्रजा सुशिक्षायितुं सर्वत्रानेकेषां विद्यालयानां प्रतिष्ठापनम् तत्सहायकरणे तद्दूराच ताभ्यो विविध विद्या विज्ञान शिक्षा प्रदानं च राज्ञा परमो धर्मः प्रजानां दुःख शमने यथा संभवं प्रयातितव्यम् ॥ धर्मोपदेशका योग्या पण्डिता सर्वत्र स्थापयेत् वेतन परि गृहीत वान्यथा तेषां रुच्यानुसार भोजन प्रबन्धेन सह नियोक्तव्याः धर्म प्रचारार्थम् ॥ जितेन्द्रियत्वं व्यायाम परिश्रमेऽभ्यास एवमेवास्त्र शस्त्राणाम-भ्यास स्वरक्षार्थं सर्वेषां जातिनामधि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारोस्ति ॥ परिपक्क वीर्ये पुष्टे तरुणे विवाह तथैवच॥ सदाचार शुद्धा धा णा तैश्च जगति सुख शान्ति स्थिरतार्थे जगद्धितार्थं मनुज संततिं प्रथम शिक्ष णिया॥ सार वा सर्वोपरि नियोपदेश परारंभ शिक्षा परमोधर्मः ॥

भावार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ११

प्रजाओं में तरह तरह भांति भांति की विद्यावों का प्रचार और इसी तरह धर्म प्रचार भी हो प्रजावों में शिक्षा करने के लिये सब जगह अनेक पाठशालायें स्थापित करना और उनके द्वारा सब तरह की विद्यायें विज्ञान शिक्षा दिलाई जाना राजावों का परम धर्म है ॥ प्रजावों के दुःख दूर करनें में जहां तक संभव हो यत्न करना चाहिये। धर्मोपदेशक योग्य पण्डित सब तरह की जगह वेतन (तनखा) पर वा उनकी रुचि अनुसार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भोजन के प्रबन्ध के साथ मुकर्रिर हो धर्म प्रचार के लिये ॥ जितेन्द्रियपन कसरत मेहनत मे अभ्यास इसीतरह अस्त्र शस्त्रों का अभ्यास अपनी रक्षा के लिये सब जातियों का है ॥ इसी तरह जब वीर्य पकजाय पुष्टतरुण अवस्था मे विवाह हो ॥ सदाचार शुद्ध धारणा तिरसे जगत मे सुख शान्ति की स्थिती के लिये जगत हित के लिये ये मनुष्य संतति (परिवार) को पहले शिखलानी चाहिये ॥ सार शिक्षा वा सर्वोपरी विद्योपदेश सबमे देना परम धर्म है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १२

न्याय मर्यादा प्रबन्धः ॥ स्वकीय रक्षाधिकारस्तु सर्वेषामास्ति तेषां दोषो न पश्यते ॥ धर्म विधायकस्य सहायता संपादकोपि धार्म्मिक एवज्ञयः तथैवा धर्मविधायकस्य पक्षपात्य धार्मिक एव॥ मनसामात्मना शुद्धतां समीक्षणम् वा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिज्ञानं न्याये ॥ अज्ञानेकृते वा ज्ञेषु बालकेषु मादकद्रव्यमत्तेषु उन्मादग्रस्तेषु नाधिक दोषोमन्यते॥ समृधि विनश्यत्यनयात् ॥ एको विवाहश्चेयः यदि धर्माधिकारास्ति द्वितिय तृतिय चतुर्थमपि तेनाधिकोनाधिकारः तरुणे चिरकाले वियोगे वा स्त्रिपुरुषवाक्षतिजाते नियोगं वा पुनर्विवाहो स्वजात्या रुच्यानुसाराधिकारः ॥ सम्यगालोच्या प्रचारिताऽज्ञा ध्रुवा मर्यादा निरुध्यते यथाप्रजासु सुखशान्तिःस्थातिश्च प्रबन्धानांस्थैर्यम् स्थितेमूलम् ॥ यदि सुखशान्तिः किमपि वैकल्प मापते तर्हि नामाज्ञां कृत्स्नशोभा गतावा विपरि वर्तयेत पश्चान्मन्वंतरानुसार सीनुतनाऽऽज्ञा तद्विपरि वर्त्तनम् थाप्रजागोचरं विधेयम् ॥ राज्यशासन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार्यमालोचितुं समयो नियमयितव्यः॥ यदि कस्यांश्चिन्नूतनाज्ञाया स्वप्रजा सुप्रचालतस्य कस्यांश्चित्प्राचीन पद्धत्यानिरसनस्य तत्परिवर्तनस्य वावश्यकता समापते तदात्रविधेयम् एतत्परिणामो मयि १ मत्प्रजासु २ स्वसाम्राज्य ३ अपरराष्ट्रेषु ४ यत्प्रजासु ५ सर्वसाधारण प्रजासु । प्राप्तपुनरपि ईदृगेवसर कीदृक् भविष्यति ६ कश्चिदपरोवा यद्यत्कुर्यात् तर्हि मंत्रशोचेत् ॥ प्रजानां साधारण न्यायो वा कार्याः प्रजासु नियति भूता नामेव पंचानां जनानां हस्तगता भवितु मर्हति ॥

भाषार्थ

श्री सत्परम पवित्र सोम पाठ १२

न्यायमर्यादाप्रबन्ध ॥ अपनी रक्षा का अधिकार सब

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को है जिसमे दोष न देखा जाय॥धार्मिकका सहायक भी धार्मिक ही समझा जाय ॥ ईसी तरह अधार्मिक का पक्ष पाति अधार्मिक ही है॥ मनसा और आत्मा की शुद्धि देखना और जानना चाहीये न्याय के समय मे ॥ अज्ञानतासे कीया हुवा वा अज्ञान से कीयाहुवा अज्ञान बाल्कपन वा नशेकी हालतमे वा उन्माद हालत मे कीया हुवा अधिक दोष न मानाजाता है ॥ अन्याय से संपदका नाशहोता है ॥ एक ही विवाह श्रेष्ठ है जो धर्म का अधिकार हैं तो दुसरा तीसरा और चौथा भी ॥ इस्से जादा अधिकार नहीहै ॥ तरुण अवस्था मे बहुकाल से वियोग होजानेसे वा स्त्री पुरुष का क्षय होजानेसे नियोग वा पुनर्विवाह अपनी जातिमे रुचिके अनुसार अधिकार है ॥ अच्छी तरहसे वीचार के साथ जांच की हुइ प्रचलित राजाज्ञा हमेशा के लिये मर्यादा कहीजाति है जिस्से प्रजाओं में सुख शान्ति संपत्ति बनीरहे ॥ सुख संपदा ही स्थिरता कामूल है ॥ जो सुख शान्ति आदि मे किसी तरह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का फरक पड़ता हो तो उस आज्ञा को थोड़ी वा सब फेर देनी चाहिये ॥ पीछे मन्वन्तर के अनुसार वा नइ आज्ञा का प्रचार प्रजा को विदित कर देना चाहिये ॥ साधारण राज कार्य करने के लिये समय मुकार्रर होना चाहिये ॥ जब कभी कोई नई आज्ञा अपणी प्रजावों में चलाइ जाय और प्राचीन चलती हुइ को फेर दी जाय वा पलटने की आवश्यकता हो तो इतनी बातों पर ध्यान देना चाहिये कि इसका असर मुजपर क्या पड़ता है १ मेरी प्रजावों पर क्या असर होगा २ अपणे उपरी राज्य में क्या असर होगा ३ दुसरे राजाओं की प्रजा में क्या असर पड़ता है ४ सर्व साधारण प्रजावों में क्या असर होगा फेर एसा काम पड़ने से किस तरह होगा ५ जो कोइ दुसरा एसा करे तो मुझको कैसा मालूम होगा ॥ प्रजाओं का साधारण न्याय वा काम प्रजावों में से मुकर्रर किये हुवे पंचों के ही हात मे होना चाहिये ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १३

सीमाप्रान्ताऽपरनृपैः सहः कार्याः तथा स्वराज्यो मिश्रितानां वृतान्तानांच पर राष्ट्रेषु च परेषां वृतान्तानां गुप्तपुरुषैः वा चारैः परिज्ञानम् ॥ सप्रेमणा धर्मेण न्यायेनच परिशुद्धभावेन कार्या विधेयम् ॥ उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानम् ॥ प्राचीनानि स्वाभाविकानि उपयोगिनी च वस्तूनि रक्षेत् ॥ परस्पर सम्मति जन्याद्धितार्थम् ॥ कृते प्रत्युपकारो विधेयो दीनानां जनानां गवाश्व परि रक्षणमपि॥ आवेश्या तत्कार्ययो भर्जनाद्दर्गेण स्व प्रभणा प्रसादं याचेत तेनामिथो वैर द्वेष द्विधा परि समापयेत् । धर्मकार्येषु परस्पर सहाय्यता स्व प्राण पर्यन्तमपि तथाऽधर्मकार्यं किञ्चिदापि न विधेयम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वबुधि वलयोर्भेदः परेषु जनेषु न प्रका-
शयेत् ॥ देवानां ऋषिणां वा सर्वं सा-
धारणां जलाकाश पाताल वा पदादि
पंथाः वाणिज्यंचैक राज्य प्रजानामपर
राज्य प्रजाभ्यो निरुद्धो न भवेत् ॥
कस्याप्येकस्य राजस्यापराधिनमपर
राजा सहायतां न दद्यात् किन्तु यत्र
तयोपराधी तद्देशस्य राज्ञायाऽर्पितो तस्मै
समर्पेत ॥

भावार्थ

श्रीमस्तम पवित्र सोम पाठ १२
श्रीमापरे दूसरे राजाओं के साथ कार्य तथा अपने
राज्य के विभिन्न वृतान्तों का हाल दूसरे राज्य
के वृतान्तों का हाल गुप्त वेष पुरुषों से जानता
रहे ॥ प्रेम धर्म और न्याय के साथ और शुद्ध
भावना से कार्यों को करे ॥ आत्मा से आत्मा
उच्च रखे ॥ प्राचीन स्वाभाविक और उपयोगी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वस्तुवों की रक्षा रखै॥ आपस में जगद्धित के लिये सम्मति (सलाह) करे॥ उपकार का पीछा उपकार करे॥ दीन जन और गौवों की रक्षा करे॥ अविद्या और अविद्या के कार्यों को नाश करने वाले संकर भगवान मालिक से प्रसाद (मेहर) मांगे जिस्से आपस का वैर विरोद्ध द्विद्धा समाप्त हो॥ धर्म कार्यों में आपस की सहायता प्राणों तक करनी चाहिये॥ और अधर्म का काम कुछ भी न करना चाहिये॥ अपणे बुद्धि बलका भेद दुसरों मे प्रकाश न करे॥ देव ऋषि वा सर्व साधारणों के जल आकाश पाताल और भूमि पर के मार्गों को विणज (व्योपार) एक राज की प्रजाको दुसरे राज्य की प्रजा के साथ न रोके॥ किसी एक राजके अपराधी को दुसरा राजा सहायता न दे परन्त जहां का अपराधी हो उस देश के राजा के मांगने पर उसके हवाले कर दे॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १४

पुण्य धर्मैश्वराराधनमुपाशनम्। सर्व

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूतस्थं ममैवात्म प्रकाशः सर्वं शक्ति मत्या योग मायया सर्वं शक्त्योयं: जगत्प्रसृतम् ॥ सर्वत्र विश्वरूपं ममैव माया पश्यन्ते सर्वेषां भूतानां पृथक् पृथक् स्थितिमेक्यं भावेन पश्यति ॥ तदेव सर्वं विस्तृतं जगच्चराचरम् ॥ दया विनाहि राजा स्तथा कोमलता विना । धार्मिका शास्त्रहीनाश्च मता लोके नि- रर्थकाः सुपात्रे जगद्धितार्थे दान पुण्यं विधेयम् ॥ मिथ्याति तृष्णा जगंति दुःखं प्राप्य तेषां सर्वस्वं च विनश्यन्ति ॥ पा- रमार्थिक्या बुद्धया सम्यताः संयमत्वम वश्यमेवः ॥ प्रजा वृत्तान्तं श्रणुयात् तेन ज्ञानं संवाप्यते ॥ ज्ञानमेव महाप्रबलं बलम् ॥ राजानाति प्रबलो दण्डोपि दातव्या ॥ मनुष्य जातिषु या जातयः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बुभुक्षिताः वा दरिद्रा भवेयुः तज्जातिया जनान् यथोचितेषु कार्येषु [illegible] नियुअंत येन तेषां पालनं निर्वाहस्तुः तेन्न पाप कार्याणि तेनानुतिष्ठेयुः धर्मः ॥ क्षत्रिय शरीराय स्व राजविद्यायां श्रद्धा पुरुषार्थं ममैवाराधन सुपाशनं सर्वम् ॥ यदिश्रेयः परिव्राज पण्डित हस्ते ॥

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १४

पुण्य धर्म ईश्वर की आराधना उपासना समस्त प्राणियों में मेरी ही आत्मा का प्रकाश है ॥ सर्व शक्तिमयि योग माया से दोनु सर्व शक्तयों से जो जगत विस्तृत है सब जगह विश्वरूप मेरी ही माया सब में देखी जाती है समस्त प्राणियों की जुदि जुदि स्थिति को मनुष्य की बुद्धि ही देखती है उससे ये सब चराचर विस्तृत है ॥ बिना दया कोमलता के राजा और धार्मिक (धर्मोप-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देशक) शास्त्र से हीन जगत में निरर्थक (निकम्मे) है ॥ इस तत्व को जान्ता हुवा दान पुण्य करना चाहिये । सुपात्र को जगत हित के लिये दान पुण्य करे ॥ अति तृष्णा जगत में मिथ्या है वे लोग अति तृष्णा वाले दुःख पाते हुवे अपना सर्वस्व को नाश करलेते है ॥ परमार्थिक बुद्धि से सभ्यता और संयम (अपने आपे को अपने वश में रखना) अवश्य है ॥ प्रजा के हाल को सुनना चाहिये इससे ज्ञान की प्राप्ती होती है ॥ ज्ञान ही महा प्रबल बल है ॥ राजा को अति प्रबल दण्ड न देना चाहिये ॥ मनुष्य जातियों में भूखी जातियां वा दरिद्री होजाय उन मनुष्यों को राजा यथोचित कामों में लगादे जिससे उनका पालन निर्वाह होता रहे जिससे वे पाप कर्मों में न प्रवर्त होवे योही धर्म है ॥ क्षत्रिय शरीर के लिये अपनी राजविद्या में श्रद्धा पुरुषार्थ मेरी ही आराधना उपासना सब ही है ॥ ये कार्य सन्यासी पण्डित के हात में हो ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १९

राज्ञाः धनं मानं धर्मो ध्वजश्च ॥ राज्ञाः धनं मानश्च वीर सुभटानां पण्डितानां परोपकारिणां गुणिनां च सत्कारार्थं मेव पुनश्च दीन जनानां तथैव स्व पोषेऽसमर्थानां परिपालनार्थं प्रजाहितार्थं धर्मार्थं च ॥ सत्यानां पारमार्थिकोपयोगिनां च विषयाणां ग्रहणमेव लोभकार्यो नान्यत्र॥ मानार्हेभ्यो भूपोयच्छेत यथार्थ मान मुत्तमम् ॥ यदि कश्चित्पुरुष उपालंभ योग्य पुरुषाक्षर भर्तसनीयो वा भवेत ॥ तदोच्च पदाधिकारिणा महा पुरुषेण च तद्रहासि वक्तव्यम् ॥ यदि मध्यमोपि मानार्हः स्यान्तर्हि सोपिमान पात्रेषु ज्ञात्वा तस्मै मानः प्रदेव एवं तददाने चेष्ट धर्मात्पराङ्मुखः संपद्येत् तत्प्रातिका-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थ सर्व जन समक्षिं इष्ट देवतार्थं यथा पराधं दण्ड विनिमयो वलीविधियः ॥ ध्वज लक्षणमाह–पुरुषेण सत्य संधेन भाव्यम् ॥ स्व प्रतिज्ञा धर्मेण निर्वाहा॥ दानमभ्यमार्जवं दमश्चाहारातिक्तता दया भूतेष्वचापलम्मार्दवम् ॥ धर्मं तत्परता सुपात्रे दाने समुत्साहिता ह्रीरद्रोहो सत्यं शौर्यं धृतिः त्यागस्तेज तपः शान्तिरपैशुनम् ॥ स्वार्थत्यागो-त्साहः क्षमाऽक्रोधः पारमार्थिक् बुद्धि ज्ञान योग व्यवस्थितिः परोपकारः स्व दश सेवाऽहिंसा निरपराधीषेव दाक्षं स्वधर्माश्वर भावश्चनाति मानिता ध्वज लक्षणम् ॥

भाषार्थ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजा का धन मान धर्म और उच्चपन्न ॥ राजा का धन और मान वीर सुभटों के लिये पण्डितों के लिये परोपकारियों के लिये और गुणियों के लिये इन चारों के सत्कार के लिये है फेर दीन जनों (गरीब आदमी) के लिये इसी तरह ज अपणा पोषण (पालन) करने से असमर्थ हैं उनके लिय प्रजाहित लिये और धर्म कार्यों के लिये है ॥ सत्य पारमार्थिक और उपयोगी कामों के करने में लाभ न हो और जगह ॥ मान योग्य जनों को राजा यथार्थ यथोचित उत्तम मान दे ॥ यदि कोइ उच्चपद वाला ओलबा देने योग्य वा जादा बुरा बतलाने योग्य हो तो बड़ आदमी को एकान्त में कहना चाहिये ॥ जोकोई मध्य दर्जे का पुरुष भी मान योग्य हो उसको भी मान पात्रों म जान मान देना चाहिये ॥ इस तरह मान न देने से इष्ट से बेमुख होता है जिा सका उपाय सब के सामने इष्ट देव को जेस पराध हो बल दे कुच्छ चढावे ॥ ध्वज लक्षण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह है — उत्तम जनको अपणी बात का सच्चा होना चाहिये ॥ अपणी प्रतिज्ञा (कोल) धर्म के साथ निबाहना ॥ दान ॥ अभय (डरना) नहीं शर्ल स्वभाव ॥ इन्द्रियों अपनें बश में दबाइ रखना अहार के सिवाय प्राणियों पर दया रखना। (भूखा होतो आहार के सिवाय वृथा न मारना) चापल्तान रखना ॥ नरमी रखना ॥ धर्मने तत्पर (तैयार) रहना ॥ सुपात्र को दान देनेमें उत्साह रखना ॥ लज्जा ॥ द्रोह न रखना ॥ सच्चा शूर-वीर होना धीरज रखना ॥ बुरे नीच कामों का त्याग करना ॥ अच्छे पारमार्थिक कामों मे तेजी रखना ॥ मेहनत के साथ काम करना शान्ति रखना ॥ कुटिलता न रखना ॥ स्वार्थ के त्याग करन में (छोड़ने में) उत्साह रखना ॥ क्षमा रखना ॥ क्रोध न करना ॥ पारमार्थिक बुद्धि रखना ॥ ज्ञान योग्य में स्थिति रखना ॥ परोप कार करना ॥ अपने देश की सेवा करना (सच्चा देश भक्त होना ॥ निरपराधि का (हिंसा (मारना

For Private And Personal Use Only

वा दुःख देना) न करना ॥ सज्जनों से चतुरता सीखना ॥ अपनें आपे में मालकी भाव रखना॥ अति मानवाला वा अति अभीमानी न होना यैही ध्वज (ऊचापन) के लक्षण है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १९

राज्य धुरम् ॥ भूपातिः सर्वं राज्य धुरं स्वयं न ध्रियात् परं पारमार्थिकेषु वि- श्वस्तेषु शुभाचारेषु प्रशस्त गुणेषु प्राज्ञेषु पण्डितेषु सुकुलेषु धर्मात्मेषु कार्यज्ञे समीक्षकारिष्वनु भाविषु न्याय सत्परतेषु निजस्वामिन शुभाचिन्तकेष्व भियोग रहितेषुच मंत्रिषु यथावत्प्रविभजेत् ॥ प्रजोचितेषु कार्येषु गृण्हीयात्सम्मात- विशाम् ॥ यथा संभवः यथा योग्यं कार्यं विधेयम् ॥ याथा तथ्येन यथा योग्य युक्तेन विधेयम् । प्रजाभ्यः साधारण

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्यायो वा कार्यः प्रजास्तु नियति भूतानामेव पंचानां जनानां हस्तगतो भवितुमर्हति ॥ प्रजानां शुद्ध भावना शुद्धाधारणा विकृति विरोधि कार्येषु वा विपरीत कृत्येषु जगद्धानि करेषु विषयेषु हस्ताक्षेपो राज्याधिकारोस्ति । यतोऽनयोः सम्यक्शुद्धि सर्वाभ्यः प्रजाभ्यः सुख शान्ति प्रदास्तः वैपरीत्यचास्याः प्रजाभ्यो दुःख प्रदा निरोद्धव्या । वृद्धानुभवी मंत्री सर्वं राज गुप्तं ज्ञाता न कदापि पृथक् कुर्याद् परं स्वकीयमेव विधेया ॥ कर्मचारिमाधिका नियोग युक्तं युक्तेन पृथक् कुर्यात् न स्वीदृशं राज कार्यें नियुञ्जीत ॥

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाट ३१

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज्य भार (राज्य कार्याणि) राजा सब राज्य का भार अपने ही ऊपर न ले परंत पारमार्थिक विश्वास पात्र शुभ आचरण वाले दिव्य गुणवाले शुद्ध विचारवान पंण्डित कुलवान धर्मात्मा काम को जानने वाले काम को संभालने वाले तजरुबे कार न्याय और सत्य में जिनकी रति हो और अपणे मालिक के शुभ चिन्तक हो और जिनकी सिकायत न हो सलाहकार हो ऐसों में मुनासिब तौर से राज्य कार्यों के भार को बांट दे ॥ प्रजब के उचित कार्यों में प्रजाकी भी सम्मति ले ॥ मुमकिन हो जैसा योग्य हो कार्य को देना चाहिये ॥ जैसा चाहिये उसी तरह किया जाय ॥ प्रजावों के साधारण न्याय और साधारण काम प्रजा में से ही अच्छे बड़े २ पांचों के हात में होने योग्य है ॥ प्रजावों की शुद्ध धारणा शुद्ध भावना को बिगाड़ने के कामों में वा उलटे कामों में इसी तरह जगत् हानिकारक कामों में हस्ताक्षेप (दस्तंदाज़ी) करना राज्य को अधिकार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है इन दोनों की शुद्धि (शुद्धभावना और शुद्ध धारणा) सब प्रजाओं को सुख शान्ति देने वालीहै और इसे उलटी चाल प्रजावें दुःख देने के कार्य्यहै॥ जुदा तनख्वेकार मंत्री राज्य की तमाम गुप्त बातों (भेदों) को जानता हो एसेको अलग न करना चाहिये परन्तु उनको अपना कीये हुवे रखना चाहिये और सिकायत वाले कर्मचारियों को युक्तिसे जुदा करना चाहिये ऐसो को राज्यकार्य्य में न रखें॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १७

दान पारितोषिक वितरणम्॥ राजा वा महान् पुरुषोवा नीति सुक्तहस्तानाति कृपणश्चभवेयुः सह प्रसन्नत्वमौदार्य्यं च प्रजारंजनं खलु सुपात्रेभ्यः पारितोषिक वितरणेन राज्ञो गौरवम् वर्द्धते वर्द्धापनिकेन पारितोषिकमुद्रादेः मानस्य भूम्याश्चभवति॥ साधारण निर्धनेभ्यस्ताद्वितरणं सहायकरणं यथावस्त्रं व

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तुपक्षात: अन्यस्य यच्छरीरोपयोगीः विशेषकार्येषु मानस्य भूम्यादेश्च वितरणं विशेषतः श्रेयः वीरक्षात्रियाणां भूम्या देभिः समानं येन राज्यस्य बलंप्रतिष्ठा च सुदृढस्थैर्यम् ॥ वीरक्षात्रियाणां यशो घनः ॥ कुपात्रदाना द्भवेद्दरिद्रः ॥ परं सुपात्रेषु पुण्यमार्गेषु च भवेत्प्रभुर्धना चन्द्रतारकम् सः भवति देवः स्वर्गजयति लीलयाऽत्र ॥ द्रव्यानामर्थानां त्यागेव हि सुफलं महाँल्लाभः ॥ धनविनश्यति लोभाल्पतया ॥ सदासिकै लक्ष्मी जयति तथैव राजनियाया भूमिः शीघ्रम् ॥

॥ भावार्थ ॥

श्रीमत्परमपवित्र सोमपाठ १७ दान इनाम बांटना॥ राजा और बड़े बड़े आदमी (धनाढ्य) न खिलकुलही खुले हात (धनको बेतरह से उड़ाना) न अति लालची हो ॥ प्रबन्ध के साथ उदार चित्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हो ॥ निश्चय करके सुपात्र को दान (इनाम) देना प्रजाका काम और राजाका गौरव वढाताहै इनाम रूपेका और मान भूमि का है ॥ साधारण निर्धनों की सहायता करना कपड़ा कोई जरूरी चीज और पशू देकर के और कोइ भी चीज शरीर के काम की हो देना चाहिये ॥ और विशष कार्यों के लिये पृथ्वी का दान श्रेष्ठ है वीर क्षात्रियोंको भूमि देकर सन्मान कीया जाता है जिस्से राज्य का बल और प्रतिष्ठा अच्छि दृढ और स्थिर ता को पाता है ॥ वीर क्षत्रियों के लिये यश ही धन है ॥ कुपात्र को दान देने से दरीद्री हो जाता है ॥ परंतू सुपात्रों को और पुण्य मार्गों में देने से चंद्र और तारोंकी स्थिति तक धन का धणी होता रहता है और वह देवता हो जाता है और स्वर्ग को भी खेल की तरह जीत लेता है द्रव्य और धनका दान देना ही अच्छा फल और वड़ा लाभ है ॥ धन अति लोभ में पड़ने से नाश हो जाता है ॥ उदासी (दुरुपाधि) लक्षीः को

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीत लेता है इसी तरह राजविद्या से तुरत ही पृथिवी को जीत लेता है ॥

श्रीमत्परमपवित्र सोम पाठ १८

चार गुप्तगूढवेषपुरुषाः रक्षाधिकृत पुरुषाः पायदलाश्च ॥ गूढ गुप्तवेष पुरुषाः विश्वस्तचार चक्षुषा राजा ताभ्यां सर्वं वृतान्तामवलोकयेत् ॥ किंचित्कालाय राजाप्रजा वृत्तान्तं श्रणुयात् ॥ राष्ट्रे पुरेषु ग्रामेषु वा रक्षाधिकृत पुरुषा अधिकारिणः यदा तयो वा कार्यं प्रवाणा कार्यज्ञाः सत्यवानो विधयाः यदि तेषा मल्पमापि दुष्कर्म दुराचारं वा प्रजा दुःखाभवद्वा किंचिदपि दुराचरण दृक्पथं निपतत्तर्हि तेऽवश्य दण्डानियाः अन्यथा त स्वयमन्यायपथे प्रवर्तेरन् ॥ प्रत्येकस्मिन्कार्ये राज्ञा समीक्षणा कर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णीया कार्यकुशलाः पुरुषाः सर्वे वृत्तां
न्तं राज्ञे निवेदयेयुः सुपरीक्षिता राजा
ज्ञा एव देश प्रबन्धः नियमः प्रोच्यते
तेन च समीचीनेन भाव्यम् यतः प्रजा
जनाः सुखिनोभवेयुः प्रजासु सौख्य
स्थितिरेव राज्यनियमप्रयोजनमस्ति ॥

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १८

छाने गुप्तवेश रहकर जगत के वृतान्त (हाल) की खबर देनेवाले पुरुष रक्षाकरने वाले पुरुष और पायदला ॥ प्रजावों में फिरकर गुप्तवेश पुरुष प्रजावोंका हाल जानकर राजा का खबर देने वाले पुरुष राजा की आंखें है जिनसे राजा सब हाल को देखता है कुच्छ काल तक राजा प्रजा का हाल सुनता रहे ॥ राज्यमें शहरोंमें गांवोंम रक्षा करनेवाले पुरुष काम में प्रवीण काम को जानने वाले और सत्यवादी मुकरिर हो और जो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उनका कोइ भी उलटा काम मालूम हो जाय जिनसे प्रजा दुःखी हो व उनका कोइभी दुराचार नजर आजाय तो उनको अवश्य दण्ड देना चाहिये ॥ एसा न करने से वे खुद भी अन्याय करने लगजाय हरेक ऐसे कामों में राजा की देख भाल होनी चाहिये ॥ कार्यकुशल पुरुष सब वृत्तान्त राजा को वाकिफ करते रहैं ॥ अच्छी तरह से जांच की हुइ राज्य की आज्ञायें ही प्रबन्ध और नियम है और ये नियम अच्छी तरह से जाने हुवे हो जिन से प्रजा के लोकों को सुख हो ॥ प्रजावों में सुख की स्थिति ही राजाके नियमों (कायदे कानून)का मतलब है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १९

राज्ञामयोग्यता ॥धर्मविद्यांग वीरता हीनः कुष्टी क्रूरकर्माधर्मपालकः प्रजारक्षणेऽसमर्थोऽन्यायकारी वीरक्षत्रियेभ्यो राजावेद्या ज्ञातृभ्यः भूमिहर्ता तेभ्यश्चा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दाता न सिंहासनयोग्यः॥ राजविद्यया बलबुद्धिः जयोस्ततत्वं त्यागेन राज्यं तथा साजात्यापि जात्यन्तरानुप्रवेशेन समूल मुन्मूल्यतेच पतन्तिनरकेऽशुचौ॥ निरा शत्वं शास्त्रश्रद्धाविहीनत्वं क्षत्रियाणांम हानर्थंद चिन्हम् राज्यां चतुर्तिलक्षणं निर्यपातचिन्हंच विज्ञेयम्॥ बलबुद्धि मर्यादेनप्राप्तौ राज्यतान्नपश्यातिप्रणश्य न्ति॥ विषादनमालस्य परिवादो व्यस नंस्त्रियोमदः मृगयाति सहः द्यूतं तथा दिवास्वप्नं वागदण्डमर्थदूषणम्॥ दान मयोग्यम् योग्यमदानम्॥ असत्यत्वं कृतघ्नता विश्वास घाततांच दरत्परिवर्ज यत्॥ राज्ञामप्रबन्धेन प्रजापरिश्रमेणोपा र्जिताद्रव्यं दुष्ट दुरुपयोगी राज्यकर्मचा रयः तथा तेषांसम्बन्धयः वा अपर दुष्ट

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जना दीन प्रजाजनान्हसन्ति कोषागा
रादपिद्रव्यं दुरुपयोगकुर्वन्ते दीनप्रजा
विलापयन्ति शापयन्ति तत्प्रभावेन
राजाऽचिरेणाल्पायुः भूत्वा राज्याभ्रसं-
ति तेदृष्ट कर्मचारयादि ईदृशोपार्जिता
द्रव्यमनीति संभोगेषु मादकद्रव्य सेवने
षु दुर्व्यसनेषु सदानिन्दनियकार्येषु दुष्ट
कार्येषु सदा व्ययं च कुर्वन्ते ईदृशा
जनानां बुद्धिरपि जगद्धानिकराणि दुष्ट
कार्येषु भ्रमयन्ति एते सर्वेराज्ञामयोग्य-
ता विद्यते ॥ राजा स्वधर्मकार्यं त्यक्त्वा
स्वार्थसुख लिप्सया मादक द्रव्यं सेवति
वा निरर्थकं कार्यं च करोति तौर्यत्रिकं
स्त्रियो मद द्रव्यशनषु रतिकृत्वाऽन्यान्य
जातिषु संगमः करोति राज्याद्भ्रंसति
ईदृशं सुत्रं सिंहासनमपरान्यान्यहर्तुं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्पर कटिबध ॥ कामाँलोभ तेन मोह क्रोधादहंकार ः एतेषां संभावोऽधिकारः संभावादधिकमयोग्यता पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥

श्रीमत्परम पवित्र स्तोत्र पाठ १९

राजा वों में अयोग्यता जो राजा धर्म से हीन विद्यासे हीन, अंगसे हीन, वीरतासे हीने, कोढीया, क्रूरकर्मी अधर्म की पालना करने वाला प्रजा की रक्षा करने में असमर्थ, अन्यायकारी, वीरक्षत्रियोंकी, राजविद्या जानने वालोंकी, भूमि हरने वाला और ऐसों को न देने वाला राज सिंहासन के योग्य नहीं है ॥ राजविद्या और राजविद्या के तत्व को छोडने से राज्य तथा वा जाति भी और जातोंमें मिलकर जड़से चली जाती है और घोर नरक में पड़ते है ॥ निराशपन्न और शास्त्रों में श्रद्धाहीनता क्षत्रियों के लिये महान् अनर्थका चिन्ह है और राज्य से भ्रष्ट होजाने के लक्षण है ये नरक में पड़ने का चिन्ह जानना ॥ चल बुद्धि की मर्यादों से पाया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुवा राज्य तिनको नसंभालने से नाशहोजातेहै विषाद (दुःख) निराश आलस्य परिवाद (विवाद-जिद्द) विशन (बिसन) स्त्रीयां ओर मदमें (सराब-दारू)अतिजादा शिकार काशौक जूवा खेलना दिन को सोना-गाली आदि से बोलना -धनका दूषण याने देने योग्य को न देना ओर नदेने योग्य को देना अपने आपे को वशमें न रखना, कृतघ्न (उपकार को न मानना) विश्वास घात करना इन सबको दूरसे ही छोड़ देना ॥ राजका प्रबन्ध न होनेसे प्रजाकी मेहनत का धन दुष्ट बुरीतरह से काम में लाने वाले राज कर्मचारी वा उनके संबन्धी वा सदूरे दुष्टजन दीन गरीब प्रजाको हरतेहै और खजान तकभी द्रव्य कादुरुपयोग करत है गरीब प्रजा विलाप करता है शराप देताहै बद दुवा देताहै जिसके प्रभाव (असर)से राजा जलदी थोड़ी उमर होकरराज से भ्रष्ट होजाता है ओर व दुष्ट कर्मचारी आदि इस तरह पैदा कीये हुवे द्रव्य को अनीति से भोगोमें

For Private And Personal Use Only

परोपकारीणां गुणीनां च
विना प्रजाहितार्थं
धनमुपार्जनं
न्याय सभा
न्याय: जगद्धितार्थम्
रक्षार्थम्
रक्षको
उपयोगी
उपयोगी
अन्न कोष
भण्डार
वस्त्र
धन
मणि मुक्तादि
तैल घृत रसादि
सामग्री पा० ८

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

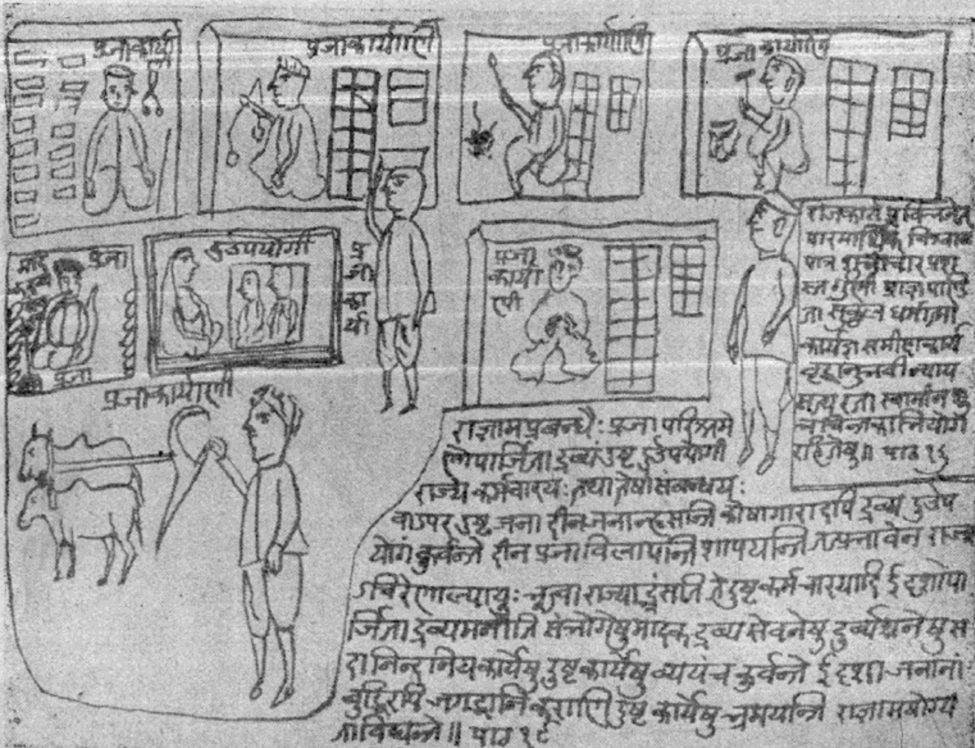

For Private And Personal Use Only

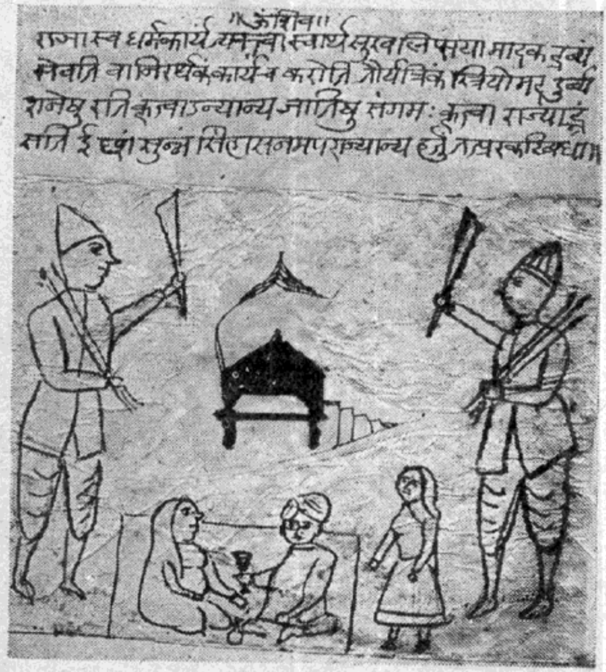

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नके सेवन में दुरव्यसनों में सदा निन्दनीय कार्यों में दुष्ट कर्मों में सदा स्वरत्र करते रहते है एसों की बुद्धि भी जगत के हानिकारक कामों में सदा भ्रमती है। ए सारी बातों राजा की अयोग्यता प्रगट करती हैं। राजा स्व धर्म कार्यों को छोड़कर स्वार्थ सुख में पड़कर वा नशे को सेवन करता है वा निर अर्थक कार्य करता है नाचने गाने बजाने में स्त्रीयों में मद में दुर व्यशनों में प्रीति करता हुवा अन्या अन्य जातियों में संगम करता है राजसे भ्रष्टहोजाता है ऐसे सून्य सिंहासन को अन्या अन्य हरने के लियें तयार कमर कसे हुवे होतेहै कामसे लोभ लोभसे मोह और क्रोधसे अहंकार इनका संभाव अधिकार है और संभाव से अधिकता अयोग्यता ह और जिनसे घोर नरक में पड़ते है याने भारी दुःखों में पड़ते है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ २०

राज्य शासन शक्ति प्रबन्धः सदाचार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पृथिव्यपाग्नि वायोश्च सोमसूर्यौ यमे-न्द्रः एतेषां सर्वेषां तेजोवर्तिः भूपतिश्च-रेत् ॥ धर्मात्मनः पापात्मनश्च सर्वान् धारयति तथैव राजा पृथिवी समाशील क्षमामापयेत पालयतेच। पि॥ यथापृथिवी स्वकीय गुणैः यत्किमपि स्वकारण धनं च विधाय एकयतापादयन्ति तथैव एकयताविहिना दुष्कृत्यां शीघ्र बन्धयित्वा स्वाधिकाकुर्यात् ॥ अग्निसमाः उपयोगी भवेज्जगतां सम्यतांस्थति वाग्नि स्वकिय स्पृश कर्तारं प्रदहति तथैव राजा स्वप्रीयगुणमपि मर्यादात्यक्त्वा जनानां समुपालवेन क्षमावातृप कुर्यात् ॥ यथा वायुः स्थावर जंगमेषु सवत्र तथैव नृपतिः निजगुप्तदूत॰ सर्व व्यापी सर्वज्ञ भूत्वा प्रजानां तथान्य राज्ञां वृत्तान्तं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जानीयात् ॥ यथा चन्द्रमा स्वशीलता प्रकाशादिगुणैः लोकानल्हादयति तथैव राजा ॥ यथासूर्यः किश्चित्किश्चिज्जलमा वर्षयति निरंतरः तथैव नृपतिः प्रजाभ्यः संगृहणयात तेन तेदु.खिता दरिद्रा· वान भवेत् ॥ धर्मराज समं पापीजनान् दण्डयति तेन ते पापकार्याणि नानुति· ष्ठेयुः ॥ देवेन्द्रसमं नरेन्द्रोन्यायमाचरेत् यथा मेघवर्षा शुद्धेऽशुद्धे पवित्रेऽपवित्र स्थाने च समान तथा वर्षति तेन प्रजा पुष्टतां प्राप्यते तेभ्यश्च धनन परिपूर्ण यन्ति ॥ तत्वज्ञानादिदर्शकःराजा ॥ ज्ञान विज्ञान सहितं मन्त्री ॥ परस्परं प्रामयोः सपाद्विपदोः प्रबन्धः बान्धवाना संबधिनां सामन्तानांच सम्मत्या भवेयुः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ २०

राज्य करने की शक्ति (ताकत)प्रबन्ध और सदाचार (अच्छे नेक चाल चलन) पृथिवी जल अग्नि वायुः चन्द्र सूर्य्य यम और इन्द्र इन सबके तेजसे राजा अपने तेजको वृद्धि धारण करें॥ धर्मात्मा और पापात्मा सबको पृथिवी अपने ऊपर धारण करती है इसीतरह राजा पृथिवी समान क्षमा और पालना भी सीखें॥ जैसे जल अपने गुणों करके जिस किसी को अपना करके बान्धेरखता है इसी तरह ऐक्यता जल से सीखें एक्यता से हीन खोटेकर्म करनेवालों को तुरत बन्धवाकर अपने आधीन में करले॥ जगत की सभ्यता की स्थिति में राजा अग्नि समान उपयोगीहो॥ अपनी आग्नभी स्पर्श (छुनेवाला) करने वालोंको जलादेती है इसी तरह राजा अपने प्रेवगणों को भी हलके चलने से ओलम्बा और गिड़क कर तिरस्कार करदेवें॥ जैसे वायु स्थावर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जंगमों में (चराचरमें) सब जगह है इसी तरह राजा भी अपने गुप्त दूतों करके सर्व व्यापी और सर्व जाण होकर सब प्रजावों और दूसरे राजावों का हाल जान्ता रहे ॥ जैसे चंद्रमा अपणी शीतलता और प्रकाश आदि गुणों करके लोकों को सुख देता है इसी तरह राजा भी ॥ जैसे सूर्य थोड़ा थोड़ा जल हमेश अपणी किर्णो से खींचता रहता है इसी तरह राजा भी प्रजावों से थोड़ा थोड़ा कर (लाग बाग) लेता रहे जिस्से प्रजा दुखी दरिद्री न होवे ॥ यमराज (धर्मराज) के समान राजा पापीयों को दण्डता है जिस्से वे पाप कर्म न करें ॥ इंद्रके समान राजा न्याय करे जैसे मेघ (बादल) शुद्ध अशुद्ध पवित्र अपवित्र स्थान में समानही बर्षता है जिस्से (न्यायसे) प्रजा पुष्ट ता पाती है और धन से परिपूर्ण रहती है ॥ ज्ञान के सार को देखने वाला राजा है ॥ ज्ञान विज्ञान सहित हैमंत्री होता ॥ आपस के संपद विपद के प्रबन्धों में अपनेही

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बान्धव संबन्धियों सामन्तों की सम्मति राजा लेवे ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ २१ क्षत्रियाणां सभा शान्त्योपदेश तथा समाप्त्याशीष ॥

क्षत्रियाणां प्राति सम्वत्सर द्वे वारे शुभस्थाने शुद्धतौ सभास्याताम् तस्यां परमपवित्र राजविद्योपदेश चिन्तनीयं प्रबन्ध सम्बन्धी समाधानंचापि सुवि-चारणम् ॥ प्रतिवर्षचैकवारं पुण्यस्थाने राज्ञां क्षत्रियाणां महासभाऽपि तेषां-स्यात ॥ राजा विशेषकार्येषु सामन्तानां च सभ्यव्यक्तिनां प्रजाजनानां सभाभ्यां सम्मातिर्विषाम् ॥ प्रत्येक जात्या सभा स्थापने वा प्रचलित्कुरीति निरसनेन सुरीति प्रचालने पूर्वकं जाति संस्करणे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शोधने वाधिकारोऽस्ति ॥ महाशक्तिः प्रश्नः सुमतेस्तैक्ष्णयं शक्तेश्च संवर्द्धनं क्षत्रिया कथं लभंते ॥ शिवोवाचः राज- विद्याशाणेनैव ॥ इयंविद्या क्षत्रियाणां पृथिवी प्रशासन शक्तिमयी तीक्षणता स्ति ॥ यथा शस्त्राणि चिरंकालेन निशित धारा विहीनानि भवन्ति तथैव क्षात्रि याषि महत्कालेन शक्ति पुरुषार्थं तेजो भिर्विहीना जायन्ते ॥ शाणोल्लिखिता नि शस्त्राणि पुनस्तीक्षणानि ॥ राज- विद्या क्षत्रियाणां शाणवं ॥ एतच्छास्त्रा नुसार राजाशासनीयम् भवेत्महान् भागी सुखी सदीर्घायुराशीपात्रंचमान धृतसहः सन्ततिःतिष्ठतोचिरम् ॥ तस्य राज्यं सुस्थिरंदृढंध्रुवंजायते ॥ यशश्चा खण्डितं बहुला संतति सततं स्वर्ग भोगश्च

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इहलोके परलोके चाविचन्द्रतारकम् श्रद्धा पूरया तथा मानासिक तीव्रशक्त्या निःसंदेह सिद्धिर्भवाति न किंचिदपि दुर्लभम् ॥ अयभावयोः सम्वादः सृष्टे स्वास्थ सुखशान्तिः स्थितिश्च प्रबन्धानां स्थित्यर्थम्। राज विद्योपदेशः तेन संज्ञानम् । सृष्टे स्वास्थसुखशान्तिः स्थितिश्च प्रबन्धानां स्थैर्यम्।तेन व म् बलेन रक्षा। पूर्वं सुकृतेन राजविद्योपदेशप्राप्तिः तेन शुद्धविचारशक्तिः सब बुद्धिः तथा चेष्टः तेनयथेष्टप्राप्तिः । राज विद्योपदेशेन शुद्धाश्चेश्वर भावेन विचार शक्तिः तयाचेष्टधर्मः धर्मेण न्यायः। यत्र रक्षा न्याय तत्र राज्यं सुस्थिरमचलेध्रुवम् ॥

॥ समाप्तम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ २१

क्षत्रियों की सभा शान्ति का उपदेश और समाप्ति आशीष ॥

क्षत्रियों की प्रति संवत्सर में दोबार शुभ स्थान में शुद्धरितु में सभाहो जिन में परम पवित्र राज विद्योपदेश पर चिन्तवन हो और प्रबन्ध संबन्धी समाधान भी विचार कीये जावे ॥ वर्ष में एक वार पुण्य स्थान में राजावों क्षत्रियों की महासभा भी हो ॥ राजा विशेष कामों में साम-न्तों की और प्रजावों मेंसे सभ्य जनों की सभा सम्मति लेवें। हरेक जाति को सभा स्थापित करने और प्रचालित कुरीति को मिटाने और अच्छी रीत को चलाने और जाति शुद्धार करनेका अधिकार है ॥ महा सक्ति प्रश्न करती है ॥ अच्छी बुद्धि को तीव्र वा तेज करना और शक्ति (बल) को बढ़ाना ये बातें क्षत्रिय कहां से पाते हैं ॥ शिवने कहा—राजविद्या रूपी खुर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाण से ॥ ये विद्या क्षत्रियों की पृथिवी पर राज्य करने की शक्तिमयी (बल सहित) तीक्षणता (तेजी) है जैसे शस्त्र बहुत काल करके तेज धारा से हीन (मोटे) होजाते हैं इसी तरह क्षत्रिय भी बहुत काल करके शक्ति पुरुषार्थ और तेज से हीन होजाते हैं ॥ शाण पर चढे हुवे शस्त्र फिर तेज होजाते हैं ॥ राजविद्या क्षत्रियों की खुरशाण है ॥ इस शास्त्र के अनुसार राजा राज्य करता हुवा महान भागी, सुखी बडी ऊपर वाला और आशीष और मान के साथ और संनती (परवार) के साथ बहुत समय तक राज्य करता है और उस का राज्य अच्छा स्थिर दृढ और अचल होजात है और अखण्ड यश (कीरती) और हमेश बहुत संतति (परिवार) वाला और इस लोक और परलोक में सूर्य चन्द्र अर तारों की स्थिति तक स्वर्ग (सुख) भोग करता है ॥ पूर्ण श्रद्धा और मनकी तीव्र शक्ति (बल) के साथ करने से निस्सन्देह सिद्धि होती है कुच्छ भी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुर्लभ नहीं है ॥ यह हम दोनों का संवाद सृष्टी के सुख शान्ति स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता के लिये है। राजा विद्योपदेश से सत्य ज्ञान है से: सृष्टी के सुखशान्ति स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता है जिसे बल, बल से रक्षा पूर्व सुकृत से राजविद्या के उपदेश की प्राप्ति होतीहैं जिस से शुद्ध विचार शक्ति वाही बुद्धि है तिसे इष्ट जिस से जो चाहे सोही मिले । राज विद्योपदेश से शुद्धोचिश्वर भाव से विचार शक्तिः जिससे इष्ट धर्म धर्म से न्याय जहाँ रक्षा न्याय है वहां राज स्थिर अचल और ध्रुव है

॥ समाप्तम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुँवर सरदारमल थानवी के प्रबन्ध से
श्री सुमेर प्रिन्टिङ्गप्रेस जोधपुर में छपी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रक्षा सरूप स्त्री शिक्षाजि
रक्षा सैव बलाश्रय: प्रति
दिने अस्त्रशस्त्राणां अभ्यास:
शरीर परिश्रमेऽभ्यास: वार
नाना स्व जाते: बान्धव:
संबन्धय तेषां योग्यता वीर
त्वम सर्वोपरी विद्याऽभ्यास:
तया शौर्यम जेतृ: तस्य चारव
धर्मं न्याय मर्यादा प्रबन्धम्
जनानां धर्म शरीर प्राण रवा
तन्व्ययं द्रव्यं धनं किम् सदा
चररणम् मप्र रश्मि: उपयोगी पशव:
चराचरणम् रक्षाणम् राज्यम्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ॐ शिव ॥

मन सद्रूप पुरुष्य तस्योत्साहिण यं यं चिन्त्यते प्राप्यते ।

१ सद्विद्योपदेशेन मनसोत्सा
ह
२ पूर्ण वीर्य बल युक्त:
३ दुःख रोग रहित:
४ शुद्ध सुगन्धित वायु:
५ स्वतन्त्रता उन्नयम
६ सत्य तेपा धृति:
पुरुषार्थ यत्नस्र
७ यथेष्ठ प्राप्ति:
८ पुण्य धर्म परमा
र्थ हृदय: यथेष्ट
स्मरणम् ।
९ परिश्रम अभ्यास:
१० सुपात्रे दानम्
११ पूर्णा सेष्कित्नाव.
१२ प्रीय हिजम दर्शनम्
श्रुतम्
१३ श्रद्धा धारणा शौर्य
माधार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

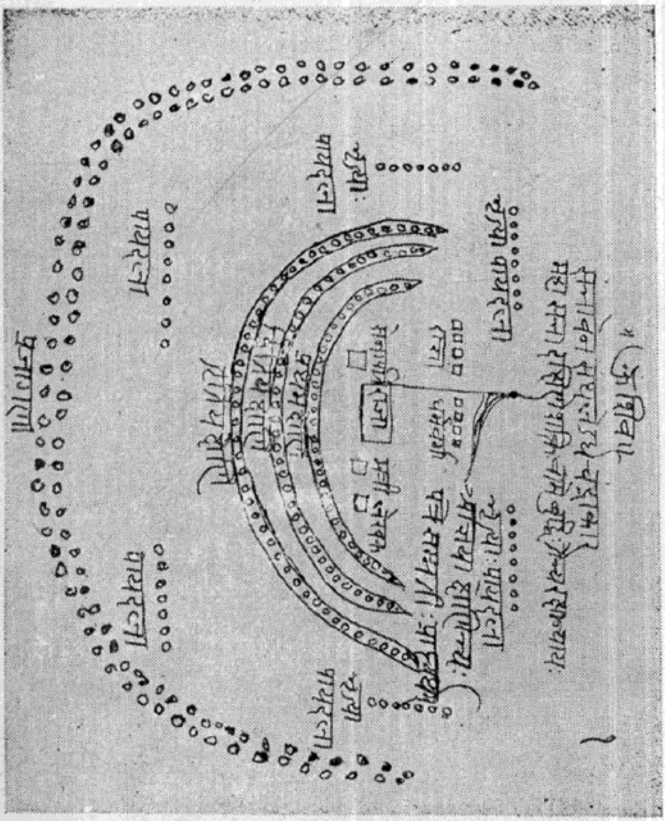
राजा
मन्त्री
प्रथमद्वारं
द्वितीय द्वारं
तृतीय द्वारं
पायदला
पायदला
प्रजागणा

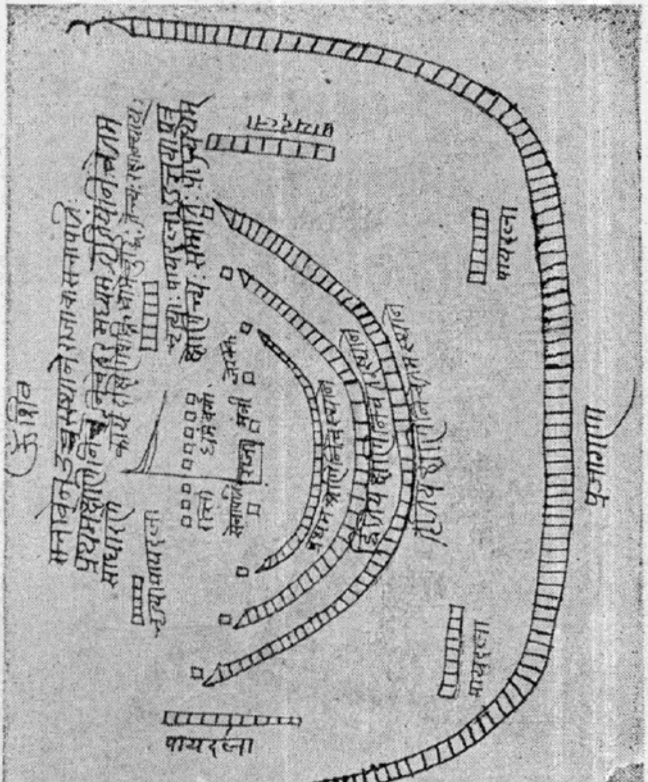
ॐ शिव
साधारण
सेनापति
राजा
मंत्री
पायदला
पायदला
पायदला
पायदला
प्रजागण

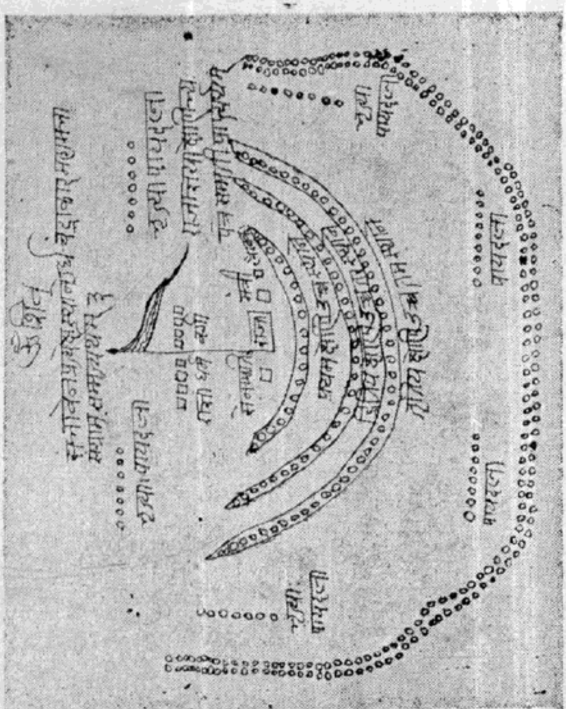

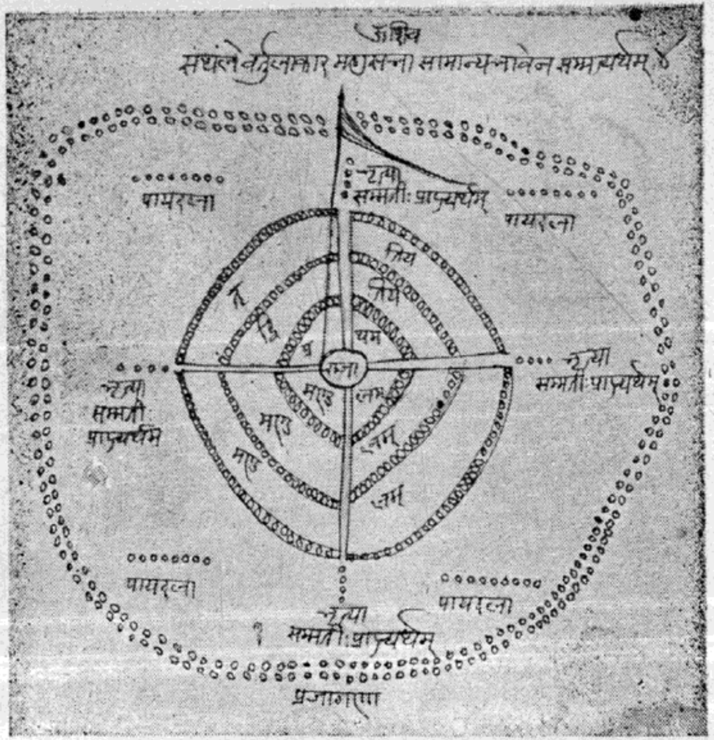
पायरत्ना
सम्मती: प्राप्त्यर्थम्
प्रजागणा

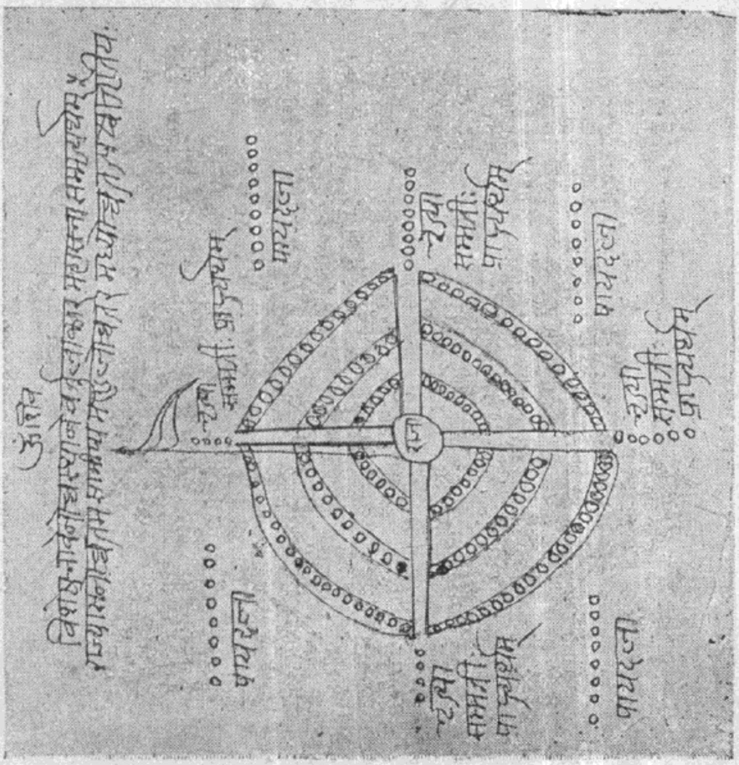
रजा
पायदला

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

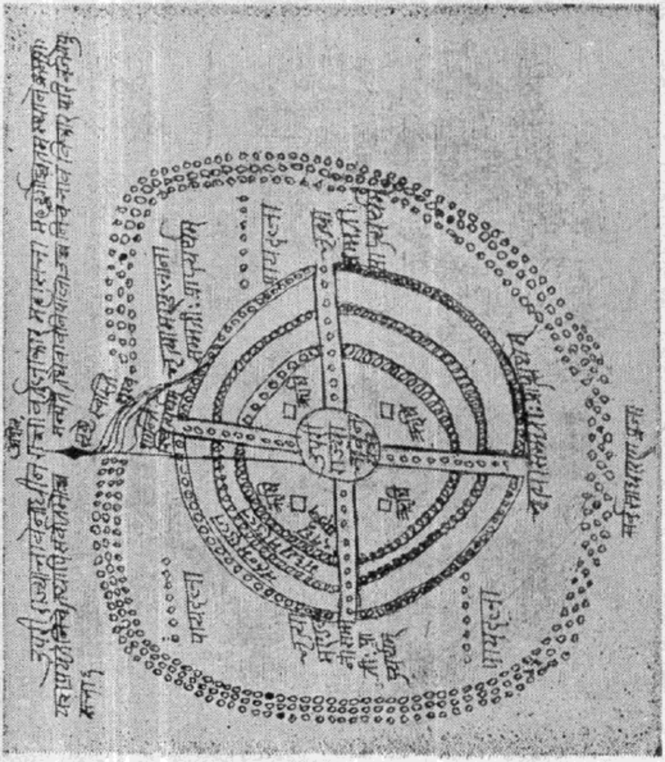

For Private And Personal Use Only

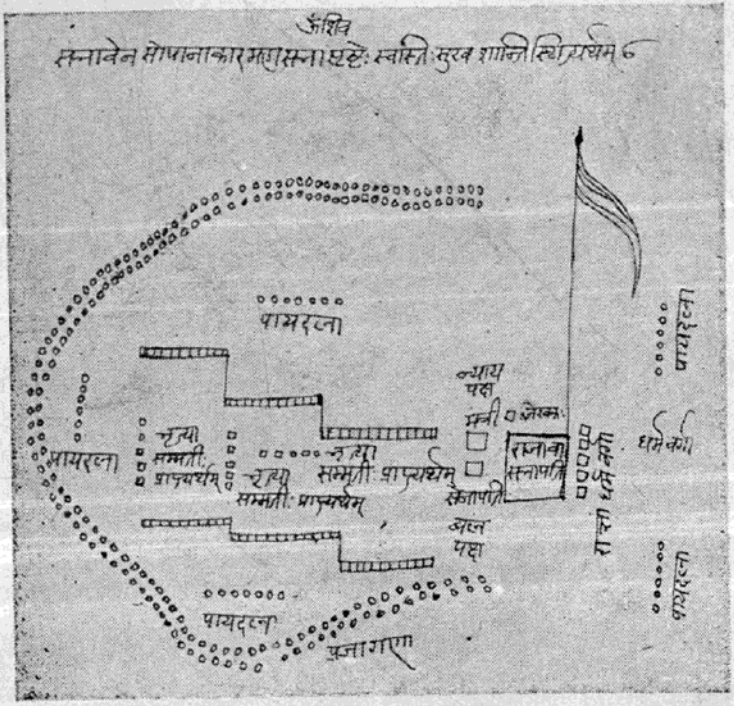
ॐशिव
सन्नाबेन सोपानाकार महासन्नाघटेः स्वस्ति सुख शान्ति स्थित्यर्थम्
पायदल
पायदल
पायदल
पायदल
पायदल
प्रजागण
न्याय पक्ष
मन्त्री
अन्य पक्ष
सेनापति
राजा वा सेनापति
धर्मकर्ता
सम्मती प्राप्त्यर्थम्

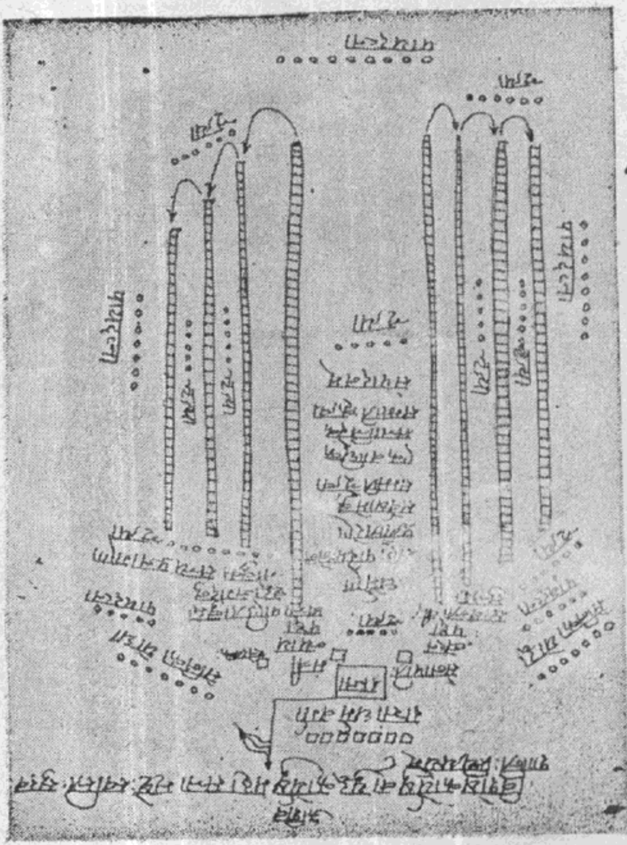

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

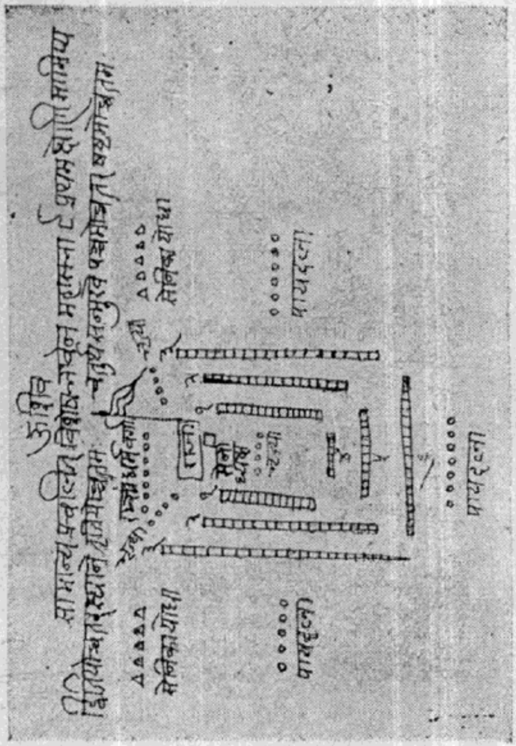

For Private And Personal Use Only

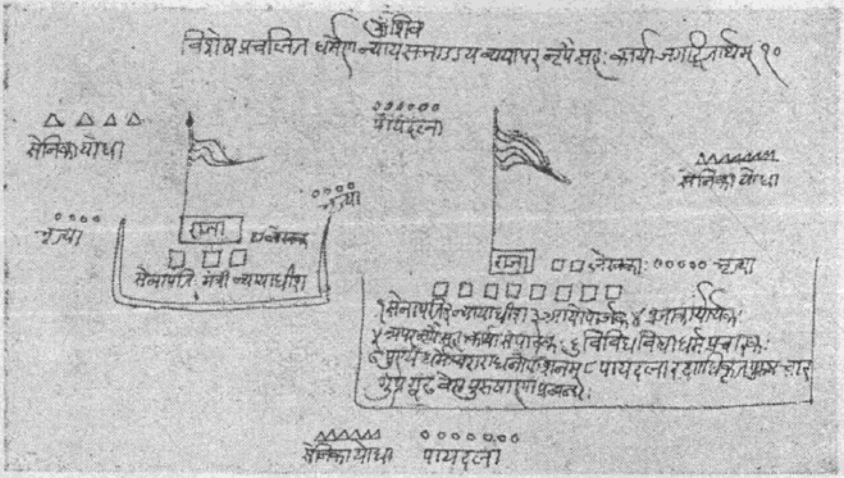
ॐ शिव
सैनिक योधा
राजा
सेनापति: मंत्री न्यायाधीश
पायदला
राजा
सैनिक योधा
सैनिक योधा
पायदला

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुँ० सरदारमल
थांनवी के प्रबन्ध
से
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस, जोधपुर
में
छपी।

Serving JinShasan
027175
gyanmandir@kobatirth.org

For Private And Personal Use Only